

मार्च, 2015

प्रवेशांक • वर्ष 1 • अंक 1

राजघाट

समाधि पत्रिका



स्वच्छ और समर्थ भारत



गांधीजी का ताबीज़

तुम्हें एक जन्तर देता हूँ। जब भी तुम्हें सन्देह हो या तुम्हारा अहम् तुम पर हावी होने लगे, तो यह कसौटी आजमाओ :

जो सबसे गरीब और कमजोर आदमी तुमने देखा हो, उसकी शक्ल याद करो और अपने दिल से पूछो कि जो कदम उठाने का तुम विचार कर रहे हो, वह उस आदमी के लिए कितना उपयोगी होगा। क्या उससे उसे कुछ लाभ पहुँचेगा? क्या उससे वह अपने ही जीवन और भाग्य पर कुछ काबू रख सकेगा? यानी क्या उससे उन करोड़ों लोगों को स्वराज्य मिल सकेगा जिनके पेट भूखे हैं और आत्मा अतृप्त है?

तब तुम देखोगे कि तुम्हारा सन्देह मिट रहा है और अहम् समाप्त होता जा रहा है।

(मोहनदास करमचन्द गांधी)

प्रवेशांक

वर्ष-1, अंक-1, मार्च, 2015

परामर्श मंडल

प्रो. रामजी सिंह
डॉ. शंकर कुमार सान्याल
सुश्री राधाबहन भट्ट
डॉ. राजीव रंजन गिरि

सम्पादक

रजनीश कुमार

सहायक सम्पादक

पंकज चौबे

आवरण

आर. के. लक्ष्मण

कैलीग्राफी

धर्मन्द्र सुशान्त

सहयोग राशि

15 रुपये

50 रुपये वार्षिक

100 रुपये दो वर्ष

200 रुपये पाँच वर्ष

राजघाट समाधि समिति

महात्मा गांधी मार्ग, राजघाट, नई दिल्ली-02
की ओर रजनीश कुमार द्वारा
मुद्रित व प्रकाशित

लेखकों द्वारा उनकी रचनाओं में प्रस्तुत
विचार एवं दृष्टिकोण उनके अपने हैं,
राजघाट समाधि समिति, नई दिल्ली के
नहीं। समस्त मामले दिल्ली न्यायालय में
ही विचाराधीन।

डिजाइनिंग एवं प्रिंटिंग

चन्दु प्रेस, डी-97, शंकरपुर
दिल्ली-110092

फोन: 011-22526936 / 22424396

विषय सूची

प्राक्कथन	9
सम्पादकीय	11
स्वच्छ और समर्थ भारत	
स्वच्छता का संस्कार - मो. क. गांधी	12
शुचिता - अन्तः और बाह्य - प्रो. रामजी सिंह	16
आंदोलनकारी की तरह काम करना होगा - अवधेश कुमार	19
स्वच्छता एवं सामूहिकता - प्रो. मनोज कुमार	22
गांधी के सपनों का स्वच्छ एवं समर्थ भारत - डॉ निशा राय	31
स्वच्छता का अभिप्राय - जोहरा फातिमा	34
राष्ट्रपिता के सपनों का स्वच्छ भारत - जागृति राही	40
Clean and Capable India	
Clean and Capable India of Gandhiji's Dream - Dr. Sankar Kumar Sanyal	42
Gandhi on Clean and Capable Bharata - Dr. Rajjan Kumar	45
Clean and Capable India - Dr. M.S. Dadage	52
Relevance of Gandhian thought in Rebuilding a Clean and Capable India - Dr. N. Gopalakrishnan Nair	57
Articulating Gandhian Dream of Clean and Capable India - Dr. Parmanand Singh	63



सत्यमेव जयते

राष्ट्रपति
भारत गणतंत्र
PRESIDENT
REPUBLIC OF INDIA

संदेश

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हो रही है कि जिस दिन महात्मा गांधी ने नमक सत्याग्रह के रूप में ऐतिहासिक दांडी यात्रा प्रारंभ की थी उसी दिन 12 मार्च, 2015 को राजघाट समाधि समिति द्वारा 'गांधी के सपनों का स्वच्छ एवं समर्थ भारत' विषय पर एक अंतरराष्ट्रीय विचार-गोष्ठी का आयोजन किया जा रहा है। गांधी जी ने देश के लिए बहुतेरे सपने देखे थे। इनमें उनका पसंदीदा विषय 'स्वच्छता' महत्वपूर्ण स्थान रखता है। इसी प्रकार उन्होंने समाज के हर वर्ग को विकास की धारा में जोड़ते हुए एक समर्थ एवं शक्तिशाली स्वतंत्र राष्ट्र की भी कल्पना की थी। मुझे आशा है कि गांधीवादी दर्शन के राष्ट्रीय-अंतरराष्ट्रीय विद्वानों के दो दिन के विचार-मंथन से राष्ट्रपिता के लेखों, विचारों एवं व्याख्यानों में से ऐसी बहुतेरी बातें निकलेंगी, जो देश को स्वच्छ और समर्थ बनाने में मार्गदर्शक बनेंगी।

यह हर्ष का विषय है कि इस अवसर पर समिति द्वारा 'राजघाट समाधि पत्रिका' की शुरुआत की जा रही है। मुझे विश्वास है कि यह पत्रिका गांधी जी के संदर्शों को समाज के हर वर्ग तक पहुंचाते हुए उन्हें देश के विकास की मुख्य धारा में जोड़ने में सहायक साबित होगी।

मैं विचार-गोष्ठी के आयोजन एवं पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए शुभकामनाएं देता हूं।

प्रणब मुखर्जी

(प्रणब मुखर्जी)

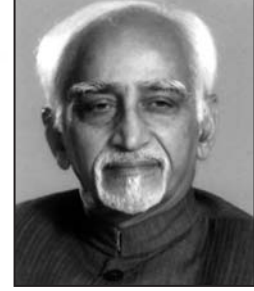
नई दिल्ली

05 मार्च, 2015



सत्यमेव जयते

उप-राष्ट्रपति, भारत
VICE-PRESIDENT OF INDIA




संदेश

आजादी के राष्ट्र नायक गांधी जी अपने विचार एवं दर्शन से अंतर्राष्ट्रीय क्षितिज पर एक महान हस्ती हैं। इन्होंने देश ही नहीं, बल्कि दुनिया को विभिन्न क्षेत्रों में अपने दर्शन से प्रभावित किया है।

मुझे बहुत खुशी है कि राजघाट समाधि समिति द्वारा "गांधी जी के सपनों का स्वच्छ एवं समर्थ भारत" विषय पर एक दो दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय सेमिनार का आयोजन 12-13 मार्च को किया जा रहा है। मुझे आशा है कि गांधीवादी विचारधारा के विद्वान प्रतिभागियों द्वारा इस समसामयिक विषय पर गहन विचार-मंथन करके बहुतेरे व्यावहारिक सुझाव उभरकर आएंगे जो भारत को स्वच्छ एवं समृद्ध बनाने में देश के हर वर्ग को जोड़ने में सहायक साबित होंगे।

इसी अवसर पर समिति द्वारा एक त्रैमासिक पत्रिका की भी शुरूआत की जा रही है। मेरी शुभकामना है कि यह पत्रिका गांधी दर्शन को जन-जन तक पहुंचाने में महत्वपूर्ण सहयोग देगी।


(मो. हामिद अंसारी)

नई दिल्ली
6 मार्च, 2015



सत्यमेव जयते

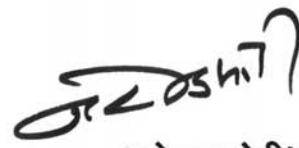
प्रधान मंत्री
Prime Minister

संदेश

मुझे अत्यंत प्रसन्नता है कि राजघाट समाधि समिति द्वारा 'गांधी के सपनों का स्वच्छ एवं समर्थ भारत' विषय पर अंतर्राष्ट्रीय सेमिनार का आयोजन किया जा रहा है।

महात्मा गांधी ने सत्य और अहिंसा को हथियार बनाकर न केवल देश को स्वतंत्र कराया बल्कि एक स्वच्छ, स्वस्थ, समर्थ, सुशासित एवं समृद्ध भारत की परिकल्पना की। बापू के इन सपनों को जन-जन तक पहुँचाने में यह विचार गोष्ठी, गांधीदर्शन के विचारकों के माध्यम से सफल हो, मैं इसकी शुभकामनाएँ देता हूँ।

इसी अवसर पर समिति द्वारा एक त्रैमासिक पत्रिका का भी शुभारंभ किया जा रहा है। मुझे आशा है कि यह पत्रिका महात्मा गांधी के सपनों एवं विचारों को समाज के विभिन्न वर्गों तक पहुँचाने में सहायक बनेगी।


(नरेन्द्र मोदी)

नई दिल्ली

09 मार्च, 2015



सत्यमेव जयते


अध्यक्ष, लोक सभा
SPEAKER, LOK SABHA



संदेश

यह हर्ष का विषय है कि राजघाट समाधि समिति द्वारा अपने इतिहास में पहली बार एक अंतरराष्ट्रीय परिसंवाद का आयोजन किया जा रहा है। इसी अवसर पर समिति द्वारा "राजघाट समाधि पत्रिका" का प्रकाशन होने जा रहा है। इसके लिए समस्त प्रकाशक मंडल बधाई के पात्र हैं। मानव जीवन के विविध पक्षों से संबंध रखने वाले गांधी जी के विचार आज भी उतने ही प्रेरक हैं, जितने कल थे। जीवन के सामान्य विषय जैसे स्वच्छता या स्वदेशी की भावना से समर्थ भारत पर उनके विचार आज भी हमारे लिए अनुप्रेरणा का काम करते हैं।

आशा है कि इस परिसंवाद से आए विचार स्वच्छ तथा समर्थ भारत के निर्माण में सहयोगी होंगे। साथ ही, यह पत्रिका गांधीवादी मूल्यों का प्रसार कर गांधीजी के सपनों के भारत के निर्माण में अपना योगदान दे, इसके लिए मेरी हार्दिक शुभकामनाएं।


(सुमित्रा महाजन)



एम. वेंकैया नायडु
M. VENKAIAH NAIDU



सत्यमेव जयते



संदेश

शहरी विकास,
आवास और शहरी गरीबी उपशमन एवं
संसदीय कार्य मंत्री
भारत सरकार
MINISTER OF URBAN DEVELOPMENT,
HOUSING & URBAN POVERTY ALLEVIATION
AND PARLIAMENTARY AFFAIRS
GOVERNMENT OF INDIA

राजघाट समाधि समिति के अध्यक्ष के रूप में मैं गौरवान्वित महसूस कर रहा हूँ कि 12-13 मार्च, 2015 को समिति द्वारा एक समसामयिक विषय 'गॉंधी के सपनों का स्वच्छ एवं समर्थ भारत' पर अंतर्राष्ट्रीय विचार गोष्ठी का आयोजन किया जा रहा है। देश की आजादी के दौरान गॉंधी जी ने स्वतंत्र भारत के लिए बहुत से सपने देखे थे जो उनके लेखों, भाषणों एवं वक्तव्यों में देखने को मिलते हैं।

मुझे आशा है कि इस 2 दिन के विचार मंथन में गॉंधीवादी दर्शन एवं विचार के माध्यम से ऐसे व्यावहारिक एवं सटीक सुझाव निकलकर सामने आएंगे जो देश के विकास में मार्गदर्शक साबित होंगे।

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में देश ने 'स्वच्छ भारत मिशन' का संकल्प लिया है कि गॉंधी जी की 150वीं जयंती यानि 2 अक्टूबर, 2019 तक देश का हर हिस्सा पूरी तरह स्वच्छ होगा। गॉंधी जी ने हमेशा स्वच्छता को आजादी से ऊपर तरजीह दी थी। हर देशवासी इसमें कैसे अपना योगदान देगा, इसे हम सेमिनार में बापू के नजरिए से देखने की कोशिश करेंगे।

'मेक इन इंडिया' के रूप में देश एक समृद्धवान एवं समर्थ भारत के रूप में विकसित होने के लिए संकल्पित है। इसके साथ ही और बहुतेरे कार्यक्रम वर्तमान शासन ने लिए हैं जिससे हम एक विकसित देश के रूप में उभरकर निकलेंगे। गॉंधी जी ने कैसे देश के हर वर्ग एवं समाज को इस विकास यात्रा में जोड़ने का सपना देखा था, मुझे आशा है कि यह भी विचार-मंथन के माध्यम से निकलकर सामने आएगा।

समिति इस अवसर पर एक त्रैमासिक पत्रिका की शुरुआत कर रही है। मुझे पूरा विश्वास है कि यह पत्रिका "सबका साथ सबका विकास" की परिकल्पना में गॉंधी जी के विचारों की संदेश-वाहक बनेगी ताकि हर कोई मिलकर एक-एक ईंट से देश की आलीशान इमारत बनाने में सहयोग कर सके।

समिति के सद्प्रयास में मेरी शुभकामनाएं।

(एम. वेंकैया नायडु)

BABUL SUPRIYO
MINISTER OF STATE
Urban Development
Housing & Urban Poverty Alleviation
GOVERNMENT OF INDIA



बाबुल सुप्रियो
राज्य मंत्री
शहरी विकास एवं
आवास और शहरी गरीबी उपशमन
भारत सरकार



संदेश

मुझे यह जानकर अत्यधिक प्रसन्नता हो रही है कि राजघाट समाधि समिति द्वारा पहली बार एक अंतरराष्ट्रीय परिसंवाद का आयोजन हो रहा है जिसमें 'गाँधी जी के सपनों का स्वच्छ एवं समर्थ भारत' विषय पर गहन चर्चा की जायेगी। इस विचार मंथन से जो व्यवहारिक बातें निकलकर आयेंगी उनसे 'स्वच्छ भारत मिशन' एवं 'मेक इन इंडिया' को सफल बनाने में सहयोग मिलेगा, मेरी यह आशा है।

इसके साथ ही राजघाट समाधि समिति द्वारा त्रैमासिक 'राजघाट समाधि पत्रिका' के प्रकाशन का जो निर्णय लिया गया है, वह भी एक सराहनीय कदम है। मुझे विश्वास है कि इस पत्रिका के माध्यम से गाँधी जी के विचार जन-जन तक पहुँचेंगे जिससे वे देश निर्माण में अपना सक्रिय सहयोग गांधीजी के सपनों के मुताबिक दे सकेंगे।

पत्रिका अपने उद्देश्य में सफलता प्राप्त करे, इसके लिये मेरी हार्दिक शुभकामनाएँ।

A handwritten signature in black ink, which appears to read 'Babul Supriyo'.

(बाबुल सुप्रियो)

M. PRASAD
SECRETARY



Government of India
Ministry of Urban Development
Nirman Bhawan, New Delhi-110011



संदेश

मुझे इस बात की अति प्रसन्नता है कि राजघाट समाधि समिति अपना पहला अंतरराष्ट्रीय सेमिनार आयोजित करने जा रही है। 'गांधी के सपनों का स्वच्छ एवं समर्थ भारत' विषय पर इस परिसंवाद में देश-विदेश के विद्वान भाग ले रहे हैं। मुझे आशा है कि उनके गहन विचार विमर्श से नये-नये आयाम सामने आयेगें जो कि 'स्वच्छ भारत मिशन' और 'मेक इन इंडिया' के लक्ष्यों की प्राप्ति में मील के पत्थर साबित होंगे।

इस सुअवसर पर 'राजघाट समाधि पत्रिका' के प्रकाशन की शुरुआत से राष्ट्रपिता के संदेश को हर वर्ग तक पहुँचाकर उन्हें स्वच्छ, स्वस्थ, समर्थ एवं समृद्ध भारत की विकास यात्रा में जोड़ने में बल मिलेगा। यह हमारे देश को विकसित देशों की श्रेणी में खड़ा करने में सहायक होगा, ऐसी मेरी उम्मीद है। इसके लिए मैं हार्दिक मंगलकामनाएँ प्रेषित करता हूँ।

(मधुसूदन प्रसाद)

दुर्गा शंकर मिश्र

अपर सचिव

Durga Shanker Mishra

Additional Secretary



सत्यमेव जयते



प्राक्कथन

भारत सरकार
शहरी विकास मंत्रालय
निर्माण भवन, नई दिल्ली-110011
GOVERNMENT OF INDIA
MINISTRY OF URBAN DEVELOPMENT
NIRMAN BHAWAN, NEW DELHI-110011
Tel. : 011-23061787, Fax : 011-23061061
E-mail : as_ud_mud@nic.in

आपके समक्ष 'गांधी के सपनों का स्वच्छ एवं समर्थ भारत' विषय पर विभिन्न गाँधीवादी विद्वतजनों के विचार भिन्न-भिन्न लेखों के रूप में 'राजघाट समाधि पत्रिका' के प्रथमांक में प्रस्तुत करते हुये मुझे अत्यंत ही हर्ष की अनुभूति हो रही है। वस्तुतः यह प्रस्तुति एक प्रयास है हमारे राष्ट्रपिता के संजोए सपनों को आम जन तक पहुँचाने का। दरअसल, गांधी जी ने स्वच्छता को स्वतंत्रता से भी ऊपर का दर्जा दिया है। उनका मानना था कि स्वच्छता में ही समृद्धि वास करती है। लिहाजा उन्होंने स्पष्ट शब्दों में कहा कि “cleanliness is more important than political independence”। वे इस मसले पर आध्यात्मिक के साथ ही साथ वैज्ञानिक विचार भी रखते थे। सत्याग्रह आंदोलन के वक्त तो उन्होंने यहाँ तक कहा था कि एक साफ सुथरा व्यक्ति और उसका साफ सुथरा परिवेश अपने आप में एक आंदोलन का हिस्सा है। उन्होंने साफ परिवेश को धार्मिक मान्यताओं के साथ भी जोड़कर अपने विचारों को फैलाया। उनका कहना था कि “cleanliness is next only to godliness”। गांधी जी हमेशा ही कहा करते थे कि जिस प्रकार से एक स्वच्छ शरीर में स्वस्थ मन का वास होता है, उसी प्रकार एक स्वच्छ देश में समृद्धि निवास करती है। इसलिए आजादी की लड़ाई के वक्त भी उन्होंने स्वच्छता और स्वतंत्रता को समान महत्व दिया। हकीकतन, देश तो आजाद हो गया, लेकिन गांधी जी के स्वच्छ भारत का सपना अभी तक पूरा नहीं हुआ।

आजादी के 67 वर्षों में समाज ने गांधी जी के स्वच्छता कार्यक्रम को कई तरीके से बढ़ाया। अंततः, 2 अक्टूबर, 2014 को गाँधी जयंती के महान राष्ट्रीय पर्व के मौके पर देश में माननीय प्रधानमंत्री जी द्वारा स्वच्छ भारत मिशन की शुरुआत की गई ताकि 2 अक्टूबर, 2019 तक जब राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की 150वीं जयंती मनायी जायेगी तब तक देश उनके सपनों को सफलतम रूप से साकार करते हुए बापू को सच्ची श्रद्धाजंलि देगा। सरकार ने सभी देशवासियों को इस कार्य में अपना भरपूर सहयोग देने के लिए आमंत्रित किया है ताकि यह एक जनआंदोलन का रूप ले सके। चूंकि पूरा राष्ट्र ही एक परिवार का पर्याय है लिहाजा इसकी शुरुआत सबसे पहले परिवार से ही होनी चाहिए, क्योंकि जब परिवार स्वच्छ और समृद्ध होगा तो स्वाभाविक है कि देश की समृद्धि की रफ्तार भी उसी गति से आगे बढ़ेगी। लाजमी है कि पहले स्वच्छ परिवार से एक स्वच्छ समाज का निर्माण होगा और स्वच्छ समाज से स्वच्छ एवं स्वस्थ भारत का निर्माण होगा।

कहा जाता है कि जहां स्वच्छता होती है वहाँ समृद्धि की देवी स्वतः ही दौड़ी चली आती है। राष्ट्रीय स्वतंत्रता आंदोलन में शरीक देशभक्तों एवं राष्ट्रपिता ने आजादी के साथ ही एक समृद्ध एवं समर्थ भारत का सपना देखा था। गाँधी जी स्वदेशी के पक्षधर थे, पर वे प्रौद्योगिकी एवं आधुनिकता के भी हिमायती थे। उनका मानना था कि हर हाथ को काम देकर देश को आगे बढ़ाया जा सकता है। आज हमारी सरकार Skill India, Digital India एवं Make in India आदि कार्यक्रमों के माध्यम से देश के उन महान सपूतों के सपनों को साकार करने में उद्यत है।

राजघाट समाधि समिति अपने 58 वर्षों के इतिहास में पहली बार एक अन्तर्राष्ट्रीय स्तर की विचार-गोष्ठी, नमक सत्याग्रह के बापू की दौड़ी यात्रा, जिसने पूरे देश को झकझोर कर स्वतंत्रता आंदोलन से जोड़ दिया था, के दिन 12 मार्च को आयोजित कर रही है। यह एक ऐसा मौका है जब देश-विदेश के गाँधीवादी दर्शन एवं विचारधारा से जुड़े विद्वान गाँधी के उन सपनों पर विचार मंथन करेंगे जो देश को स्वच्छ एवं समर्थ बनाने के लिए विभिन्न मंचों एवं लेखों के माध्यम से अभिव्यक्त किये गए थे। यह संयोग बहुत ही लाभकारी होगा, हमारी यह आशा है।

इसी अवसर पर समिति द्वारा त्रैमासिक पत्रिका की शुरुआत भी एक शुभ संकेत है। यह पत्रिका विद्वान विचारकों एवं अन्वेषकों को एक मंच प्रदान करेगी - गाँधी के उन विचारों एवं भावनाओं को जन-जन तक पहुँचाने के लिए। उनके विचार आज भी उतने ही प्रासंगिक हैं, जितने वे आजादी की लड़ाई के वक्त थे। यह पत्रिका एक निश्चित कलेवर में पाठकों तक मुद्रित एवं इलेक्ट्रॉनिक फार्म में (समिति की वेबसाइट www.rajghatsamadhi.com के माध्यम से) पहुँचकर अपने उद्देश्य की पूर्ति करेगी। जैसे हर कोई गाँधी जी के समाधि स्थल राजघाट का दर्शन कर अपने श्रद्धा सुमन बापू के चरणों में अर्पित करना चाहता है, वैसे ही समिति की त्रैमासिक पत्रिका का भी सुधी पाठकों को इंतजार होगा। मुझे आशा है कि पत्रिका का सम्पादक मण्डल इस दिशा में भरपूर प्रयास करेगा।

स्वामी विवेकानन्द ने कहा था कि भविष्य में भारत पूरे विश्व को दिशा देगा। आज उनकी कही हुई बातें सही साबित हो रही हैं। भारत ने कई क्षेत्रों में प्रगति करके विश्व के मानचित्र पर अपना झंडा बुलंद किया है। लिहाजा मुझे आशा ही नहीं बल्कि पूर्ण विश्वास है कि राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के स्वच्छता और समृद्धि का सपना भी साकार होगा और देश परम वैभव की चोटी पर विराजमान होगा। आइए हम सभी देश की स्वच्छता और समृद्धि के लिए आगे आएँ और महात्मा गांधीजी का सपना साकार करें।

जयहिन्द !

भवदीय

(दुर्गा शंकर मिश्र)

अहर्निश जलती ज्योति का सन्देश

महात्मा गांधी का सारा जीवन सत्यनिष्ठा और कर्माचरण का असाधारण उदाहरण है। उन्होंने सत्य को ईश्वर माना और अपने विचारों के अनुरूप न सिर्फ अपने देश बल्कि पूरे विश्व या कहें कि सम्पूर्ण मानवजाति की बेहतरी और उन्नयन के लिए अपने जीवन का बलिदान कर दिया। उन्होंने अपने जीवन को ही अपना सन्देश कहा था। उनकी कथनी और करनी में अन्तर नहीं है। किसी भी अन्य व्यक्ति की तरह एक साधारण मनुष्य होते हुए भी उन्होंने अपने जीवन और कर्मों से ऐसे महान उद्देश्यों की प्रस्तावना की, जिनके कारण देश ने उन्हें राष्ट्रपिता और दुनिया ने उन्हें महात्मा के रूप में स्वीकार किया। सच्चाई और कर्मनिष्ठा के साथ-साथ उन्होंने अहिंसा का अमोघ अस्त्र भी दिया। मानवता के प्रति ऐसे प्रेम का, इतिहास में शायद ही कोई और उदाहरण होगा, जब हिंसा और युद्ध (गांधी के जीवनकाल में दो-दो विश्व युद्ध हुए) के घटाटोप के बीच किसी इन्सान ने निर्भय होकर अहिंसा का ऐसा उद्घोष किया होगा।

ऐसे अप्रतिम 'बापू' की समाधि से एक पत्रिका का प्रकाशन आरम्भ करते हुए उनके बारे में ये तमाम बातें स्मृति में आ रही हैं। इनमें और भी बातें जोड़ी जा सकती हैं। फिलहाल मैं यही कहना चाहता हूँ कि अपने जीवन की तरह अपनी मृत्यु से भी महात्मा गांधी ने एक स्पष्ट सन्देश दिया— अपने उद्देश्यों के लिए निडर भाव से जीवन को बलिदान करने का सन्देश।... राजघाट उनकी समाधि-स्थली है। यहाँ प्रत्येक दिन देश-दुनिया के हजारों लोग आते हैं। वे श्रद्धा प्रदर्शित करते हैं और उत्सुकता दिखाते हैं। बच्चे हों या युवा या बुजुर्ग, सभी जानना चाहते हैं कि जिस बापू की स्मृति में राजघाट की समाधि पर अहर्निश एक ज्योति जलती रहती है, उनके विचार क्या थे और आज हम उनके सपनों को साकार करने की दिशा में क्या कर रहे हैं, क्या कर सकते हैं। वस्तुतः गांधीजी के प्रति हजारों-हजार जनों की यह श्रद्धा और जिज्ञासा ही इस पत्रिका की प्रेरणा बनी। जैसे-जैसे वक्त बीत रहा है, महात्मा गांधी के विचार भविष्य के लिए उतने ही अधिक प्रासंगिक और अपरिहार्य लगने लगे हैं। आज पूरी दुनिया उनके विचारों में अपनी समस्याओं का हल ढूँढ रही है। चाहे परमाण्विक हथियारों का होड़ हो, चाहे जलवायु परिवर्तन से विश्व का बिगड़ता पर्यावरण, गांधीजी एक त्राता के रूप में हमें इन समस्याओं से उबरने की राह दिखाते हैं। ऐसे में 'राजघाट समाधि पत्रिका' उनके विचारों को आगे बढ़ाने का एक विनम्र प्रयास है। इसके प्रवेशांक को हमने मुख्य रूप से गांधीजी के राष्ट्रीय स्वच्छता के स्वप्न पर केन्द्रित रखा है। जिसे वे न केवल व्यक्तिगत सामुदायिक सफाई से जोड़कर देखते थे बल्कि स्वराज्य के लिए आवश्यक मानते थे।

— रजनीश कुमार

स्वच्छता का संस्कार

मो. क. गांधी

हमने राष्ट्रीय या सामाजिक सफाई को न तो जरूरी गुण माना और न उसका विकास ही किया। यों रिवाज के कारण हम अपने ढंग से नहाभर लेते हैं, मगर जिस नदी, तालाब या कुएँ के किनारे हम श्राद्ध या वैसी ही दूसरी कोई धार्मिक क्रिया करते हैं और जिन जलाशयों में पवित्र होने के विचार से हम नहाते हैं, उनके पानी को बिगाड़ने या गन्दा करने में हमें कोई हिचक नहीं होती।

श्रम और बुद्धि के बीच जो अलगाव हो गया है, उसके कारण हम अपने गाँवों के प्रति इतने लापरवाह हो गये हैं कि वह एक गुनाह ही माना जा सकता है। नतीजा यह हुआ है कि देश में जगह-जगह सुहावने और मनभावने छोटे-छोटे गाँवों के बदले हमें घूरे जैसे गन्दे गाँव देखने को मिलते हैं। बहुत से या यों कहिए कि करीब-करीब सभी गाँवों में घुसते समय जो अनुभव होता है, उससे दिल को खुशी नहीं होती। गाँव के बाहर और आसपास इतनी गन्दगी होती है और वहाँ इतनी बदबू आती है कि अकसर गाँव में जाने वाले को आँख मूँद कर और नाक दबाकर ही जाना पड़ता है। ज्यादातर काँप्रेसी गाँव के बाशिन्दे होने चाहिए; अगर ऐसा हो तो उनका फर्ज हो जाता है कि वे अपने गाँवों को सब तरह से सफाई के नमूने बनाएँ। लेकिन गाँव वालों के हमेशा के यानी रोज-रोज के जीवन में शरीक होने या उनके साथ घुलने-मिलने को उन्होंने कभी अपना कर्तव्य माना ही नहीं। हमने राष्ट्रीय या सामाजिक सफाई को न तो जरूरी गुण माना और न उसका विकास ही किया। यों रिवाज के कारण हम अपने ढंग से नहाभर लेते हैं, मगर जिस नदी, तालाब या कुएँ के किनारे हम श्राद्ध या वैसी ही दूसरी कोई धार्मिक क्रिया करते हैं और जिन जलाशयों में पवित्र होने के विचार से हम नहाते हैं, उनके पानी को बिगाड़ने या गन्दा करने में हमें कोई हिचक नहीं होती। इस कमजोरी को मैं एक बड़ा दुर्गुण मानता हूँ। इस दुर्गुण का ही यह नतीजा है कि हमारे गाँवों की और हमारी पवित्र नदियों के पवित्र तटों की लज्जाजनक दुर्दशा और गन्दगी से पैदा होने वाली बीमारियाँ हमें भोगनी पड़ती हैं।

गाँवों में करने के कार्य ये हैं कि उनमें जहाँ-तहाँ कूड़े-करकट तथा गोबर के ढेर हों, वहाँ-वहाँ से उनको हटाया जाए और कुओं तथा तालाबों की सफाई की जाए। अगर कार्यकर्ता लोग नौकर रखे हुए भंगियों की भाँति खुद रोज सफाई का काम करना शुरू कर दें और साथ ही गाँव वालों को यह भी बतलाते रहें कि उनसे सफाई के कार्य में शरीक होने की आशा रखी जाती है, ताकि आगे चलकर अन्त में सारा काम गाँव वाले स्वयं करने लग जाएँ, तो यह निश्चित है कि आगे या पीछे गाँव वाले इस कार्य में अवश्य सहयोग देने लगेंगे।

वहाँ के बाजार तथा गलियों को सब प्रकार का कूड़ा-करकट हटाकर स्वच्छ बना लेना चाहिए। फिर उस कूड़े का वर्गीकरण कर देना चाहिए।

उसमें से कुछ का तो खाद बनाया जा सकता है, कुछ को सिर्फ जमीन में गाड़ देना भर बस होगा और कुछ हिस्सा ऐसा होगा कि जो सीधा सम्पत्ति के रूप में परिणत किया जा सकेगा। वहाँ मिली हुई प्रत्येक हड्डी एक बहुमूल्य कच्चा माल होगी, जिससे बहुत सी उपयोगी चीजें बनाई जा सकेंगी, या जिसे पीसकर कीमती खाद बनाया जा सकेगा। कपड़े के फटे-पुराने चिथड़ों तथा रद्दी कागजों से कागज बनाये जा सकते हैं और इधर-उधर से इकट्ठा किया हुआ मल-मूत्र गाँव के खेतों के लिए सुनहले खाद का काम देगा। मल-मूत्र को उपयोगी बनाने के लिए यह करना चाहिए कि उसके साथ- चाहे वह सूखा हो या तरल- मिट्टी मिलाकर उसे ज्यादा-से-ज्यादा एक फुट गहरा गड्ढा खोदकर जमीन में गाड़ दिया जाए। गाँवों की स्वास्थ्य रक्षा पर लिखी हुई अपनी पुस्तक में डॉ. पूअरे कहते हैं कि जमीन में मल-मूत्र को नौ या बारह इंच से अधिक गहरा नहीं गाड़ना चाहिए। (मैं यह बात केवल स्मृति के आधार पर लिख रहा हूँ।) उनकी मान्यता यह है कि जमीन की ऊपरी सतह सूक्ष्म जीवों से परिपूर्ण होती है और हवा एवं रोशनी की सहायता से, जो कि आसानी से वहाँ तक पहुँच जाती हैं; ये जीव मल-मूत्र को एक हफ्ते के अन्दर एक अच्छी, मुलायम और सुगन्धित मिट्टी में बदल देते हैं। कोई भी ग्रामवासी स्वयं इस बात की सच्चाई का पता लगा सकते हैं। यह कार्य दो प्रकार से किया जा सकता है। या तो पाखाने बनाकर, उनमें शौच जाने के लिए, मिट्टी तथा लोहे की बाल्टियाँ रख दी जाएँ और फिर प्रतिदिन उन बाल्टियों को पहले से तैयार की हुई जमीन में खाली करके ऊपर से मिट्टी डाल दी जाए, या फिर जमीन में चौरस गड्ढा खोदकर सीधे उसी में मल-मूत्र का त्याग करके ऊपर से मिट्टी डाल दी जाए। यह मल-मूत्र या तो देहात के सामूहिक खेतों में गाड़ा जा सकता है या व्यक्तिगत खेतों में। लेकिन यह कार्य तभी सम्भव है जब कि गाँव वाले सहयोग दें। कोई भी उद्योगी ग्रामवासी कम से कम इतना काम तो खुद भी कर ही सकता है कि मल-मूत्र को एकत्र करके उसको अपने लिए सम्पत्ति में परिवर्तित कर दे। आजकल तो यह सारा कीमती खाद, जो लाखों रुपये की कीमत का है, प्रतिदिन व्यर्थ जाता है और बदले में हवा को गन्दी करता तथा बीमारियाँ फैलाता रहता है।

गाँवों के तालाबों से स्त्री और पुरुष सब स्नान करने, कपड़े धोने, पानी पीने तथा भोजन बनाने का

काम लिया करते हैं। बहुत से गाँवों के तालाब पशुओं के काम भी आते हैं। बहुधा उनमें भैंसों बैठी हुई पाई जाती हैं। आश्चर्य तो यह है कि तालाबों का इतना पापपूर्ण दुरुपयोग होते रहने पर भी महामारियों से गाँवों का नाश अब तक क्यों नहीं हो पाया है? आरोग्य-विज्ञान इस विषय में एकमत है कि पानी की सफाई के सम्बन्ध में गाँव वालों की उपेक्षा-वृत्ति ही उनकी बहुत सी बीमारियों का कारण है।

पाठक इस बात को स्वीकार करेंगे कि इस प्रकार का सेवाकार्य शिक्षाप्रद होने के साथ ही साथ अलौकिक रूप से आनन्ददायक भी है और इसमें भारतवर्ष के सन्ताप-पीड़ित जन-समाज का अनिर्वचनीय कल्याण भी समाया हुआ है। मुझे उम्मीद है कि इस समस्या को सुलझाने के तरीके का मैंने ऊपर जो दर्शन किया है, उससे इतना तो साफ हो गया होगा कि अगर ऐसे उत्साही कार्यकर्ता मिल जाएँ, जो झाड़ू और फावड़े को भी उतने ही आराम और गर्व के साथ हाथ में ले लें जैसे कि वे कलम और पेन्सिल को लेते हैं, तो इस कार्य में खर्च का कोई सवाल ही नहीं उठेगा। अगर किसी खर्च की जरूरत पड़ेगी भी तो यह केवल झाड़ू, फावड़ा, टोकरी, कुदाली और शायद कुछ कीटाणु-नाशक दवाइयाँ खरीदने तक ही सीमित रहेगा। सूखी राख सम्भवतः उतनी ही अच्छी कीटाणु-नाशक दवा है, जितनी कि कोई रसायनशास्त्री दे सकता है।

आदर्श भारतीय गाँव इस तरह बसाया और बनाया जाना चाहिए, जिससे वह सम्पूर्णतया नीरोग हो सके। उसके झोंपड़ों और मकानों में काफी प्रकाश और वायु आ-जा सके। ये झोंपड़े ऐसी चीजों के बने हों जो पाँच मील की सीमा के अन्दर उपलब्ध हो सकती हैं। हर मकान के आसपास या आगे-पीछे इतना बड़ा आँगन हो, जिसमें गृहस्थ अपने लिए साग-भाजी लगा सकें और अपने पशुओं को रख सकें। गाँव की गलियों और रास्तों पर जहाँ तक हो सके धूल न हो। अपनी जरूरत के अनुसार गाँव में कुएँ हों, जिनसे गाँव के सब लोग पानी भर सकें। सबके लिए प्रार्थना-घर या मन्दिर हों, सार्वजनिक सभा वगैरा के लिए एक अलग स्थान हो, गाँव की अपनी गोचर-भूमि हो, सहकारी ढंग की एक गोशाला हो, ऐसी प्राथमिक और माध्यमिक शालाएँ हों जिनमें उद्योग की शिक्षा सर्व-प्रधान वस्तु हो और गाँव के अपने मामलों का निपटारा करने के लिए एक ग्राम-पंचायत

भी हो। अपनी जरूरतों के लिए अनाज, साग-सब्जी, फल खादी वगैरा खुद गाँव में ही पैदा हों। एक आदर्श गाँव की मेरी अपनी यह कल्पना है। मौजूदा परिस्थिति में उसके मकान जो ज्यों के त्यों रहेंगे, सिर्फ यहाँ-वहाँ थोड़ा-सा सुधार कर देना अभी काफी होगा। अगर कहीं जमींदार हो और वह भला आदमी हो या गाँव के लोगों में सहयोग और प्रेमभाव हो, तो बगैर सरकारी सहायता के खुद ग्रामीण ही; जिनमें जमींदार भी शामिल हैं; अपने बल पर लगभग ये सारी बातें कर सकते हैं। हाँ, सिर्फ नये सिरे से मकानों को बनाने की बात छोड़ दीजिए। और अगर सरकारी सहायता भी मिल जाए तब तो ग्रामों की इस तरह पुनर्रचना हो सकती है कि जिसकी कोई सीमा ही नहीं। पर अभी तो मैं यही सोच रहा हूँ कि खुद ग्रामनिवास की अपने बल पर परस्पर सहयोग के साथ और सारे गाँव के भले के लिए हिल-मिलकर मेहनत

एक गाँव के कार्यकर्ता को सबसे पहले गाँव की सफाई और आरोग्य के सवाल को अपने हाथ में लेना चाहिए। यों तो ग्राम सेवकों को किंकर्तव्य-विमूढ़ बना देने वाली अनेक समस्याएँ हैं, पर यह समस्या ऐसी है जिसकी सबसे अधिक लापरवाही की जा रही है। फलतः गाँव की तन्दुरुस्ती बिगड़ती रहती है और रोग फैलते रहते हैं।

करें, तो वे क्या-क्या कर सकते हैं? मुझे तो यह निश्चय हो गया है कि अगर उन्हें उचित सलाह और मार्गदर्शन मिलता रहे, तो गाँव की; मैं व्यक्तियों की बात नहीं करता; आय बराबर दूरी हो सकती है। व्यापारी दृष्टि से काम में आने लायक अखूट साधन-सामग्री हर गाँव में भले ही न हो, पर स्थानीय उपयोग और लाभ के लिए तो लगभग हर

गाँव में है। पर सबसे बड़ी बदकिस्मती तो यह है कि अपनी दशा सुधारने के लिए गाँव के लोग खुद कुछ नहीं करना चाहते।

एक गाँव के कार्यकर्ता को सबसे पहले गाँव की सफाई और आरोग्य के सवाल को अपने हाथ में लेना चाहिए। यों तो ग्राम सेवकों को किंकर्तव्य-विमूढ़ बना देने वाली अनेक समस्याएँ हैं, पर यह समस्या ऐसी है जिसकी सबसे अधिक लापरवाही की जा रही है। फलतः गाँव की तन्दुरुस्ती बिगड़ती रहती है और रोग फैलते

रहते हैं। अगर ग्राम सेवक स्वेच्छापूर्वक भंगी बन जाए, तो वह प्रतिदिन मैला उठाकर उसका खाद बना सकता है और गाँव के रास्ते बुहार सकता है। वह लोगों से कहे कि उन्हें पाखाना-पेशाब कहाँ करना चाहिये, किस तरह सफाई रखनी चाहिए, उसके क्या लाभ हैं, और सफाई के न रखने से क्या-क्या नुकसान होते हैं। गाँव के लोग उसकी बात चाहे सुनें या न सुनें, वह अपना काम बराबर करता रहे।

शहरों की सफाई

पश्चिम से हम एक चीज जरूर सीख सकते हैं और वह हमें सीखनी ही चाहिए; वह है शहरों की सफाई का शास्त्र। पश्चिम के लोगों ने सामुदायिक आरोग्य और सफाई का एक शास्त्र ही तैयार कर लिया है, जिससे हमें बहुत-कुछ सीखना है। बेशक, सफाई की पश्चिम की पद्धतियों को हम अपनी आवश्यकताओं के अनुसार बदल सकते हैं।

‘भगवान के प्रेम के बाद महत्व की दृष्टि से दूसरा स्थान स्वच्छता के प्रेम का ही है।’ जिस तरह हमारा मन मलिन हो तो हम भगवान का प्रेम सम्पादित नहीं कर सकते, उसी तरह हमारा शरीर मलिन हो तो भी हम उसका आशीर्वाद नहीं पा सकते। शहर अस्वच्छ हो तो शरीर स्वच्छ रहना सम्भव नहीं है।

कोई भी म्युनिसिपैलिटी शहर की अस्वच्छता और आबादी की सघनता का सवाल महज टैक्स वसूल करके और सफाई का काम करने वाले नौकरों को रखकर हल करने की आशा नहीं कर सकती। यह जरूरी सुधार तो अमीर और गरीब, सब लोगों के सम्पूर्ण और स्वेच्छापूर्ण सहयोग द्वारा ही सम्भव है।

हम अछूत भाइयों की बस्ती वाले गाँवों की सफाई करते हैं, यह अच्छा है। पर वह काफी नहीं है। अछूत लोग समझाने-बुझाने से समझ जाते हैं। क्या हमें यह कहना पड़ेगा कि तथाकथित उच्च जातियों के लोग समझाने-बुझाने से नहीं समझते या फिर शहर का जीवन बिताने के लिए आरोग्य और सफाई के जिन नियमों का पालन करना जरूरी है, वे उन पर लागू नहीं होते? गाँवों में तो हम कई बातें किसी किसिम का खतरा उठाये बिना कर सकते हैं। लेकिन शहरों की घनी आबादी वाली तंग गलियों में, जहाँ, साँस लेने के लिए साफ हवा भी मुश्किल से मिलती है, हम ऐसा नहीं कर सकते। वहाँ का जीवन दूसरे प्रकार का है और वहाँ हमें सफाई के

ज्यादा बारीक नियमों का पालन करना चाहिए। क्या हम ऐसा कर सकते हैं? भारत के हर एक शहर के मध्यवर्ती भागों में सफाई की जो दयनीय स्थिति दिखायी देती है, उसकी जिम्मेदारी हम म्युनिसिपैलिटी पर नहीं डाल सकते। और मेरा ख्याल है कि दुनिया की कोई भी म्युनिसिपैलिटी लोगों के अमुक वर्ग की उन आदतों का प्रतिकार नहीं कर सकती, जो उन्हें पीढ़ियों की परम्परा से मिली है। इसलिए मैं कहना चाहता हूँ कि अगर हम अपनी म्युनिसिपैलिटियों से यह उम्मीद करते हों कि इन बड़े शहरों में जो सफाई-सम्बन्धी सुधार का सवाल पेश है, उसे वे इस स्वेच्छापूर्ण सहयोग की मदद के बिना ही हल कर लेंगे तो यह सम्भव है। अलबत्ता, मेरा मतलब यह बिल्कुल नहीं है कि म्युनिसिपैलिटियों की इस सम्बन्ध में कोई जिम्मेदारी नहीं है।

मुझे म्युनिसिपैलिटी की प्रवृत्तियों में बहुत दिलचस्पी है। म्युनिसिपैलिटी का सदस्य होना सचमुच बड़ा सौभाग्य है। लेकिन सार्वजनिक जीवन का अनुभव रखने वाले व्यक्ति के नाते मैं आपसे यह भी कह दूँ कि इस सौभाग्यपूर्ण अधिकार के उचित निर्वाह की एक अनिवार्य शर्त यह है कि इन सदस्यों को इस पद से कोई निजी स्वार्थ साधने की इच्छा न रखनी चाहिए। उन्हें अपना कार्य सेवा-भाव से ही करना चाहिए। तभी उसकी पवित्रता कायम रहेगी। उन्हें अपने को शहर की सफाई का काम करने वाले भंगी कहने में गौरव का अनुभव करना चाहिए। मेरी मातृभाषा में म्युनिसिपैलिटी का एक सार्थक नाम है; लोग उसे 'कचरा-पट्टी' कहते हैं, जिसका मतलब है- भंगियों का विभाग। सचमुच म्युनिसिपैलिटी को सफाई-काम करने वाली एक प्रमुख संस्था होना ही चाहिए और उसमें न सिर्फ शहर की बाहरी सफाई का बल्कि सामाजिक और सार्वजनिक जीवन की भीतरी सफाई का भी समावेश होना चाहिए।

यदि मैं किसी म्युनिसिपैलिटी या लोकर बोर्ड की सीमा में रहने वाला उसका कर दाता होता, तो जब तक कर के रूप में हम इन संस्थाओं को जो पैसा देते हैं वह उससे चौगुनी सेवाओं के रूप में न लौटाया जाता तब तक अतिरिक्त कर के रूप में एक पाई भी ज्यादा देने से मैं इनकार कर देता और दूसरों को भी ऐसा ही करने की सलाह देता। जो लोग लोकल बोर्डों या म्युनिसिपैलिटियों में प्रतिनिधियों की हैसियत से जाते हैं, वे वहाँ प्रतिष्ठा

के लालच से या आपस में लड़ने-झगड़ने के लिए नहीं जाते, बल्कि नागरिकों की प्रेमपूर्ण सेवा करने के लिए जाते हैं। यह सेवा पैसे पर आधार नहीं रखती। हमारा देश गरीब है। अगर म्युनिसिपैलिटियों में जाने वाले सदस्यों में सेवा की भावना हो, तो वे अवैतनिक मेहतर, भंगी और सड़कें बनाने वाले बन जाएँगे और उसमें गौरव का अनुभव करेंगे। वे दूसरे सदस्यों को, जो कांग्रेस के टिकट पर न चुने गये हों, अपने काम में शरीक होने का न्यौता देंगे और अपने में और अपने कार्य में उन्हें श्रद्धा होगी, तो उनके उदाहरण का दूसरों पर अवश्य ही अनुकूल प्रभाव पड़ेगा। इसका अर्थ यह है कि म्युनिसिपल संस्था के सदस्यों को अपना सारा समय उसी काम में लगाने वाला होना चाहिए। उसका अपना कोई स्वार्थ नहीं होना चाहिए। उनका दूसरा कदम यह होगा कि म्युनिसिपैलिटी या लोकल बोर्ड की सीमा के अन्दर रहने वाली सारी वयस्क आबादी की गणना कर ली जाए और उन सबसे म्युनिसिपैलिटी की प्रवृत्तियों में योग देने के लिए कहा जाए। इसका एक व्यवस्थित रजिस्टर रखा जाना चाहिए। जो लोग ज्यादा गरीब हैं और पैसे की मदद नहीं दे सकते उनसे, अगर वे सशक्त हों तो, श्रमदान करने के लिए कहा जा सकता है।

अगर मैले का ठीक-ठीक उपयोग किया जाये, तो हमें लाखों रुपयों की कीमत का खाद मिले और साथ ही कितनी ही बीमारियों से मुक्ति मिल जाये। अपनी गन्दी आदतों से हम अपनी पवित्र नदियों के किनारे बिगाड़ते हैं और मक्खियों की पैदाइश के लिए बढ़िया जमीन तैयार करते हैं। परिणाम यह होता है कि हमारी दण्डनीय लापरवाही के कारण जो मक्खियाँ खुले मैले पर बैठती हैं, वे ही हमारे नहाने के बाद हमारे शरीर पर बैठती हैं और उसे गन्दा बनाती हैं। इस भयंकर गन्दगी से बचने के लिए कोई बड़ा साधन नहीं चाहिए, मात्र मामूली फावड़े का उपयोग करने की जरूरत है। जहाँ-तहाँ शौच के लिए बैठ जाना, नाक साफ करना या सड़क पर थूकना ईश्वर और मानव-जाति के खिलाफ अपराध है और दूसरों के प्रति लिहाज की दयनीय कमी प्रकट करता है। जो आदमी अपनी गन्दगी को ढकता नहीं है वह भारी सजा का पात्र है, फिर चाहे वह जंगल में ही क्यों न रहता हो।

'मेरे सपनों का भारत' से साभार 13वाँ संस्करण, पृष्ठ सं. 142, 176

शुचिता - अन्तः और बाह्य

प्रो. रामजी सिंह

शुचिता एक समग्र-साधना है जिसे हम “अन्तःशुद्धि” और “बहिर्शुद्धि” दोनों को समेट लेती है। शरीर एवं मन का परस्पर संयोग आवश्यक है। स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मन का आवास होता है। उसी प्रकार आध्यात्मिक साधना के लिये हमें शारीरिक मानसिक क्रियाओं की संगति बैठानी होगी।

वेद से वेदान्त, श्रुति से स्मृति, शास्त्र से महाकाव्य तक भारतीय संस्कृति में शुचिता को धर्म का आधार ही नहीं, धर्म ही माना गया है। सांख्य आदि दर्शनों में “दुःखत्रयभिधाता” या तीन प्रकार के दुःखों में आधिभौतिक, आधिदैविक, एवं आध्यात्मिक तीनों का समावेश है। शुचिता केवल भौतिक जीवन के लिए ही नहीं आध्यात्मिक और मानसिक जीवन के लिए भी अपरिहार्य है। इसीलिए मनु ने अपने धर्म के 10 लक्षणों में शौच को स्थान दिया है। उस प्रकार सब-स्मृति पुराणों ने शौच या शुचिता को धर्म माना है। इसी प्रकार दर्शन के क्षेत्र में महर्षि पतंजलि ने योगसूत्र में अष्टांगिक योग के निरूपण में दूसरे चरण यानी नियम में शौच, सन्तोष, तप, स्वाध्याय और ईश्वर प्रणिधान में शौच को महत्वपूर्ण स्थान इसलिए दिया है कि शुचिता एक समग्र-साधना है जिसे हम “अन्तःशुद्धि” और “बहिर्शुद्धि” दोनों को समेट लेती है। शरीर एवं मन का परस्पर संयोग आवश्यक है। स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मन का आवास होता है। उसी प्रकार आध्यात्मिक साधना के लिए हमें शारीरिक मानसिक क्रियाओं की संगति बैठानी होगी। सनातन धर्म ही नहीं प्रायः सभी धर्मों में ध्यान साधना के पूर्व यम-नियम या नैतिक और बाह्य-(भौतिक) क्रियाओं जैसे आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान की साधना प्राप्त करनी होती है तभी समृद्धि या आध्यात्मिक साधना का अवसर आता है।

शुचिता के लिए केवल बाहरी शुचिता यानी स्नान, स्वच्छ घर, स्वच्छ वायु, स्वच्छ जल, स्वच्छ धूप, स्वच्छ आकाश ही नहीं बल्कि स्वच्छ मन भी आवश्यक है। जहाँ राग नहीं है। वहाँ मन भी एकाग्र करना कठिन हो जाता है।

मनुष्य-शरीर की रचना पंच-तत्त्व से हुई है। साथ-साथ इसका परिपालन भी होता है। अतः इन पर ध्यान रखना आवश्यक है जो व्यक्ति प्राकृतिक वातावरण में ज्यादा रहेगा, उसे प्रकृति का आशीर्वाद या प्राण-तत्त्व भी अधिक प्राप्त होगा। जब शरीर सम्पोषित एवं स्वस्थ रहेगा, उसकी मानसिक साधना भी अच्छी रहेगी। जिस तरह मानसिक स्वास्थ्य के लिए शारीरिक स्वास्थ्य आवश्यक है, उस प्रकार मन की एकाग्रता आदि के लिये सुन्दर स्वास्थ्य भी जरूरी है। जो व्यक्ति मन में राग, द्वेष, क्रोध, अहंकार आदि को पालेगा तो वह मानसिक रूप से अस्थिर रहेगा। अतः शारीरिक स्वास्थ्य के साथ अन्तःकरण की शुद्धि आवश्यक है। आज विश्व में हैजे, मलेरिया आदि संक्रामक रोगों

पर विजय भले ही पा ली गयी है। किन्तु मानसिक स्नावयिक बीमारियाँ जैसे कैंसर, मानसिक दुर्बलता आदि अनेकानेक बीमारियाँ बढ़ रही हैं। हम शारीरिक शुचिता और मानसिक शुचिता को अलग नहीं कर सकते।

शुचिता के सम्बन्ध में आधुनिक युग में जनसंख्या का जो विस्फोट हो रहा है वह अत्यन्त घातक है। धरती माता उतने को ही पाल सकती है जितनी उनकी शक्ति है। अतः आदर्श वो है कि हम संयम को जीवन में स्थान दें। आत्मनियन्त्रण सर्वोत्तम है। आज तो आत्म-संयम के बदले हम कृत्रिम उपाय से जन्म नियन्त्रण कर रहे हैं। इससे कई प्रकार की बीमारियाँ उत्पन्न होती हैं और आत्मसंयम की शक्ति तो बहुत कमजोर हो जाती है। अतः वीर्य-रक्षा या आत्म-संयम का रास्ता ही सर्वोपरि है। बचपन से ही यौन संयम की शिक्षा लड़के और लड़कियों के लिए अनिवार्य होनी चाहिए क्योंकि माता पिता सन्तान को यह बता नहीं पाते। विवाह की आयु को शिक्षा एवं कानून से नियन्त्रित किया जा सकता है। भारत में यह जनसंख्या का विस्फोट किसी भी योजना को चलने नहीं देगा। अतः साथ-साथ आत्म नियोजन और आत्म संयम जन-शिक्षण पर जोर दिया जाए। इससे भी भयानक वैश्विक खतरा पर्यावरण के बढ़ते प्रदूषण से है। प्रकृति अपनी सीमाओं में मानव जाति का पोषण करती है इसलिए उसका असीमित भोग या शमन नहीं कर सकते। आसमान की ओजोन छतरियों में छेद, पृथ्वी-समुद्र के ताप में वृद्धि, जलवायु परिवर्तन आदि ढेरों समस्याएँ खड़ी हो गयी हैं इसके लिए जब तक आम आदमी के जीवन में सादगी नहीं आएगी पर्यावरण की रक्षा नहीं हो पाएगी।

युद्ध-समाप्ति के साथ-साथ विश्व स्तर पर हमें अपनी आवश्यकताओं को कम करना होगा। आवश्यकताएँ यदि बढ़ेंगी तो हम प्रकृति का असिमित दोहन करेंगे और तब पर्यावरण का संकट अनिवार्य है।

यह विश्व-शान्ति की राजनीति और शान्ति का अर्थशास्त्र तथा शान्ति की शिक्षा को अपनाकर होगा। इसके लिए अन्दर की शुचिता आवश्यक है। अन्तःकरण की शुचिता के बिना बाहरी शुचिता प्रभावकारी नहीं हो सकती। सफाई के सम्बन्ध में विचार में समग्रता की दृष्टि से इसमें सार्वजनिक स्वास्थ्य की अवधारणा से जुड़ना जरूरी है। आज देश का शहरीकरण हो रहा है। नगरपालिका और महानगरपालिकाओं की संख्या बढ़ रही

है। जहाँ व्यक्तिगत सफाई से कही अधिक सार्वजनिक स्वास्थ्य पर ध्यान दिया जाता है। आज भारत में नगरों की आबादी समूची आबादी का 40 प्रतिशत है। इन नगरों में रोशनी, सफाई, सड़कें आदि प्रबन्ध पालिकाओं द्वारा होता है फिर भी आबादी बढ़ने के कारण नगर वस्तुतः नरक जैसे हो रहे हैं। सफाई कर्मचारियों पर कड़ाई अवश्य हो लेकिन नगर निवासियों का भी कर्तव्य है कि घर के आस-पास गन्दगी न फैलाएँ और न फैलाने दें। सिंगापुर आदि शहरों की तरह गन्दगी फैलाने वाले को दंडनीय अपराध की व्यवस्था हो।

गाँव की स्थिति तो शुचिता के मामले में इसलिए ज्यादा खराब है कि वहाँ घर के साथ शौचालय का प्रबन्ध नहीं के बराबर है। पुरुष एवं स्त्री दोनों बाहर झाड़ी-झुरमुट या खेत की आड़ या सड़क के किनारे शौच करते हैं और कोई व्यक्ति उधर से आता है तो उन्हें उठना पड़ता है। अतः राष्ट्रीय स्वच्छता अभियान का ज्यादा जोर गाँवों पर होना चाहिए। वहाँ यदि जन-शिक्षण और स्कूलों के द्वारा गन्दगी मुक्ति का अभियान चलाया जाए तो गाँव के लोग इस दिशा में काफी बढ़ सकते हैं।

उपसंहार

गांधीजी की 150 वीं वर्षगांठ पर सफाई अभियान को अधिक सफल एवं सार्थक होना है तो निम्नलिखित कार्यक्रमों पर ध्यान देना होगा-

हर घर में शौचालय

कोई आवश्यक नहीं कि कीमती पत्थर या संगमरमर पत्थर के शौचालय का स्थान हो। ट्रैंच शौचालय बनाकर दिखाया जाए जो आसान है। गाँव-पंचायत पर विकास के लिए अनुदान देने की शर्त हो कि पंचायत में सभी घर में शौचालय हो।

गाँव की स्थिति तो शुचिता के मामले में इसलिए ज्यादा खराब है कि वहाँ घर के साथ शौचालय का प्रबन्ध नहीं के बराबर है। पुरुष एवं स्त्री दोनों बाहर झाड़ी-झुरमुट या खेत की आड़ या सड़क के किनारे शौच करते हैं और कोई व्यक्ति उधर से आता है तो उन्हें उठना पड़ता है। अतः राष्ट्रीय स्वच्छता अभियान का ज्यादा जोर गाँवों पर होना चाहिए।

स्वच्छ जल

हर गाँव में पीने का साफ पानी हो। अभी तो लगभग 64 प्रतिशत लोग स्वच्छ पानी नहीं पीते हैं। इसका इलाज हर जगह पानी का टॉवर या पाइपलाइन से सम्भव नहीं है। अतः ग्रामोद्योगी फिल्टर दिया जाए। इसके लिए गाँव पंचायत के स्तर पर फिल्टर को बनाकर दिखाया जाय। स्वच्छ और गन्दा पानी पीने से कितनी बीमारियाँ होती हैं यह बताया जाए।

अच्छी जीविका

शुचिता का प्रश्न केवल अशिक्षा या अन्धविश्वास पूर्ण संस्कार से ही नहीं इसका प्रश्न अच्छी जीविका या उच्चजीवन से जुड़ा है। लोगों में यह चेतना तो जग रही है कि प्रतिष्ठा की दृष्टि से भी घर की महिलाओं को

शुचिता का प्रश्न केवल अशिक्षा या अन्धविश्वास पूर्ण संस्कार से ही नहीं इसका प्रश्न अच्छी जीविका या उच्चजीवन से जुड़ा है। लोगों में यह चेतना तो जग रही है कि प्रतिष्ठा की दृष्टि से भी घर की महिलाओं को बाहर सड़क के बगल में शौच नहीं करना चाहिए। लेकिन समस्या यह भी है कि जब उनके पास आवास ही नहीं है तो वे शौचालय कैसे बनवा सकते हैं।

बाहर सड़क के बगल में शौच नहीं करना चाहिए। लेकिन समस्या यह भी है कि जब उनके पास आवास ही नहीं है तो वे शौचालय कैसे बनवा सकते हैं। आँकड़ों के अनुसार लगभग 21 प्रतिशत लोगों को भारत में एक कोठरी का भी आवास नहीं है। उसकी स्थिति में शौचालय के लिए स्थान ही नहीं है अतः उसे बनवा पाना मुश्किल ही है। मुख्य

समस्या रोजी-रोजगार तथा गरीबी है। स्वच्छता अभियान अनिवार्य है। लेकिन इसका सम्बन्ध आर्थिक एवं शैक्षिक कारणों से जुड़ा हुआ है। जिस प्रकार से 60 वर्षों के बाद निरक्षरता समाप्त करने के लिए सरकार को आखिरकार शिक्षा-विधेयक बनाना पड़ा, अस्पृश्यता निवारण आदि के लिये स्वतन्त्र कानून बनाकर आर्थिक एवं दंडनीय कानून संविधान में बनाना पड़ा, उसी प्रकार सर्वांगीण और समग्र स्वच्छता अभियान को लागू करना होगा। हमें यह सोचना होगा कि एक व्यक्ति को जहाँ तीन-चार से

ज्यादा मकान हैं जबकि 21 प्रतिशत लोग आसमान के नीचे रहते हैं। ऐसे में यह सामाजिक न्याय और आर्थिक न्याय का सीधा प्रश्न है।

स्वच्छता का प्रश्न या अभियान अवश्य अभिनन्दनीय है लेकिन इसको समग्रता में समझने की आवश्यकता है।

ग्राम सफाई

बापू ने अपने अठारह रचनात्मक कार्यक्रमों में ग्राम-सफाई को स्थान दिया था। किन्तु वे भी केवल सफाई लेकर नहीं खड़े हुए। उसमें सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक एवं सांस्कृतिक मुद्दे भी जुड़े थे। मानवजीवन एकांगी है। कुछ समय के लिए किसी समस्या को उठाया जा सकता है लेकिन इस प्रश्न पर कहा जा सकता है कि इस प्रकार का एक प्रतीक नमक सत्याग्रह खोजकर गांधी ने न केवल भारत की जनता को जागृत किया था अपितु ब्रिटिश सरकार को भी हिला दिया था। मोतीलाल नेहरू जैसे विख्यात राष्ट्रीय नेता ने नमक तोड़ने के आंदोलन पर शंका उपस्थित की थी तो गांधी ने उनके पत्र के उत्तर में कहा था “बना कर देखिए”। मोतीलाल जी शानगुमान में नमक बनाने आये और जो कल तक उनके साथ क्लब महफिल में साथ बैठते थे उन्होंने ही गिरफ्तार कर लिया। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने दिल्ली के लाल किले की प्राचीर से 15 अगस्त को स्वतन्त्रता दिवस के शुभ दिन राष्ट्रीय ध्वज फहरा कर देशवासियों को गांधीजी की 150वीं वर्षगांठ की याद दिलाते हुए जब सफाई अभियान का आह्वान किया तो मैं यह सोचने पर बाध्य हुआ कि स्वच्छता की कमी के साथ-साथ राष्ट्र की कितनी और समस्याएँ हैं, जिनपर ध्यान देना अनिवार्य है। मुझे उम्मीद है कि 15 अगस्त जैसे महत्वपूर्ण दिन पर इस ऐतिहासिक स्थल से भूख, दारिद्र्य, विषमता, महंगाई, नौजवान की रोजी-रोटी, शिक्षा, आदि प्रश्नों पर भी प्रधानमंत्री का आह्वान भविष्य में सुनाई देगा पंडित दीनदयालजी के “अन्त्योदय” का सन्देश भी काफी प्रासंगिक था, जिसे गांधीजी ने भी अपने सर्वोदय के प्रारम्भ में रखा था? गांधीजी ने अपने प्यारे शिष्य नेहरू को क्या अन्त्योदय का ताबीज दिया था। टालस्टाय, रस्किन और गीता माता की “दरिद्राण भर कौन्त्य की ध्वनि” में था। ■

आंदोलनकारी की तरह काम करना होगा

अवधेश कुमार

समर्थ राष्ट्र की कल्पना सामान्यतः लोग अपनी-अपनी सोच के अनुसार करते हैं। आज दुनिया में अमेरिका, यूरोप के कुछ देश, एशिया में जापान व चीन को समर्थ देश माना जाता है तथा भारत के बारे में भी भविष्यवाणी की गई है कि वह शीघ्र ही शक्तिशाली होकर इनकी श्रेणी में आ जायेगा। इससे हमारे अंदर एक आत्मविश्वास और स्वाभिमान का भाव पैदा होता है कि हम भी आने वाले दिनों में समर्थ और शक्तिशाली भारत के नागरिक होंगे। वैसे भारत के साथ तो विश्व का व्यवहार एक शक्तिशाली देश के समान हो ही चुका है। लेकिन विचार करने वाली बात यह है कि हमारे राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने किस प्रकार के समर्थ भारत की कल्पना की थी? गांधीजी की कल्पना का अर्थ अकेले उनकी कल्पना नहीं, बल्कि भारत के अस्तित्व में आने से लेकर उनके काल तक के इसके प्रवाह में जिनने इस महान देश के निर्माण में भूमिका अदा की, उनके संबंध में विचार दिये..... उन सबकी सम्मिलित सोच। वस्तुतः गांधीजी राष्ट्र निर्माण के संदर्भ में हमारे सारे मनीषियों के प्रतिनिधि पूँज की तरह हैं।

गांधीजी का समर्थ भारत दरअसल, स्वावलंबी भारत था। ऐसा भारत जहाँ के लोग आपसी सहकार और साहचर्य से अपने उपलब्ध संसाधनों तथा परंपरागत गुणों को विकसित करते हुए इसे ऐसा देश बना दें, जो किसी आवश्यकता के लिए दूसरे पर निर्भर नहीं हो, हर व्यक्ति एक दूसरे का पूरक हो, जो विश्व को इस बात की प्रेरणा दे सके कि बिना असामनता की खाई पैदा किए, दूसरे व्यक्ति का, देश का शोषण किए बगैर अपनी बदौलत सशक्त और समर्थ हो सकता है। जहाँ के नागरिकों के बीच आपस का इतना प्रेम हो कि वो एक दूसरे के हित के लिए अपने को न्यौछावर कर दें। गांधीजी ने कहा

कि विश्व में यदि कहीं भी अन्याय के विरुद्ध आवाज उठाने की नौबत आये तो उसमें पहला आदमी भारतीय होगा। यह कैसे संभव है? जहाँ के लोग स्वयं अपनी आवश्यकता की पूर्ति में ही अपना जीवन खपाते रहेंगे, जहाँ किसी व्यक्ति को परिवार और उसके भविष्य को लेकर निश्चिंतता नहीं होगी, विचार और संस्कार के स्तर पर उसके अंदर निर्भीकता तथा विश्व समुदाय के अंग के रूप में अपने उत्तरदायित्व का भान नहीं होगा वह ऐसा कर ही नहीं सकता। एक स्वावलंबी, समर्थ और उसमें भी परस्पर सहकार और साहचर्य पर आधारित उसी देश का वासी ऐसा कर सकता है जिसके अंदर यह वैचारिक बोध हो कि उसका दायित्व केवल अपने तक नहीं, अपने परिवार तक नहीं, अपने देश तक भी नहीं, विश्व समुदाय तक विस्तारित है।

तो गांधीजी के स्वतंत्र भारत, समर्थ भारत की कल्पना ऐसी थी। वैचारिकता के साथ मनुष्य के जीवन आवश्यकताओं की पूर्ति के साधनों का उसी तरह विकास जिसकी दिशा स्पष्ट हो। इस तरह के विकास का मुख्य दायित्व तो युवा वर्ग पर ही आता है। वैसे भी भारत दुनिया का सबसे युवा देश है। तो युवक क्या करें? व कैसे बनें? इस पर गांधीजी ने क्या कहा? हम उदाहरण के लिए उन्होंने 9 जुलाई 1925 को यंग इंडिया में जो लिखा उसे उद्धृत कर रहे हैं। नजर डालिए- 'मेरी आशा देश के युवकों पर है। उनमें से जो बुरी आदतों के शिकार हैं, वे स्वभाव से बुरे नहीं हैं। वे उनमें लाचारी से और बिना सोचे समझे फंस जाते हैं। उन्हें समझना चाहिए कि इससे उनका और देश के युवकों का कितना नुकसान हुआ है। उन्हें यह भी समझना चाहिए कि कठोर अनुशासन द्वारा नियमित जीवन ही उन्हें और राष्ट्र को सम्पूर्ण विनाश से बचा सकता है, कोई दूसरी चीज

नहीं।' वे इसके बाद कहते हैं '.....उन्हें ईश्वर की खोज करनी चाहिये और प्रलोभन से बचने के लिए उसकी मदद माँगनी चाहिए। उसके बिना यंत्र की तरह केवल अनुशासन का पालन करने से विशेष लाभ नहीं होगा। ईश्वर की खोज का, उसके ध्यान और दर्शन का अर्थ यह है कि जिस तरह बालक बिना किसी प्रदर्शन की आवश्यकता के अपनी माँ के प्रेम को महसूस करता है, उसी तरह हम भी यह महसूस करें कि ईश्वर हमारे हृदय में विराजमान हैं।'

तो युवकों के संस्कार, व्यवहार के संदर्भ में यह गांधीजी कल्पना है। यह कल्पना यूँ ही नहीं थी। अगर युवाओं के कंधे पर ही राष्ट्र निर्माण का दायित्व है तो उन्हें उसकी कसौटी पर खरा उतरने वाला होना ही चाहिए। आज करीब 65 प्रतिशत आबादी हमारी 40 वर्ष

हम एक उंची ग्राम सभ्यता के उत्तराधिकारी हैं। हमारे देश की विशालता, आबादी की विशालता और हमारी भूमिका की स्थिति तथा आबहबा ने मेरी राय में, मानो यह तय कर दिया है कि उसकी सभ्यता ग्राम सभ्यता ही होगी। उसके दोष तो मशहूर हैं, लेकिन उनमें कोई ऐसा नहीं है जिसका इलाज न हो सकता हो।

से नीचे की है। जब तक इतनी बड़ी आबादी आत्मानुशासित और आत्मसंयमित नहीं होगी तो फिर वे संकल्पबद्ध होकर राष्ट्र को समर्थन बनाने में अपना सर्वस्व लगा नहीं सकते। इसलिए नींव तो यही हैं। गांधीजी मानते हैं कि युवक ही भविष्य के विधाता हैं और उन्हें राष्ट्र का नमक यानी रक्षक होना है। उनके अनुसार यदि यह नमक ही अपना

खारापन छोड़ दे, तो उसे खारा कैसे बनाया जाये? तो युवाओं के ऐसा बनने के बाद वे उनकी भूमिका का निर्धारण करते हैं। वे कहते हैं- 'मैं चाहता हूँ कि तुम नवयुवक गाँवों में जाओ और वहाँ जमकर बैठ जाओ-उनके मालिकों या उपकारकर्ता की तरह नहीं, बल्कि उनके विनम्र सेवकों की तरह। तुम्हारी दैनिक चर्या से और तुम्हारे रहन-सहन से उन्हें समझने दो कि उन्हें खुद क्या करना है। अपने रहने का ढंग किस तरह बदलना है। महज भावना का कोई उपयोग नहीं है, ठीक उसी तरह जैसे कि भाप का अपने-आपमें कोई उपयोग

नहीं। भाप को उचित नियंत्रण में रखा जाय तभी उसमें प्रचंड शक्ति पैदा होती है। यही बात भावना की है। मैं चाहता हूँ कि तुम भारत की आहत आत्मा के लिए शान्तिदायी लेप लेकर जाने वाले भगवान के दूतों की तरह उनके बीच में जा पहुँचो।

यह विचार करने वाली बात है कि हम चाहे स्वच्छ भारत की बात करें या उसके माध्यम से समर्थ भारत की... यह गांधीजी की कल्पना के अनुरूप तो है, पर यहाँ दो बातें समझना आवश्यक है। यदि इस प्रकार युवा पीढ़ी का निर्माण आजादी के बाद से करने की कोशिश हुई होती, उनकी शिक्षा और जीवन शैली में ये आदर्श बिठाये गए होते तो संभवतः आज अलग से स्वच्छ भारत के आह्वान और उसके लिए इतना काम करने की आवश्यकता नहीं होती। इसी तरह यदि युवक गाँवों के लिए, समाज के लिए काम कर रहे होते, अपनी जीवनचर्या से प्रेरणा दे रहे होते तो स्वावलंबन, सहकार और साहचर्य से परिपूर्ण सामर्थ्य का सोपान भी ऊँचाइयाँ चढ़ रहा होता। गांधी ने जब काँग्रेस को भंग करने का सुझाव दिया तो उसके पीछे सोच यही थी कि स्वतंत्रता संग्राम में लगने वाले लोग सत्ता और चुनाव की राजनीति में पड़ने की बजाय भारत के गाँवों जाकर पुनर्निर्माण का कार्य करें। उन्होंने कहा कि काँग्रेस के लोग सात लाख गाँवों में जाएँ। तो भारत को सामर्थ्यवान देश बनाने का उनका जो सपना था वो स्वयं यहाँ के लोगों के अपने परिश्रम, त्याग से प्रेरणा देकर सबको साथ लाने, सबके हित को एक दूसरे से जोड़ते हुए सबको सबके लिए भी और अपने लिए भी काम करने की स्वाभाविक स्थिति पैदा कर देने का सपना था।

वो आवश्यकता आज कहीं ज्यादा है। कोई सरकार या सरकारी कार्यक्रम किसी देश को सामर्थ्यवान बनाने में अकेले सक्षम नहीं हो सकता। सरकार की अपनी सीमाएँ हैं। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी भी कह रहे हैं कि हमें गांधीजी से प्रेरणा लेकर विकास को जनांदोलन का रूप देना है। यह भाव सबके अंदर पैदा हो कि हम जो भी कर रहे हैं वो सब देश के लिए कर रहे हैं। भले काम हमारा अपना दिखता हो, पर है वो देश के लिए। यहाँ से देश के लिए सोचने का भाव पैदा होता है जो धीरे-धीरे विकसित होते-होते देश के लिए जीने तक पहुँच सकता है। गांधीजी के केन्द्रबिन्दु में भारत के गाँव थे। वो मानते थे कि गाँव ही भारत रूपी शरीर की रीढ़ की हड्डी, रक्त

नलिकाएँ, हृदय, मस्तिष्क, आंख, कान, नाकसब हैं। अगर गाँव समर्थ तो भारत समर्थ। गाँव स्वावलंबी तो देश स्वावलंबी। गाँव आदर्श तो देश आदर्श। गाँव खुशहाल तो देश खुशहाल। गाँव नैतिक तो देश नैतिक.....।

गांधी जी का पूरा फोकस गाँव था। यंग इंडिया के 7 नवंबर 29 के अंक में उन्होंने जो लिखा उसके कुछ अंशों का उल्लेख यहाँ प्रासंगिक है- 'हम एक ऊँची ग्राम सभ्यता के उत्तराधिकारी हैं। हमारे देश की विशालता, आबादी की विशालता और हमारी भूमिका की स्थिति तथा आबहबा ने मेरी राय में, मानो यह तय कर दिया है कि उसकी सभ्यता ग्राम सभ्यता ही होगी। उसके दोष तो मशहूर हैं, लेकिन उनमें कोई ऐसा नहीं है जिसका इलाज न हो सकता हो। इस सभ्यता को मिटाकर उसकी जगह दूसरी सभ्यता को जमाना मुझे तो अशक्य मालूम होता है। हाँ, हम लोग कन्हीं कठोर उपायों के द्वारा अपनी आबादी 30 करोड़ से घटाकर 3 करोड़ या 30 लाख करने को तैयार हो जाये तो दूसरी बात है। इसलिए यह मानकर कि हम लोगों को मौजूदा ग्राम सभ्यता ही कायम रखना है और उसके माने हुये दोषों को दूर करने का प्रयत्न करना है, मैं उन दोषों के इलाज सुझा सकता हूँ।' तो गांधी का समर्थ भारत दरअसल, भारत की आत्मा की समर्थता थी और आत्मा तो गाँव ही था और है। गांधी की कल्पना थी कि अपने गाँवों से वहाँ के निवासियों को इतना जुड़ाव रहेगा, इतना प्रेम रहेगा कि उसकी तनिक भी क्षति वे सहन नहीं कर पाएंगे और उसे रोकने के लिए जान लगा देंगे। यही नहीं यदि कभी नौबत आई तो अपने गाँव को बचाने के लिए एक-एक व्यक्ति बलि चढ़ा देगा।

यह भाव अपनी माटी से जुड़ाव का था। आप देखेंगे गांधीजी ने गाँवों की स्वच्छता और पवित्रता से लेकर, लोगों के काम, यानी किसान, कारीगरी, सिलाई, कताई, बुनाई....इन सबके अनुकूल शिक्षा, कौशल विकास और सबके अंदर शारीरिक श्रम करने का स्वाभाविक भाव पैदा करने पर सबसे ज्यादा विचार किया है। इन सबका तरीका भी उन्होंने दिया है। इन सबके लिए कहीं से न पूँजी लाने की आवश्यकता थी, न तकनीक, न विशेषज्ञ.न बाजार तलाशने का उद्यम करना था। गाँव की गंदगी, गरीबी का विवरण गांधी ने एकदम हूबहू किया है और उन्हें दूर करने के उपाय बताये हैं। मेरा मानना है कि अब शहरों की संख्या भी बढ़ी है और उसको भी

किसी अभियान से अलग नहीं कर सकते किंतु आज भी स्वच्छ और समर्थ भारत का मुख्य आधार विन्दू गाँव ही हो सकता है।

इसीलिए गांधीजी ने भारत को पवित्र और शक्तिशाली बनाने की भावना से काम करने वालों को अपना जीवन गाँवों में लगाने की अपील की थी। जहाँ वे यह कहते हैं कि मैं इसका इलाज बता सकता हूँ वहीं वे कहते हैं कि इन इलाजों का उपयोग तभी हो सकता है जबकि देश का युवक वर्ग ग्राम जीवन अपना ले। अगर ऐसा वे करना चाहते हों, तो उन्हें अपने जीवन का तौर तरीका बदलना चाहिये और अपनी छुट्टियों का हर एक दिन अपने कॉलेज या हाईस्कूल के गाँवों में बिताना चाहिये। जो लोग अपनी शिक्षा पूरी कर चुके हों या शिक्षा ले ही नहीं रहे हो, उन्हें गाँवों में बसने का इरादा कर लेना चाहिए। आजादी के इन लगभग 68 वर्षों में यद्यपि शहरों का विस्तार हुआ है, उनकी आबादी बढ़ी है, गाँवों से पलायन जारी है और यह भारत के समर्थ होने में बड़ी बाधा है। यह विकास की असंतुलित नीतियों का परिणाम है।

अगर भारत को स्वच्छ और समर्थ बनाना है तो इस असंतुलन को संतुलित करना होगा। अब यह स्थिति नहीं है कि हम शहरों को नष्ट कर दें, पर गाँव नष्ट हो जाएँ यह तो भारत का विनाश होगा। इसलिए दोनों के बीच संतुलन बनाते हुए काम करने की आवश्यकता है। लेकिन मुख्य बात जो गांधीजी ने कही पढ़े-लिखे, ज्ञानी, कुशल, सक्षम, नामी लोगों के गाँवों में जाने, वहाँ काम करने, कुछ समय लगाने या वहाँ बस जाने का..... उसकी आवश्यकता आज भी है। यह अच्छी बात है कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी बार-बार अधिकारियों, प्रोफेशनलों, विद्वानों, डॉक्टरों सबसे कुछ दिन गाँवों में जाने की अपील कर रहे हैं। यह गांधीजी का ही विचार है जिसका आज थोड़ा स्वरूप बदला है। तो समर्थ भारत के लिए हमें, हमारे युवाओं, हमारे अधिकारियों, नेताओं, पेशेवर कुशल व्यक्तियों.....सबको देश के लिए काम करने के सामूहिक भाव से अपने को समर्थ भारत बनाने के आंदोलनकारी के रूप में बदलना होगा। यह हो गया तो फिर भारत को स्वच्छ और समर्थ बनने से कोई रोक नहीं सकता है। प्रश्न तो यही है कि ऐसा होगा कैसे?

संपर्क- ई: 30, गणेश नगर, पांडव नगर कॉम्प्लेक्स
दिल्ली-110092. फोन: 09811027208

स्वच्छता एवं सामूहिकता

प्रो. मनोज कुमार

गाँव के लोगों में ग्राम-भावना जितनी मजबूत होगी उतनी ही तेजी से गाँव का विकास होगा। सामाजिक न्याय के मूल्यों को विकसित करते हुए एकता अगर न बढ़ायी जाए, तो आर्थिक या विकास के दूसरे काम टिक नहीं पाएँगे। एकता के लिए चित्तप्रवृत्तियों के शुद्धीकरण, सहकार बढ़ाने और आमदनी के वृद्धि के काम तथा स्वास्थ्य और सामूहिक मनोरंजन ऐसे त्रिविध कार्य अनिवार्य है, सामूहिक निर्णय एकता का प्रत्यक्ष और ठोस सबूत है

गांधी-दर्शन में समाज-परिवर्तन का स्थान महत्वपूर्ण है। गांधी समाज-व्यवहार के तीनों पहलुओं व्यक्तिव समाज एवं संस्कृति¹ को एक साथ परिवर्तित करने पर बल देते हैं। समाज परिवर्तन में लक्ष्य की पवित्रता के साथ-साथ साधन की पवित्रता पर भी बल दिया गया है। परिवर्तन स्वयंसेवकों के द्वारा या समाज के लोगों के द्वारा ही सम्भव है।² दक्षिण अफ्रीका और भारत में गांधी जी द्वारा संचालित सत्याग्रह के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि गांधीजी ने, अंग्रेजी सत्ता के मुक्ति से समाज परिवर्तन को अधिक महत्वपूर्ण स्थान दिया था। हिन्द स्वराज्य में उन्होंने लिखा है कि वे हिन्दुस्तान को अंग्रेज नहीं बनाना चाहते थे। 'कांग्रेस का उद्देश्य' शीर्षक से उन्होंने लिखा है कि राजनीतिक स्वतन्त्रता मिलने के बाद कांग्रेस को स्वयं ही अगले महान कार्य अर्थात् देश में वास्तविक प्रजातन्त्र की स्थापना और सामाजिक न्याय एवं समानता पर आधारित समाज की स्थापना के काम के लिए तैयार करना चाहिए, ताकि सामाजिक और आर्थिक क्षेत्र में भी प्रजातन्त्र की स्थापना हो सके।³

कांग्रेस के संविधान में उन्होंने लिखा है कि विदेशी प्रभुत्व से पूर्ण स्वतन्त्र होने का लक्ष्य पूरा हो चुका है⁴ इसलिए कांग्रेस संगठन को नये सिरे से ढालना होगा, यह सुधार हुए संविधान का मसौदा खास तौर से बुलाये गये अखिल भारतीय कांग्रेस कमिटी के जनवरी 1948 के अन्त से पहले-पहले पेश करेगी। कांग्रेस के उद्देश्य में वे लिखते हैं कि उद्योगों को समाज से सम्बन्धित होना चाहिए तथा उनका इस प्रकार संगठन करना चाहिए कि, उसमें काम करने वाले का उद्योगों के लाभ, प्रबन्ध और प्रशासन में भागीदार हो, उत्पादन, वितरण और विनिमय सभी साधनों पर समाज का नियन्त्रण गांधी चाहते हैं।

गांधी ने रचना एवं आंदोलन का समन्वय किया है। सत्याग्रह में निषेधात्मक तत्वों के साथ भावात्मक मूल्य जुड़े हैं। रचनात्मक कार्यक्रम सत्याग्रह का भावात्मक पक्ष है। गोपीनाथ धवन ने नैतिक शक्ति और अनुशासन को दृढ़ करने के लिए रचनात्मक कार्यक्रम को आवश्यक माना है।⁵ सविनय अवज्ञा का अर्थ रचनात्मक कार्यक्रम है।⁶ सीतारामैया कहते हैं कि रचनात्मक कार्यक्रम गांधीवादी सत्याग्रहरूपी आत्मा का शरीर है, यह सत्याग्रह का सहवर्ती एवं पूरक तत्व है।⁷ दरअसल यह शान्त, मूक और शुभ क्रान्ति है।⁸ रचनात्मक कार्यक्रम अहिंसक समाजवाद की पूँजी⁹ अर्थात् आर्थिक समानता का दर्शन है।

दरअसल गांधी रचनात्मक कार्यक्रम के द्वारा अहिंसा की शक्ति को संगठित करना चाहते थे। उन्होंने अहिंसा को सामाजिक धर्म कहा है, इससे सामूहिक अहिंसा जागृत होती है। इन्होंने कहा है कि यदि रचनात्मक कार्यक्रम में जीवन्तता सम्भव नहीं है तो सामूहिक अहिंसा की बात करना बेईमानी है।¹⁰ जयप्रकाश जी भी मानते हैं, कि गांधी एवं बिनोवा के सम्पूर्ण कार्यक्रम का मूल उद्देश्य अहिंसक कार्यक्रम का पुनर्निर्माण करना था।¹¹ अहिंसक बल रचनात्मक कार्यक्रम के आधार के बिना परीक्षा के समय बुरी तरह असफल रहता है। इसलिए रचनात्मक कार्यक्रम के द्वारा गांधी अहिंसा की ट्रेनिंग देना चाहते थे क्योंकि यह हमें सेवा और अनासक्त कर्म की ओर प्रवृत्त करता है। गांधी जी का विश्वास था कि अहिंसक तरीके से स्वराज्य प्राप्त करने के लिए रचनात्मक कार्यक्रम अनिवार्य है। उनके अनुसार रचनात्मक कार्यक्रम के क्रियान्वयन का मतलब स्वराज्य का ढाँचा तैयार करना है।¹² इसलिए गांधी जीता हुआ स्वराज नहीं बल्कि रचनात्मक कार्यक्रम द्वारा समृद्ध स्वराज्य प्राप्त करना चाहते थे। बारडोली के किसानों से इन्होंने कहा था कि अगर आप रचनात्मक कार्यक्रम नहीं करते तो आपकी सारी कमाई धूल में मिल जाएगी।¹³ अंग्रेजों से लड़कर प्राप्त स्वराज्य जंगलियों का स्वराज्य होगा।

गांधी और बिनोवा दोनों ही मानते हैं कि सत्ता द्वारा सेवा नहीं हो सकती, सेवा करना सत्ता वालों के लिए सरल नहीं है।¹⁴ राजनीतिक सत्ता जनता की स्थिति सुधारने के लिए अनेक साधनों में से एक साधन है।¹⁵ जयप्रकाश नारायण ने भी कहा है कि हमें देश के निर्माण और परिवर्तन का सबसे बड़ा भाग राजनीतिज्ञों, राज्य या सरकार पर नहीं छोड़ना चाहिए।¹⁶ चारु चौधरी ने भी कहा है कि जनता का उद्यम एवं सरकार की सहायता से समाज का निर्माण करना चाहिये।¹⁷ शंकरराव देव कहते हैं कि रचनात्मक कार्यक्रम राजनीतिक शिक्षण है।¹⁸ रचनात्मक काम करने से जागृत जनता की बुद्धि, रचनात्मक और संगठनात्मक बनती है।¹⁹

आचार्य राममूर्ति लिखते हैं कि गाँव के जीवन में हर जगह द्वैत दिखाई देता है। गाँव के जीवन का ताना दमन और बाना शोषण का है और इस ताने-बाने से बने कपड़े में द्वैत ही द्वैत है। मजबूत कमजोर को दबाता है और धनी कमजोर को चूसता है।²⁰ आजादी के बाद विकास की त्रिवेणी, जिसे आचार्य जी तीर्थराज संगम

कहते हैं वह टोपी, थैली और कुर्सी का है, टोपी नेता की, थैली ठेकेदार की कुर्सी अफसर की। यही वह त्रिवेणी है जिसमें मुखिया जी स्नान करते हैं²¹, सरकारी योजना ने सर्व सामान्य के जीवन को स्पर्श नहीं किया है जो समर्थ थे, वहीं ब्लॉक की त्रिवेणी में स्नान कर सकते हैं। भारत का ग्रामीण समाज, मालिक, मजदूर और ऊँच-नीच में बँटा है, आचार्य जी का मानना है कि मालिक मजदूर का नाता गाँव के जीवन की गंगा है और ऊँच-नीच का नाता जमुना, संगम पर दोनों अभिन्न हो जाती है, उन्हें अलग करना कठिन है।²²

इसलिए ये मिलकर सोचे और मिल कर करें की योजना देते हैं। इनका मानना है कि गाँव के लोगों में ग्राम-भावना जितनी मजबूत होगी उतनी ही तेजी से गाँव का विकास होगा। सामाजिक

न्याय के मूल्यों को विकसित करते हुए एकता अगर न बढ़ायी जाए, तो आर्थिक या विकास के दूसरे काम टिक नहीं पाएँगे। एकता के लिए चित्तप्रवृत्तियों के शुद्धीकरण, सहकार बढ़ाने और आमदनी के वृद्धि के काम तथा स्वास्थ्य और सामूहिक मनोरंजन ऐसे त्रिविध कार्य अनिवार्य है, सामूहिक निर्णय एकता का प्रत्यक्ष और ठोस सबूत है²³ (पृ. 169) गाँव के साधन, वहाँ के हुनर और लोगों के चरित्र को देखकर योजना बनायी जानी चाहिए। सामूहिकता के आदर्श में, अगर हम परिवार को छोड़ेंगे तो योजना बड़ों की होकर रह जाएगी।

‘रचनात्मक कार्यक्रम’ नामक पुस्तक में गांधीजी ‘गाँव की सफाई’ में श्रम और बुद्धि के बीच के अलगाव से प्रारम्भ करते हैं। इस सम्बन्ध में कुमारप्पा कहते हैं कि जिस प्रकार खुराक जिस्म को बढ़ाती है और उसे तन्दुरुस्त रखती है उसी प्रकार कर्म का सच्चा उद्देश्य, मनुष्य की उच्च प्रवृत्तियों का विकास करना है। कर्म, तर्क-शक्ति, कल्पना-शक्ति, साहसपूर्ण कार्य करने की रुचि तथा स्नायु-मंडल की व्यवस्थित क्रियाशीलता में वृद्धि करता है।²⁴ ग्राम-सुधार की योजना में जे.सी. कुमारप्पा सफाई को व्यक्तिगत और सामूहिक आधारों

आधुनिक सुधार के नाम पर व्यक्तिगत सफाई को हमने छोड़ दिया है। नयी आदतों के साथ-साथ पुरानी अच्छी आदतों का भान कराया जाना चाहिए।

पर व्याख्यायित करते हैं, उन्होंने लिखा है कि आधुनिक सुधार के नाम पर व्यक्तिगत सफाई को हमने छोड़ दिया है। नयी आदतों के साथ-साथ पुरानी अच्छी आदतों का भान कराया जाना चाहिए।

गांधी जी के ग्राम पुनर्निर्माण योजना में ग्राम आरोग्य और स्वच्छता का महत्वपूर्ण स्थान है। वे मानते हैं कि जब तक गाँव की सफाई पर ध्यान नहीं दिया जाएगा तब तक वहाँ के लोगों का हृदय कभी स्वच्छ नहीं होगा। जनता का मन गाँवों के धूलों जैसा ही रहेगा, इसलिए ग्रामोद्धार में, ग्राम-सफाई की महता, उतनी ही है जितनी और बातों की है।²⁵ 'रचनात्मक कार्यक्रम उसका रहस्य और स्थान' नामक पुस्तक में श्रम और बुद्धि के बीच के अलगाव को गांधी जी ने रेखांकित किया है।²⁶ इस अलगाव के कारण हम लापरवाह हो गये हैं। यह एक गुनाह है, इस कारण देश में, जहाँ सुन्दर, सुहावने और मनोभावन बस्तियाँ होनी चाहिए, वहाँ आज गाँवों के नाम पर घूरों के ढेर देखने को मिलते हैं। गाँव के बाहर और आस-पास इतनी गन्दगी होती है कि गाँव में प्रवेश करते समय अक्सर आँख मून्द कर और नाक को कपड़े से दबा कर जाना पड़ता है।²⁷ गांधीजी इसका कारण यह मानते हैं कि, हमने राष्ट्रीय सामाजिक सफाई को न जरूरी गुण माना और न ही उसका विकास किया।²⁸ कुएँ, तालाब और नदियों में यहाँ हम स्नान करते हैं, वहीं बर्तन साफ किये जाते हैं, मवेशी पानी पीते हैं, हम मलमूत्र त्याग करते हैं, वहीं पानी पीने और भोजन पकाने के काम में आता है। धार्मिक क्रिया भी की जाती है। यह एक बड़ा दुर्गुण है। हम सफाई की छोटी-छोटी चीजों को बिलकुल नहीं जानते हैं, यही कारण है कि हमारे पवित्र नदियों के पवित्र तटों की लज्जाजनक दुर्दशा और गन्दगी से पैदा होने वाली बीमारियाँ हमें भोगनी पड़ती है।²⁹

गांधीजी ने स्वयंसेवकों से कहा था कि स्वयं सेवक रास्तों और गलियों की जाँच करेगा, जहाँ मलमूत्र दिखेगा उसे साफ करेगा, फावड़े की मदद से उसे टोकरी में भरेगा, पेशाब से गीली मिट्टी को भी टोकरी में भर लेगा और उस स्थान पर दूसरी साफ और सुखी मिट्टी फैलाएगा।³⁰ शिक्षण आने साहित्य नामक नवजीवन की मासिक पत्रिका में 'गाँव या घूरे'? शीर्षक से प्रकाशित लेख में श्री काटिस के द्वारा गाँव के बारे में, 1918 में भारत वर्ष की यात्रा के अनुभवों में लिखा गया था कि

“दूसरे देशों के गाँवों से तुलना करें तो कह सकते हैं कि भारत के गाँव मानों घूरों पर बसी हुई बस्तियाँ हैं।” गांधी इस सख्त टीका में सच्चाई देखते हैं, उन्होंने लिखा है कि गाँव के भीतर घुसने पर हमें बाहर और भीतर के हालत में कुछ खास फर्क नजर नहीं आएगा, वहाँ भी रास्ते में गन्दगी होगी, बालक गलियों और रास्तों में पाखाना-पेशाब करते मिलेंगे, बड़े-बूढ़े भी ऐसा ही करते हैं,³¹ उन्होंने इन पुरानी और बुरी आदतों को भूलने योग्य माना है। उन्होंने मनुस्मृति आदि हिन्दू धर्मशास्त्र, कुरान शरीफ, बाइबल, जरथुष्ट के फरमानों में रास्ते, आँगन, घर, नदी-नाला, कुआँ आदि को खराब न करने सम्बन्धी सूक्ष्म सूचनाओं की चर्चा की है और लिखा है कि आजकल हम उसका अनादर ही करते हैं। हमारे तीर्थ स्थान में भी गन्दगियाँ होती हैं। यहाँ तक कि तीर्थ-स्थान अपेक्षाकृत अधिक गन्दे होते हैं।³² हरिद्वार का उन्होंने वर्णन किया है, वे लिखते हैं तीर्थ-स्थानों के तलाबों का पानी, यात्रियों के हाथों इस तरह-दुर्गति होते मैंने देखी है। उनके अनुसार ऐसे कामों में दया-धर्म का लोप होता और समाज-धर्म के निरादर का पातक लगता है।³³ तीर्थ-स्थान के हवा दूषित होने और पानी के कीटाणु-युक्त होने के कारण बीमारियों के होने को रेखांकित करते हैं और 75% रोग हमारी गन्दगी के कारण फैलते हैं।

ग्राम-सेवकों के कर्तव्य में प्रत्यक्ष उदाहरण द्वारा, सफाई का पदार्थ पाठ सिखाने की सलाह देते हैं स्वयं-सेवकों से उन्होंने कहा कि यह मानना निराधार होगा कि हमारी दो दिन की सेवा से, लोग अपने आप सभी काम करने लगेंगे, शिक्षा के लिए व्याख्यान या पत्रिकाओं से काम नहीं चलता। वे स्वयं-सेवकों की बात नहीं सुनते, अगर सुनते भी हैं तो काम करने का उत्साह नहीं रखते। पत्रिकाएँ बाँटने पर कभी पढ़ते नहीं। दरअसल सच्ची जिज्ञासा के आधार में जो पढ़ना जानता है वह दूसरों को पढ़ाता या पढ़कर नहीं सुनाता। इसलिए स्वयं-सेवक धैर्य से उदाहरण पेश करेंगे।

मैला और कूड़ा-करकट के निस्तारण के सम्बन्ध में कहते हैं कि मैला किसानों के लिए सोना है। उन्होंने लिखा है कि चीनी लोग इस काम में चतुर हैं। वे मलमूत्र का सोने के समान संग्रह करते हैं। स्वयंसेवकों को, किसानों को यह बात समझानी चाहिए। इन्होंने कूड़े का वर्गीकरण दो तरह से किया है- एक का उपयोग

खाद की तरह हो सकता है, दूसरे का गड़ढ़ भरने में। उन्होंने लिखा है कि स्वयंसेवकों के कुछ दिनों के मेहनत के बाद लोग इस काम के कीमत को परखेंगे, जब वे समझेंगे तो खुद भार उठा लेंगे और तब किसी पर बोझ भी नहीं मालूम पड़ेगा।

खुले में सब किसी के देखते हुए पाखाना फिरना या बच्चों को फिरने देना असभ्यता का चिह्न है। इस असभ्यता का भान हमें है क्योंकि जब कोई आता है तो हम सिर नीचे झुका लेते हैं। वे एक गाँव में किसी एक जगह पर कम खर्च में पाखाना बनवाने और इससे बने खाद को किसानों में बाँटने की सलाह देते हैं, जब तक यह नहीं हो जाता तब तक स्वयंसेवक, खेत में मैला को गाड़ा करेंगे। मैले को गहरा नहीं गाड़ा जाय, 9 इंच गहरे भाग में अनेक परोपकारी जन्तु रहते हैं, जो मैले को शुद्ध कर खाद बना देते हैं। सूर्य की किरणें भी राम के दूत की भाँति सेवा करती हैं। मैले को छिछला गाड़ते हुए उस पर इस प्रकार मिट्टी फैलानी चाहिए कि कुत्ते उसे न खोदें और बदबू भी न फैले। कुत्ते से बचने के लिए काँटों के झंखाड़ रखने की भी सलाह देते हैं³⁴। हरी पत्तियों का खाद और मैला पर जन्तुओं की क्रिया एक समान नहीं होती। इस काम के लिए पैसे का कोई खर्च नहीं होता, न तो सरकार की मदद चाहिए, न बहुत ज्यादा विज्ञान की ताकत चाहिए, हाँ स्नेहसिक्त स्वयं सेवक जरूर चाहिए³⁵।

गांधी जी ने गाय, भैंस वगैरह जानवरों के गोबर के भी उपयोग की चर्चा की है। गोबर का उपलों के रूप में प्रयोग को उन्होंने ताँत के लिए भैंस मारने के समान माना है³⁶। गोबर का उपलों के रूप में प्रयोग के लिए हम दलील ढूँढ़ लेते हैं, गोबर का पूरा उपयोग उपले से दस गुना अधिक हो सकता है। उन्होंने कहा है कि अगर हम इससे होने वाली अप्रत्यक्ष हानि का ही हिसाब लगाएँ तो इसकी कीमत आँकना मुश्किल होगा। दरअसल गोबर का पूरा-पूरा सदुपयोग खाद बनाने में ही है, बगैर खाद के खेत, बगैर घी के लड्डू दोनों एक जैसे शुष्क होते हैं।³⁷ 17.11.1929 के नवजीवन में उन्होंने लिखा है कि गोबर जला कर रासायनिक खाद खरीदने वाले मूर्ख किसान भारत में नहीं हैं। किसान यह भी मानते हैं कि रासायनिक खाद की अपेक्षा गोबर के खाद की कीमत कम है। इससे अनाज के सत्व की हानी होती है, कुदरती

खाद वाले खेतों में, पैदा होने वाले फसल पौष्टिकता और मिठास में बढ़कर होंगे। उन्होंने आशंका व्यक्त की है कि सम्पूर्ण शोध के बाद वैसे ही रासायनिक खाद का महत्व आज की अपेक्षा कही कम सिद्ध हो सकता है।³⁸ उन्होंने स्वयंसेवकों से साफ कहा है कि गोबर का खाद के रूप में प्रयोग के सम्बन्ध में जानकारी देना आपका कर्तव्य है। उपलों के सम्बन्ध में भ्रम को दूर किया जाना चाहिए। यह पूरा विषय “जितना रोचक है उतना ही लाभप्रद भी है और औद्योगिक शोधकर्ताओं के लिए तो इसमें ज्ञान का अटूट भंडार पड़ा है।” इसके लिए “द्रव्यन अथवा भारी विद्वता की आवश्यकता नहीं है।” प्रेम की आवश्यकता है।³⁹

गांधी स्वच्छता के साथ आरोग्य को जोड़ते हैं। उनका मानना है कि अधिकांश बीमारियाँ आरोग्य सम्बन्धी नियमों से अनभिज्ञता तथा उसकी अपेक्षा के परिणाम हैं। गांधी के अनुसार आरोग्य का मतलब हैं तन्दुरुस्त शरीर में निर्विकार मन का विकास होना⁴⁰ उन्होंने आरोग्य के लिए कुछ नियम भी बतलाये हैं, कुदरती उपचार का भी वर्णन किया है, वे गरीबी को भी बीमारी का कारण मानते हैं। उनके अनुसार हमारी गिरी हुई दर्दनाक तन्दुरुस्ती का कारण हमारी दरिद्रता है। अगर गरीबी दूर हो सके तो तन्दुरुस्ती अपने आप आ जाएगी।

गांधीजी पानी के पुनर्प्रयोग की भी योजना देते हैं। उन्होंने लिखा है कि मवेशियों को घरों में बाँधने की प्रथा को रोकनी चाहिए। ग्रामीण खुराक, पीने का पानी, रोगों की रोकथाम आदि योजना को भी, विस्तार से समझाते हैं। कुमारप्पा ने उस समय ही लिखा था कि हरिजनों की बस्ती गाँव से अलग न रखी जाय, इसकी खास खबरदारी रखी जाए।

गांधी स्वच्छता के साथ आरोग्य को जोड़ते हैं। उनका मानना है कि अधिकांश बीमारियाँ आरोग्य सम्बन्धी नियमों से अनभिज्ञता तथा उसकी अपेक्षा के परिणाम हैं। गांधी के अनुसार आरोग्य का मतलब हैं तन्दुरुस्त शरीर में निर्विकार मन का विकास होना उन्होंने आरोग्य के लिए कुछ नियम भी बतलाये हैं, कुदरती उपचार का भी वर्णन किया है

गांधीजी स्वयंसेवकों के लिए स्वराज्य की शिक्षा देना अनिवार्य मानते हैं। वे गाँवों को साफ व स्वावलम्बी बनाने की शिक्षा देने की बात कहते हैं। उन्होंने कहा है कि स्वराज्य में सरकार गाँवों को साफ नहीं कराएगी, बल्कि लोग उन्हें अपना समझकर खुद ही साफ करेंगे।⁴¹ उनके स्वराज्य में कम बीमारियाँ होगी, कोई दरिद्र नहीं होगा, परिश्रम करने वाले को काम मिलेगा।

वर्धा से 20 जुलाई 1936 को गंगाबहन को गांधीजी ने लिखा कि दान में कोई बड़ी रकम दें तो भी सफाई के काम में तुम्हें बाहर का पैसा खर्च नहीं करना चाहिए। क्योंकि हम खर्च करें तो लोगों को सीखने को नहीं मिलता। हमें केवल श्रम करके सन्तोष करना चाहिए। उन्होंने कहा कि जब तक लोग स्वयं खर्च नहीं उठाते तब तक काम अधूरा भले पड़ा रह जाये। झाड़ने-बुहारने, पाखाना उठाने और उसे गाड़ने का सब काम हम ही करें। जब तक लोग अपने पैसे से पाखाने नहीं बनवाते और खुले में शौच करते हैं, तबतक उन्हें वैसा करने दें। उनके अनुसार लोगों को सभ्यता सिखायी जा सकती है किन्तु सभ्य रहने के साधन तो खुद उन्हीं को जुटाने चाहिए। उन्होंने आगे लिखा है कि सफाई का काम और आरोग्यावर्धक खुराक का प्रसार ही सच्चा चिकित्सा-शास्त्र है। हमें सुबह भंगी की तरह झाड़ू, फावड़ा, टोकरी आदि लेकर निकल पड़ना चाहिए।⁴²

उन्होंने अपेक्षा की है कि ज्यादातर कांग्रेसी गाँव के बाशिन्दें होने चाहिए, यही कारण था कि 29 जनवरी 1948 को रात को सवा नौ बजे जो उनके जीवन की अन्तिम रात थी, थकान से उनका सिर घूम रहा था, फिर भी वे, “लोकसेवक संघ” के रूप में कांग्रेस के नये विधान की ओर इशारा करते हुए बोले “मुझे तो इसे आज पूरा कर ही देना चाहिए” बापू ने इस अन्तिम वसीयत में लिखा था “देश का बँटवारा होते हुए भी राष्ट्रीय कांग्रेस द्वारा तैयार किये गये साधनों के जरिये हिन्दुस्तान की आजादी मिलने के कारण मौजूदा स्वरूप वाली कांग्रेस का काम अब खत्म हो चुका।” यानि उसकी उपयोगिता अब समाप्त हो चुकी है। गाँव की दृष्टि से, सामाजिक, नैतिक व आर्थिक आजादी हासिल करना अभी बाकी है, सैनिक सत्ता पर नागरिक शक्ति को प्रधानता देने की लड़ाई अनिवार्य है, इसलिए वे कांग्रेस को भंग कर गाँव-गाँव में बिखेर देना चाहते थे।

गांधी यह “अच्छी तरह समझते थे कि सच्ची लोकशाही केन्द्र में बैठे हुए दस-बीस आदमी नहीं चला सकते। यह तो नीचे से हर गाँव के लोगों के द्वारा चलायी जानी चाहिए।” “स्वराज्य से उनका अभिप्राय लोक सम्मति के अनुसार होने वाला भारत वर्ष का शासन है।”⁴³ (यंग इंडिया 29.1.1928) गांधी जी का स्वराज्य वस्तुतः ग्राम राज्य या ग्राम स्वराज्य है जो अधिकाधिक स्वावलम्बी व स्वशासित होगा।

एक ओर गांधी रचनात्मक कार्यक्रम नामक पुस्तक में गाँव की दुर्दशा का वर्णन करते हैं वहीं दूसरी ओर फ्रीडमैन के द्वारा यह कहे जाने पर कि भारतीय गाँव जरा भी आगे बढ़ते नहीं दिखाई देते, गांधी जवाब देते हैं कि ऊपरी तौर पर ऐसा ही प्रतीत होता है लेकिन जब आप उनसे बात करेंगे तो देखेंगे कि उनकी जिहवहा से ज्ञान झर रहा है, उनके अन्दर गहरी आध्यात्मिक वृत्ति है।भारत के ग्रामीणों में तो युगों पुरानी संस्कारिता छिपी हुई पड़ी है।⁴⁴ भारत की सभ्यता को वे ग्रामीण सभ्यता कहते हैं। वे कहते हैं कि ब्रिटेन के विनाशकारी पंजे में जाने के पूर्व यहाँ के सात लाख गाँव आत्मनिर्भर, शान्त और अपेक्षाकृत सुखी थे।

सी.के. नारायणस्वामी को एक पत्र में उन्होंने लिखा था कि दुनिया को अगर कोई मिटने से बचा सकता है तो केवल गाँव और ग्रामीण मानसिकता ही⁴⁵ यहाँ अहिंसा का बीज मौजूद है।⁴⁶ लेकिन क्या इन विचारों को उसी रूप में स्वीकार किया जा सकता है? इस बात से इनकार नहीं किया जा सकता कि जन्मना जाति-व्यवस्था के दृढ़ होते ही गाँव शोषण का गढ़ बन गया। लगभग महिलाओं की आधी आबादी को वंचित बना दिया गया। आर्थिक दृष्टि से गैर बराबरीपूर्ण समाज शोषण और अत्याचार का केन्द्र था। ‘गाँव का विद्रोह’ नामक पुस्तक में आचार्य राममूर्ति (1965) लिखते हैं कि गाँव का ताना, दमन और बाना, शोषण का है। विकास की धारा त्रिवेणी में सूख जाती है। नेता, ठेकेदार और अफसर से मिलकर त्रिवेणी का संगम हुआ है। मालिक-मजदूर और ऊँच-नीच के बीच गाँव झूल रहा है।

कुमारप्पाजी ने लिखा है कि मनुष्य का व्यक्तिगत जीवन तो एक छोटी-सी चीज है, पर उसका जब दूसरों से सम्बन्ध होता है, तब इसको कई मर्यादा लग जाती है। ...उसके आचरण पर दूसरों की भलाई का अंकुश लगा

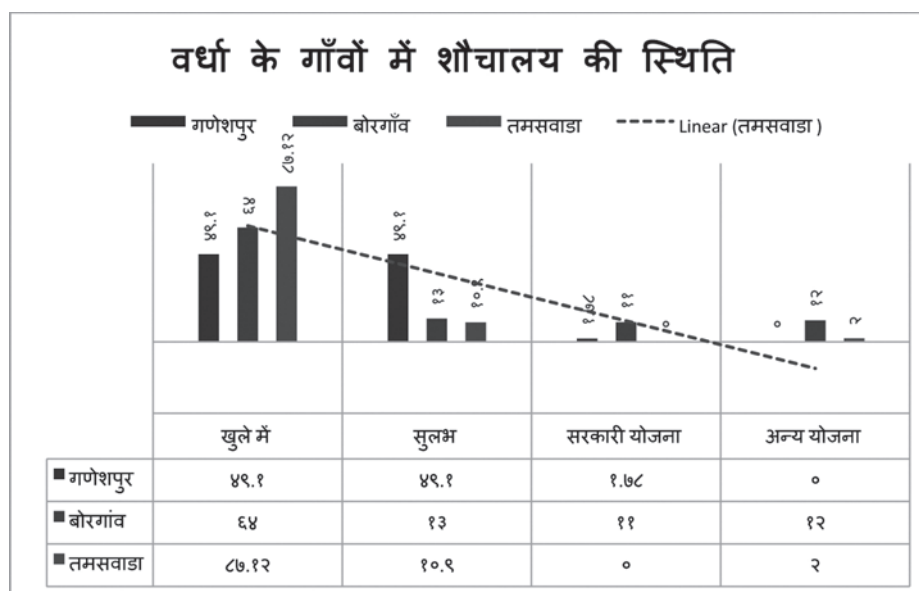
रहता है, इसलिए किसी भी व्यक्ति की आदतों पर उसके स्वास्थ्य और उसकी रहन-सहन पर उसके आसपास के वातावरण की छाप पड़े वगैर नहीं रहती।⁴⁷ इसलिए जब ग्राम संगठित हो जाएँगे तब वे अपनी एक खास संस्कृति का निर्माण करेंगे और ग्रामीण जीवन स्थायित्व की ओर अग्रसर होगा। गांधी रचनात्मक कार्यक्रम, जो लोक सेवक संघ के द्वारा संचालित होना था, के द्वारा सामूहिकता की भावना बढ़ाकर प्रेम और स्नेहपूर्ण समाज का निर्माण करना चाहते थे। उन्होंने एक पत्र में सेवक को लिखा है कि यदि तुम गाँव में जाकर मूक भाव से सेवा करोगे तो वहाँ पहुँचते ही स्वस्थ हो जाओगे। लोग तुम्हारे भाषण का अनुकरण नहीं करेंगे किन्तु तुम्हारे कठोर परिश्रम का अनुकरण अवश्यण करेंगे।⁴⁸

गांधी अपने जीवन काल में ही अहिंसा की स्वीकृति को लेकर परेशान थे। वे हिन्द-स्वराज्य को कांग्रेस का घोषणा पत्र बनाना चाहते थे। उन्हें पता कहाँ था कि वे मात्र प्रतीक बन जाएँगे। दरअसल गांधी स्वराज्य के द्वारा एक समृद्ध भारत का निर्माण करना चाहते थे। उनका विश्वास था कि ऐसी समृद्धि अहिंसा से ही आ सकती है। अहिंसा को उन्होंने सामूहिक प्रयोग का विषय बनाया। अहिंसा न्याय और समानता है। गांधी जी ने यह कभी कल्पना ही नहीं की थी कि भारत गाँव से अलग शहरों में भी रहेगा। भारत में गाँव के साथ शहर भी होंगे लेकिन वह गाँव का शोषण नहीं करेगा, वह उपभोक्ता होगा, उत्पादक नहीं। हमारा देश भी दूसरे

देश का न तो शोषण करेगा न ही शोषण होने देगा। यह आदर्श स्थिति गांधी ने अपने सपनों के भारत में देखा था।

लगभग 68 वर्षों की आजादी और 12 पंचवर्षीय योजनाओं के बाद भारत के गाँवों की स्थिति का मूल्यांकन करने के लिए विदर्भ के तामसवाड़ा और गणेशपुर गाँव का अध्ययन मेरे निर्देशन में कराया गया। हमने देखने की कोशिश की कि 1986 के केन्द्रीय ग्रामीण स्वच्छता कार्यक्रम, 1999 के सम्पूर्ण स्वच्छता अभियान 2012 के निर्मल भारत अभियान के बाद इन गाँवों में स्वच्छता की क्या स्थिति है। 2 अक्टूबर 2014 के स्वच्छ भारत अभियान तथा 11 अक्टूबर 2014 के सांसद आदर्श ग्राम योजना के सामने चुनौतियाँ क्या हैं। महाराष्ट्र में तो जल स्वच्छता अभियान, सन्त गाडगे बाबा स्वच्छता अभियान के साथ तंटा मुक्त गाँव के लिए भी सरकारी प्रयास हुए हैं।

सेलू तहसील अर्न्तगत रिधोर ग्राम पंचायत में तामसवाड़ा में 101 परिवार में 402 लोग रहते हैं। यह गाँव वर्धा से 22 कि.मी. की दूरी पर स्थित है। यहाँ अधिकांश लोग अनु. जाति और अनु. जनजाति के हैं। यह गाँव टोलों में बँटा है। गाँव में पानी की टंकी है जिससे मासिक किराया पर सभी को पेयजल की आपूर्ति कराई जाती है। 101 परिवार के इस गाँव में अधिकांश लोग गरीब एवं निर्धन हैं। दो-चार लोग सरकारी एवं गैर-सरकारी सेवा में हैं। 402 संख्या वाले इस गाँव में



211 पुरुष तथा 191 महिलाएँ हैं। इस प्रकार लिंगानुपात 905 है जब कि महाराष्ट्र में 929 और विदर्भ में 946 है। 112 परिवार वाले गणेशपुर गाँव में 488 लोगों में 260 पुरुष तथा 228 महिलाएँ हैं। इस प्रकार इस गाँव में लिंगानुपात 876 है। गणेशपुर में अधिकांश ओबीसी परिवार हैं।

साक्षरता की दृष्टि से तामसवाड़ा में 57 प्रतिशत लोग निरक्षर हैं। मात्र 22 व्यक्ति स्नातक हैं। 150 व्यक्ति मैट्रिक या उसके नीचे हैं। इस गाँव में 306 व्यक्ति मजदूर हैं। 79 किसान तथा 15 व्यक्ति नौकरी या व्यवसाय करते हैं। 95 परिवारों को मनरेगा से मजदूरी नहीं मिलती। 87 परिवारों का बैंक में खाता है। फिर भी 88 परिवार खुले में शौच जाते हैं। सफाई के प्रति जागरूकता का आभाव है। गाँव गन्दगी के ढेर पर ही है। 12 परिवारों को छोड़ कर सभी के घर पर बिजली की सुविधा है। 41 परिवार भूमिहीन हैं।

गणेशपुर की आर्थिक स्थिति तुलनात्मक दृष्टि से अच्छी है, साक्षरता का प्रतिशत 79 है। 182 महिला पुरुष खेती करते हैं। 141 लोग मजदूरी 10 पुरुष और 1 महिला नौकरी में तथा 14 पुरुष और 1 महिला व्यवसाय करते हैं। 50 पुरुष और 42 लड़कियाँ अध्ययनरत हैं। लगभग 90 प्रतिशत लोगों के पास आधार कार्ड और बैंक खाता है। इस गाँव में 12 झोपड़ी, 14 कच्चे मकान, 34 पक्के मकान और 44 कच्चे-पक्के मकान में लोग रहते हैं। 8 परिवारों को इंदिरा आवास का लाभ भी मिला है। बावजूद इसके 112 परिवारों में 55 परिवार खुले में शौच जाते हैं। 2 परिवारों को शौचालय बनाने के लिए सरकारी सहायता मिली है, 55 परिवारों के पास सुलभ सेप्टिक शौचालय है। गणेशपुर के 106 परिवारों के घरों में बिजली, 43 मोटर सायकिल, 75 टेलीविजन, 90 मोबाइल और 18 फ्रिज है।

36 परिवारों ने लगभग 23 लाख रुपये ऋण लिया हैं। ऋण लेने वाले परिवारों में 6 अनुसूचित जाति और 2 जनजाति परिवार हैं।

आदर्श रूप में सामुदायिकता पर आधारित महाराष्ट्र के ही एक प्रयोग मेंढा-लेखा का उदाहरण दिया जा सकता है।⁴⁹

हमारे गाँव में 'हम ही सरकार' का नारा दिया है मेंढा-लेखा गाँव के आदिवासियों ने। महाराष्ट्र के गढ़चिरोली जिले से लगभग 30 किलोमीटर दूर बसा आदिवासियों का यह

गाँव है। यह वन पर सामुदायिक अधिकार हासिल करने वाला देश का पहला गाँव है। आज 100 परिवार वाले इस गाँव की प्रति वर्ष आमदनी लगभग एक करोड़ रुपये है। यह आय सामुदायिक वन अधिकार कानून-2006 से प्राप्त लगभग 1900 हेक्टेयर वन से प्राप्त हो रही है। वर्ष 2013-14 में इन्होंने दस लाख रुपये से ज्यादा आयकर का भुगतान किया है। एक आदर्श गाँव की विशेषता को मेंढा-लेखा में देखा जा सकता है।

मेंढा गाँव की विशेषताएँ

सशक्त ग्राम सभा

यहाँ फैसले लेने, नियम बनाने और उसके क्रियान्वयन की पूरी प्रक्रिया सामूहिक तौर पर पूरे गाँव द्वारा सम्पन्न की जाती है। जिसमें महिलाओं और पुरुषों की समान भागीदारी होती है। किसी भी पुरुष या महिला का चुनाव तीन वर्षों के लिए किया जाता है जो कि गाँव वालों की सहमति से लिये गये फैसलों को क्रियान्वित करने का काम करता है। ग्रामसभा के पास ग्राम विकास से लेकर अन्य गाँव से सम्बन्धी सभी दस्तावेजों एवं अन्य प्रारूपों का समुचित लेखा-जोखा रहता है। ग्रामसभा में किसी भी बात के निपटारे या निर्णय लेने में विपक्ष की भूमिका भी महत्वपूर्ण होती है।

सामुदायिक भूस्वामित्व/ग्रामदान

पूरी ग्राम-सभा में किसी भी व्यक्ति के पास अपनी निजी जमीन नहीं है। इसके पीछे इनका मूल उद्देश्य यह है कि पूरी ग्राम-सभा एक परिवार बन सके। ग्राम-सभा के सामूहिक मालिकाने से अब कोई भी एक व्यक्ति किसी जमीन को बेच नहीं सकता। जमीन सम्बन्धी सारे फैसले अब ग्रामसभा में सामूहिक चर्चा से तय किए जाते हैं। यह अपने आप में एक ऐतिहासिक फैसला है और अपने संसाधनों को बचाने के लिए संघर्ष कर रहे लोगों के लिए एक मिसाल भी।

संपूर्ण सामुदायिक रोजगार

इस गाँव में सभी व्यक्तियों को साल भर सौ फीसदी रोजगार की पूरी व्यवस्था की है। स्त्री हो या पुरुष सभी को पूरे वर्ष काम उपलब्ध कराने का दायित्व ग्रामसभा पर है। ये खुद ही जंगल की निगरानी भी करते हैं। यह काम भी पूरे साल में बारी-बारी से कुछ दिनों के लिए सभी को करना पड़ता है और इसमें

महिलाएँ भी शामिल होती हैं। इसके लिए निश्चित मजदूरी दी जाती है। यहाँ बाँस से सामान बनाने वाली मशीनें भी लगायी गयी हैं। जो लोग प्रशिक्षित हो चुके हैं, वे यहाँ काम करते हैं और दूसरे लोगों को प्रशिक्षित भी करते हैं। यहाँ शहद निकालने के लिए भी एक केंद्र बनाया गया है। गाँव के लोग जंगलों में जाकर शहद निकालने का काम करते हैं जिसके लिए उन्हें ग्राम-सभा द्वारा निर्धारित मूल्य मिलता है और इसकी बिक्री का काम ग्राम-सभा करती है।

स्त्री पुरुष की समान भागीदारी

ग्राम-सभा में सक्रिय सहभागिता से लेकर सभी तरह के कामों में गाँव के स्त्री-पुरुषों की समान भागीदारी रहती है।

शराब-उत्पादन पर पूर्ण पाबंदी

मेंढा-लेखा में शराब उत्पादन पर पूर्ण रूप से रोक लगायी गयी है। यहाँ कोई भी शराब नहीं बनाता चाहे वह व्यक्तिगत उपयोग के लिए हो या सामूहिक। शराबबन्दी की यह व्यापक पहल तीन दशक पहले महिलाओं के द्वारा की गयी है। 1984 में ही यहाँ शराबबन्दी शुरू हो गयी थी और तब से कोई भी व्यक्ति यहाँ शराब नहीं बनाता।

शिक्षा, स्वास्थ्य, आवास एवं परिवार नियोजन पर पूर्ण जागरूकता

मेंढा-लेखा में नयी पीढ़ी के सभी लोग शिक्षित और साक्षर हैं। सभी बच्चे स्कूल जाते हैं जो ग्राम-सभा भवन के पास ही स्थित है। वैसे देवाजी तोफा इस शिक्षा-प्रणाली से सन्तुष्ट नहीं हैं। उनका मानना है कि यह शिक्षा-व्यवस्था हमारे बच्चों को परिवारों से अलग करती है। स्वास्थ्य और आवास को लेकर भी उनके पास भविष्य की अनेक योजनाएँ हैं।

आय-व्यय की पारदर्शी और टिकाऊ व्यवस्था

पूरी ग्राम-पंचायत में आय-व्यय का भुगतान बैंक के माध्यम से ही किया जाता है। सभी व्यक्तियों के अपने निजी खाते हैं और किसी भी तरह का भुगतान इन खातों के जरिए ही होता है जिसका पूरा ब्यौरा ग्राम-पंचायत के दस्तावेजों में कभी भी देखा जा सकता है। भ्रष्टाचार की तमाम गुंजाइशों पर विराम लगाते हुए बिना बैंक खातों के किसी भी तरह के पैसे का लेन-देन नहीं किया जाता। यदि किसी योजना का भी पैसा आता है तो वह

भी ग्राम-सभा के खाते में ही आता है और फिर उसका भुगतान किया जाता है। कौन-सा पैसा किस मद में खर्च किया गया है, इसका पूरा ब्यौरा सम्पूर्ण पारदर्शिता के साथ ग्राम-सभा के पास देखा जा सकता है।

वन संरक्षण की वैज्ञानिक दृष्टि

ग्राम-सभा द्वारा वन संरक्षण के लिए भी नियमावली बनायी गयी है। इसमें पेड़ों की गिनती, उनकी आयु, मोटाई एवं लम्बाई के साथ ही उसकी उपयोगिता से सम्बन्धित सारे ब्योरे सुरक्षित हैं। अगर कोई एक पेड़ काटा जाना है तो उसकी जगह पर दूसरा लगा दिया जाता है। जंगल में किस-किस तरह की घास पायी जाती है और कौन-सी किस तरह के काम में आती है, इसका भी पूरा ब्यौरा रखा गया है। अमूमन किस पेड़ की आयु कितने वर्ष की होती है, यह भी उन्हें पता है और इसीलिए किसी पेड़ के सूखने के साथ ही उसकी जगह नया पेड़ लगा दिया जाता है। जंगल में पाये जाने वाले औषधीय पौधों के विस्तृत ब्योरे भी उनके पास हैं। गाँव में पशुओं के लिए अलग से चारागाह भी बनाया गया है।

परम्परा के प्रति तार्किक दृष्टिकोण

आधुनिकता के प्रति अपने सकारात्मक दृष्टिकोण के साथ ही अपनी परम्परा को लेकर भी यहाँ के लोग काफी सचेत हैं और इसे बचाने-संभालने की उनकी कोशिशें जारी हैं। यहाँ किसी पेड़ को काटने से पहले उसकी पूजा करने का नियम है। इसके पीछे उनके तर्क हैं कि चूँकि पेड़ ही हमारा जीवन है, इसलिए काटने के पहले उसकी पूजा करना उसकी महत्ता और जीवन के प्रति हमारे द्वारा सम्मान एवं आभार प्रदर्शन करने का ही एक तरीका है।

इस गाँव का अध्ययन महात्मा गांधी अन्तरराष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय अन्तर्गत महात्मा गांधी फ्यूजी गुरुजी शान्ति अध्ययन केन्द्र के शोधार्थियों द्वारा मेरे निर्देशन में इस उद्देश्य से कराया गया ताकि हम आदर्श का निरूपण कर सकें और चुनौतियों को समझकर प्रयोग से गाँव में एम.एस. डब्ल्यू के शोधार्थियों एवं विद्यार्थियों को प्रत्यक्ष लाभ दिला सकें।

(विस्तृत प्रतिवेदन http://mgfgcps-blogspot.in/k2015_01_01_archive.html पर देखा जा सकता है।)

सन्दर्भ :

- 1 Laray, George "Revolution : Violent or non-violent, Gandhi Marg (English), 15, 1 January, PP,6-25 P.7
- 2 Society cannot Charge in bits, there has to be a mars revolution a mass movement and massive change, Harayan Jay Prakash, "Gandhi and Social Revolution" Gandhi marg 13.4 (4.1969) 814, (Jan.1970) PP,5-15 P-7
- 3 सम्पूर्ण गांधी वाङ्मय खण्ड 90 पृ. 519
- 4 सम्पूर्ण गांधी वाङ्मय खण्ड 90 पृ. 518
- 5 धावन गोपीनाथ, सर्वोदय तत्त्व दर्शन अहमदाबाद : नवजीवन मन्दिर 1963, द्वितीय पृ. 210
- 6 "Iar civil disobedience it means the constructive programmer Marauamshriman. The Selected works of mahatma. Ahmadabad : Navajivan press 1968 vol. IV P.336
- 7 Sitarammaiyya, B.P., Gandhi and Gandhism, Allahabad Kitabistan 1952, Vol. I.P.170
- 8 कालेलकर काका, शान्ति सेना और विश्व शान्ति, वाराणसी : सर्वसेवा संघ, 1966, पृ. 91
- 9 हरिजन, 25.8.1940 देखिए सिंह, डॉ. रामजी, गांधी दर्शन मीमांसा
- 10 सम्पूर्ण गांधी वाङ्मय खण्ड 75 पृ. 151 वर्ष 1982
- 11 शान्ति सेना क्या है? राजघाट वाराणसी : सर्व सेवा संघ 1964 पृ. 13
- 12 उपरिवत्
- 13 भावे विनोबा, लोकनीति, राजघाट वाराणसी : सर्व सेवा संघ 1971 पृ. 81
- 14 सम्पूर्ण गांधी वाङ्मय, खण्ड 47 वर्ष 1972 पृ.104
- 15 "Whether we are doing our work as Gandhi an, Constructive Workers, or as other Social workers, we are all Voluntary Workers. But we are leaving to the politicians, to the State and to the Governrent the main ask that we go wrong" Gandhi marg, 13, 4 october 814 (January 1970) P. 8
- 16 चौधरी, चारू, विनोबा की पाकिस्तान यात्रा, राजघाट वाराणसी : सर्व सेवा संघ 1963, पृ.138
- 17 उपरिवत् पृ. 138
- 18 देव शंकरराव, गांधी और लोक स्वराज्य, राजघाट, वाराणसी : सर्व सेवा संघ, जनवरी 83 पृ.72
- 19 कालेलकर काका, शान्ति सेना और विश्व शान्ति, वाराणसी : सर्वसेवा संघ, 1966, पृ. 87
- 20 आचार्य राममूर्ति, गाँव का विद्रोह वाराणसी, सर्वसेवा, संघ 1965 पृ. 13
- 21 उपरीवत् पृ. 23
- 22 उपरीवत् पृ. 31
- 23 उपरीवत् पृ. 169
- 24 कुमारप्पा, जीवन व्यक्तित्व और विचार पृ.-222
- 25 सम्पूर्ण गांधी वाङ्मय खंड 81 पृ.246
- 26 त्रिवेदी काशीनाथ अनुवादक, अहमदाबाद नवजीवन प्रकाशन मन्दिर तृतीय, 1959 पृ. 27
- 27 रचनात्मक कार्यक्रम पृ. 27/वाङ्मय 75, पृ.169)
- 28 रचनात्मक कार्यक्रम पृ. 27
- 29 रचनात्मक कार्यक्रम पृ. 28
- 30 वाङ्मय खंड 41 पृ. 491
- 31 वा. 41 पृ. 490, नवजीवन 22.09.1929
- 32 वा. 41 पृ. 490
- 33 वा. 41/पृ. 490
- 34 वा. 91 पृ. 493
- 35 वही पृ. 493
- 36 वा. 92 पृ. 181
- 37 (वा. 92 पृ. 181)
- 38 वा. 92 पृ. 181
- 39 नवजीवन 17.11.1929 वा. 42 पृ. 182
- 40 गांधी जी, आरोग्य की कुंजी 1958 पृ. 1
- 41 हरिजन सेवक 18.3.1939
- 42 वाङ्मय वही 48
- 43 यंग इंडिया 29.1.1928
- 44 1 जनवरी 1939 के आसपास फ़िडमैन से बात-चीत में (वा. खंड 68 पृ. 293)
- 45 खंड 82 पृ. 225
- 46 खंड 71 पृ. 112
- 47 कुमारप्पा : जीवन, व्यक्तित्व और विचार पृ. 174
- 48 डॉ. भाई म. पटेल को 31 अक्टूबर 1935 के पत्र से वा. 62/85
- 49 http://èkèkmgfgcps.blogspot.inèk2015_01_01_archive.html

संपर्क- डीन, स्कूल आफ क्रिएटिविटी, एम.जी.ए. हिन्दी विश्वविद्यालय, वर्धा, महाराष्ट्र
ईमेल : mgfgcps@gmail-com

गांधी के सपनों का स्वच्छ एवं समर्थ भारत

डॉ. निशा राय

सच्चे महापुरुषों को स्वार्थ के कीटाणु कभी रुग्ण नहीं बनाते। उनका चित्त दिन-रात दूसरों के कल्याण में रहा करता है, जैसा कि महाकवि बाणभट्ट ने लिखा है - *लोकविधेयानि हि भवन्ति चेतांसि महताम्*। विघ्नों के विन्ध्याचल भी उनके मार्ग में अवरोध उत्पन्न नहीं कर सकते, वे आपत्तियों के अर्णव को भी अगत्य की तरह चुल्लुओं में पी जाते हैं।

महात्मा गांधी मानवमात्र के हित-चिन्तक थे। उनके आदर्शपुरुष थे- राम और उनका आदर्श राज्य था- रामराज्य। उन्होंने स्वच्छ और समर्थ भारत का सपना देखा था। भारत देश नहीं समस्त देशों का प्राण है। यह मूल रूप में कर्मभूमि है, भोगभूमि नहीं। भारत का ध्येय दूसरे देशों के ध्येय से कुछ अलग है। भारत में ऐसी योग्यता है कि वह अध्यात्म के क्षेत्र में दुनिया प्रथमदर्शक हो सकता है। स्वच्छता से हमारा तात्पर्य बाह्य एवं अन्तःस्वच्छता से है। जबतक हमारा अन्तःकरण स्वच्छ नहीं होगा तबतक बाह्य स्वच्छता एक दिखावा भर हो सकता है।

स्वस्थ एवं समर्थ दोनों अन्योन्याश्रित हैं। जबतक हम अभ्यन्तर और बाह्य रूप से स्वच्छ नहीं होंगे तब तक समर्थ होना सम्भव नहीं है। स्वच्छता चाहिए- पहले आन्तरिक उपरान्त बाह्य। जब हम आन्तरिक रूप से स्वच्छ होते हैं अर्थात् 'अध्यात्मिक' रूप से तब हमें बाह्य रूप से अर्थात् भौतिक रूप से भी सर्वत्र स्वच्छ ही स्वच्छ दिखाई पड़ने लगता है- जैसी दृष्टि वैसी सृष्टि। गांधी जी ने आजीवन इसी को साधने में अपना पूरा समय लगाया था।

उनके जीवन में शुरू से अन्त तक समस्याओं का अम्बार था, पर इस गुण के कारण कभी विचलित नहीं हुए। वे निरन्तर कार्य करते रहते थे 'तन काम में और मन राम में' रमा रहना चाहिए। कुछ भी करने से पहले प्रार्थना और ध्यान पर विशेष जोर देते थे जो भारतवर्ष का जन्मजात स्वभाव है। अपने ही नहीं वरन पूरी सभा को 'रघुपतिराघव राजा राम' का भजन कराते थे- जो रामराज्य अवतरित करने का महामन्त्र माना जाता है। जब हम इस भाव से बाह्य जगत में योगदान करेंगे तभी हम पूर्णरूप से स्वच्छ एवं समर्थ बन पाएँगे। 'समर्थ' वही व्यक्ति होता है जो स्वच्छ और शान्त हो। पूर्ण शान्त भाव से कोई भी कार्य हमें समर्थता का वरदान प्राप्त कराता है। यह पाठ गांधी जी ने हमें अपना पूरा जीवन आहूत कर राष्ट्र के सामने एक दृष्टान्त के रूप में प्रस्तुत किया। जिसे अपना कर एवं आदर्श मानकर चला जाए तो वह दिन दूर

स्वस्थ एवं समर्थ दोनों अन्योन्याश्रित हैं। जबतक हम अभ्यन्तर और बाह्य रूप से स्वच्छ नहीं होंगे तबतक समर्थ होना सम्भव नहीं है। स्वच्छता चाहिए- पहले आन्तरिक उपरान्त बाह्य। जब हम आन्तरिक रूप से स्वच्छ होते हैं अर्थात् 'अध्यात्मिक' रूप से तब हमें बाह्य रूप से अर्थात् भौतिक रूप से भी सर्वत्र स्वच्छ ही स्वच्छ दिखाई पड़ने लगता है।

नहीं कि भारत पूरे विश्व में एक सामर्थ्यवान राष्ट्र के रूप में उभरेगा जो इस धरा के मानवमात्र को जागृत करेगा। गांधीजी ने कहा था- “भारत गाँवों का देश है किन्तु श्रम एवं बुद्धि के बीच अलगाव के कारण हम अपने गाँवों के प्रति लापरवाह होते जा रहे हैं। नतीजा यह हुआ कि देश में जगह-जगह सुहावने और मनभावने छोटे-छोटे गाँवों के बदले हमें घूरे जैसे गन्दे गाँव देखने को मिलते हैं। हमने राष्ट्रीय या सामाजिक सफाई को न तो जरूरी

भारत का भविष्य पश्चिम के उस रक्त रंजित मार्ग पर नहीं है, जिस पर चलते-चलते वह स्वयं थक गया है उसका भविष्य को सरल आध्यात्मिक जीवन द्वारा प्राप्त शान्ति के अहिंसक रास्ते पर चलने में ही है। भारत के समक्ष अपनी आत्मा को खोने का खतरा उपस्थित है और यह सम्भव नहीं है कि अपनी आत्मा को खोकर भी वह जीवित रह सके।

गुण माना और न ही उसका विकास किया। हम ढंग से नहा भर लेते हैं, मगर जिस नदी, तालाब या कुएँ के किनारे हम श्राद्ध या वैसी ही दूसरी कोई धार्मिक क्रिया करते हैं और जिन जलाशयों में पवित्र होने के विचार से हम नहाते हैं उनके पानी को गन्दा करने में हमें कोई हिचक नहीं होती। फलतः हमारे गाँवों की और हमारी पवित्र नदियों के पवित्र तटों की लज्जाजनक

दुदर्शा और गन्दगी से पैदा होने वाली बीमारियाँ हमें भोगनी पड़ती हैं।”

“गाँवों में करने के कार्य ये हैं कि जहाँ-जहाँ कूड़े-करकट तथा गोबर के ढेर हो, वहाँ से उनको हटाया जाए तथा जलाशयों की सफाई की जाय। गलियों से कूड़ा-करकट हटा कर स्वच्छ बना लेना चाहिए तथा कूड़े का वर्गीकरण कर उसमें से कुछ का खाद बनाया जा सकता है तथा हड्डी आदि से बहुत-सी उपयोगी चीजें बनाई जा सकती हैं। इस प्रकार का कार्य शिक्षाप्रद होने के साथ ही साथ अलौकिक रूप से आनन्ददायक भी है इसमें भारतवर्ष के सन्ताप पीड़ित जन समाज का अनिर्वचनीय कल्याण भर समाया हुआ है। हमें झाड़ू और फावड़े को भी उतने ही गर्व के साथ हाथ में लेना चाहिए जितना कलम और पेंसिल लेते हैं।” शहरों की स्वच्छता के सम्बन्ध में उन्होंने पश्चिम का उदाहरण दिया था।-

“पश्चिम से हम एक चीज जरूर सीख सकते हैं- वह है शहरों की सफाई का शास्त्र। पश्चिम के लोगों ने सामुदायिक आरोग्य और सफाई का एक शास्त्र ही तैयार कर लिया है, जिससे हमें बहुत कुछ सीखना है। भगवान के प्रेम के बाद महत्व की दृष्टि से दूसरा स्थान स्वच्छता के प्रेम का ही है। जिस तरह हमारा मन मलिन हो तो हम भगवान का प्रेम सम्पादित नहीं कर सकते, उसी तरह हमारा शरीर मलिन हो तो भी हम उसका आशीर्वाद नहीं पा सकते। और देश अस्वच्छ हो तो शरीर स्वच्छ रहना सम्भव नहीं है और अगर देश स्वच्छ नहीं रहेगा तो आरोग्य की कल्पना भी नहीं कर सकते हैं।”

गांधी जी ने समर्थ भारत का सपना साकार करने के लिए ‘पूर्ण स्वावलम्बन’ का बीड़ा उठाया था, जिसे घर-घर में चरखा, हस्तकला अपने स्वभाव के अनुसार रोजगार ‘खादीग्राम उद्योग’ के माध्यम से एक क्रांति के रूप में आन्दोलन चलाया गया था। जिससे अनेकों ग्रामवासी अपना जीवनयापन आनन्द से चला रहे थे। उनका कहना है- ‘मैं जितनी बार चरखे पर सूत निकालता हूँ उतनी ही बार भारत के गरीबों का विचार करता हूँ। भूख की पीड़ा से व्यथित और पेट भरने के सिवा और कोई इच्छा न रखने वाले मनुष्य के लिए उसका पेट ही ईश्वर है।’ चरखा देहात की खेती का पूर्ति करता था और उसे गौरव प्रदान करता था। वह विधवाओं का मित्र और सहारा था और वह लोगों को आलस्य से बचाता था। उनका कहना था ‘ग्रामोद्योग का यदि लोप हो गया तो भारत के सात लाख गाँवों का सर्वनाश ही समझिए।’ खादी हिन्दुस्तान की समस्त जनता की एकता की, उसकी आर्थिक स्वतंत्रता और समानता की प्रतीक है। यह ‘हिन्दुस्तान की आजादी की पोशाक’ है। किन्तु आज तरह-तरह के ब्रांडेड कपड़े बहुतायत से उपयोग में आने लगे हैं। यन्त्रों से काम लेना उसी अवस्था में अच्छा है, जब कि किसी निर्धारित काम को पूरा करने के लिए आदमी बहुत ही कम हो पर यह हिन्दुस्तान में तो है नहीं। यहाँ काम के लिए जितने आदमी चाहिए, उनसे कहीं अधिक बेकार पड़े हुए हैं। इसलिए उद्योगों के यन्त्रीकरण से यहाँ की बेकारी बढ़ रही है। लघु उद्योग और कुटीर उद्योग प्रायः समाप्त होते जा रहे हैं। उद्योग के नाश के फलस्वरूप गुलामी और गरीबी आयी। और उस अनुपम कला-प्रतिभा का लोप हो गया, जो किसी समय चमत्कार-पूर्ण भारतीय वस्त्रों में दिखाई देती थी और जो दुनिया

की इर्ष्या का विषय बन गयी थी, उस प्राचीन उद्योग को पुनर्जीवित करने के प्रयत्न को क्या स्वप्नसेवियों का आदर्श कहा जा सकता है?

गांधी जी के सपनों का समर्थ भारत आज कहीं दूर जाता दिखाई पड़ रहा है। यह सभ्यता अच्छी हो या बुरी, भारत का पश्चिम जैसा उद्योगीकरण करने की क्या जरूरत है? पश्चिमी सभ्यता शहरी सभ्यता है। इंग्लैंड और इटली जैसे छोटे देश अपनी व्यवस्थाओं का शहरीकरण कर सकते हैं। अमेरिका बड़ा देश है, किन्तु उसकी आबादी बहुत विरल है। इसलिए उसे भी शायद वैसा ही करना पड़ेगा। लेकिन भारत जैसे बड़े देश को, जिसकी आबादी बहुत ज्यादा बड़ी है और ग्राम-जीवन की ऐसी पुरानी परम्परा में पोषित हुई है जो उसकी आवश्यकताओं को बराबर पूरा करती आयी है, पश्चिमी नमूने की नकल करने की कोई जरूरत नहीं है और न ऐसी नकल करनी चाहिए। यह जरूरी नहीं है कि एक के लिए जो अच्छी हो दूसरों के लिए भी हो। जो चीज एक आदमी के लिए पोषक आहार का काम करती हो, वही दूसरे के लिए जहर जैसी चीज होती है। किसी देश की संस्कृति को निर्धारित करने में उसके प्राकृतिक भूगोल का प्रमुख हिस्सा होता है। ध्रुव-प्रदेश के निवासी के लिए ऊनी कोट बहुत जरूरी हो सकता है, लेकिन दूसरे जगह के निवासियों का तो उसमें दम ही घुट जाएगा।

बड़े पैमाने पर औद्योगीकरण का अनिवार्य परिणाम हो रहा है कि ज्यों-ज्यों प्रतिस्पर्धा और बाजार की समस्याएँ खड़ी हो रही हैं त्यों-त्यों गाँव का प्रकट या अप्रकट शोषण हो रहा है। औद्योगीकरण हर हालत में किसी भी देश के लिए जरूरी ही हो ऐसा नहीं है। मेरा मानना है कि स्वतन्त्र भारत दुःख से कराहती हुई दुनिया के प्रति अपने कर्तव्य का ऋण अपने गाँवों का विकास करके और दुनिया के साथ मित्रता का व्यवहार करके और सादा जीवन, उच्च चिन्तन और उदात्त व्यवहार अपनाकर ही चुकाया सकता है। लक्ष्मी की पूजा में हमने अपने ऊपर भौतिक समृद्धि के जिस जटिल और शीघ्रगामी जीवन को लाद दिया है, उसके साथ 'उच्च चिन्तन' मेल नहीं खाता है। जीवन का सम्पूर्ण सौन्दर्य भौतिक भोग-विलास में सिमट कर रह गया है। भारत का भविष्य पश्चिम के उस रक्त रंजित मार्ग पर नहीं है, जिस पर चलते-चलते वह स्वयं थक गया है उसका

भविष्य को सरल आध्यात्मिक जीवन द्वारा प्राप्त शान्ति के अहिंसक रास्ते पर चलने में ही है। भारत के समक्ष अपनी आत्मा को खोने का खतरा उपस्थित है और यह सम्भव नहीं है कि अपनी आत्मा को खोकर भी वह जीवित रह सके। भारत के लिए इस सुनहले मायामृग के पीछे दौड़ने का अर्थ आत्मनाश के सिवा और कुछ नहीं है।

नदियों का प्रदूषण स्वच्छ भारत के लिए एक बड़ी चुनौती बन कर सामने खड़ी है और सबसे बड़ी चुनौती जो आज स्वतन्त्र भारत के समक्ष एक विकराल रूप धारण किये हुए है वह है- चरित्र की दृढ़ता की कमी। सामाजिक चेतना की आचारगत नैतिक अभिव्यक्ति ही चरित्र है। लोकसंग्रह की भावना से च्युत होने पर इसका अस्तित्व सन्देहास्पद हो जाता है। जो इसे जीवन में चरितार्थ करता है वह पुरुष है, महापुरुष है, महात्मा है। यह वैयक्तिक नहीं है, सामूहिक निधि है क्योंकि, यह लोक-जीवन की आशा, आकांक्षा, स्वप्न और आदर्श को अपनी क्रिया द्वारा सम्प्रकाशित करता है। ईशावास्योपनिषद् का वह मन्त्र आज कहाँ खो गया है *येनत्यक्तेन भुज्जीया* । भोगवाद अपनी पराकाष्ठा पर है। ऐसी परिस्थिति में महात्मा का वह आदर्श राम जिसे आदिकवि के शब्दों में-

कोन्वस्मिन् साम्प्रत लोके गुणवान् कश्च वीर्यवान् ।

धर्मज्ञश्च कृतज्ञश्च सत्यवाक्यो दृढव्रतः ॥

अर्थात् इस समय इस संसार में गुणवान्, वीर्यवान्, धर्मज्ञ, उपकार मानने वाला, सत्यवक्ता और दृढव्रतिज्ञ कौन है? मानव के सम्पूर्ण सद्गुणों को एक चरित्र में राशिभूत देखने की यह लोकपावन अभिलाषा कितनी महान है। गुणों का क्रिया में आचरित होना चरित्र है। इस चरित्र से विषाद का शमन और सुख का सम्पादन होता है। शारीरिक और मानसिक योग क्षेम राष्ट्र का दायित्व है। अपने उज्ज्वल चरित्र द्वारा समाज को सत्यपथ पर चलने के लिए अनुप्रेरित करना- यह महात्मा की अवधारणा थी। एक दूसरे के हित चिन्तन में निरत रहना, सत्यधर्म का पालन करना, यह आदर्श गांधी के जीवन से उपस्थित होता है। राष्ट्र का सामान्य सुख, लोकहित का सम्पादन एवं मंगलकामना यह चुनौती है।

संपर्क- प्रधानाचार्य, एम.ए.एम. कॉलेज, नवगछिया, ति.मां. भागलपुर विश्वविद्यालय, भागलपुर, बिहार

स्वच्छता का अभिप्राय

जोहरा फातिमा

हज़ारों साल नर्गिस अपनी बेनूरी पे रोती है।

बड़ी मुश्किल से होता है चमन में दीदावर पैदा।।

महानायक दुनिया में मुद्दतों बाद आते हैं। कभी सदियों में आ जाएँ तो आ जाएँ, फिर लोग उसे उसकी जिन्दगी से पहचानते हैं। पहले वह अपने जीवन से एक आदर्श स्थापित करता है और फिर लोगों से कहता है कि उसकी पैरवी करें। ऐसे ही लोकप्रिय नायकों में गांधीजी का नाम सर्वोपरि है।

महात्मा गांधी के महान आदर्श, चुम्बकीय व्यक्तित्व, उत्साह, दृढ़ता, साहस, उच्च चेतना, ईमानदारी, वफादारी, बन्धुत्व, गम्भीरता, सदाशयता एवं प्रेमभाव के कारण प्रत्येक साहित्यकार तथा फ़नकार का ध्यान उनकी ओर आवश्यक जाता है और उसे चिन्तन-मनन करने पर मजबूर करता है। यही वजह है कि देश-विदेश में महात्मा गांधी पर इतना कुछ लिखा-पढ़ा गया है कि शायद ही उनके जीवन का कोई क्षेत्र बाकी बचा हो। वह वस्तुतः एक सागर हैं, जिसे गागर में भरना असम्भव है।

गांधीजी दुनिया के वह महान इन्सान हैं जो कि किसी विशेष देश, किसी विशेष राष्ट्र, किसी विशेष नस्ल, किसी विशेष वर्ग और किसी विशेष समुदाय के हित के लिए नहीं हैं; बल्कि समस्त विश्व के हित के बारे में सोचते हैं। उनका सम्बन्ध किसी विशेष देशकाल से नहीं बल्कि पूरे संसार के इन्सानों से है। वह किसी एक काल के लिए नहीं बल्कि प्रत्येक काल के लिए शीर्षस्थ और अनुकरणीय हैं।

महान वैज्ञानिक अल्बर्ट आइंस्टीन ने गांधीजी के बारे में 1944 में लिखा था- “आने वाली नस्लें शायद मुश्किल से ही विश्वास करेंगी कि हाड़-मांस से बना हुआ कोई ऐसा व्यक्ति भी धरती पर चलता-फिरता था।”

गांधीजी की भूमिका और सेवाओं पर प्रकाश डालते हुए उन्होंने यह भी लिखा है- “अपने राष्ट्र का ऐसा लीडर जिसे बाह्य शक्ति का सहारा प्राप्त नहीं था। एक ऐसा राजनेता जिसकी सफलता किसी प्रयोजन या तकनीक पर निर्भर नहीं बल्कि मात्र उसके व्यक्तित्व की प्रभावी शक्ति पर है। एक ऐसा संघर्षकर्ता जिसने शक्ति के प्रयोग से नफ़रत की। एक ऐसा व्यक्ति जिसके दिमाग़ में प्रबुद्धता और स्वभाव में शालीनता थी, जिसने अपनी सम्पूर्ण क्षमता अपने राष्ट्र के कल्याण पर लगा दी, और इस तरह सदैव के लिए उत्कृष्ट हो गया।

महान वैज्ञानिक अल्बर्ट आइंस्टीन ने गांधीजी के बारे में 1944 में लिखा था- “आने वाली नस्लें शायद मुश्किल से ही विश्वास करेंगी कि हाड़-मांस से बना हुआ कोई ऐसा व्यक्ति भी धरती पर चलता-फिरता था।”

सुन तो जरा जहां में, है तेरा फ़साना क्या।
कहती है तुझको ख़ल्के खुदा, गायबाना क्या॥

आमतौर पर लोग गांधीजी को एक बड़े प्रभावशाली और सफल राजनेता के रूप में जानते हैं। कुछ उन्हें चरखे और खादी के ध्वजा वाहक की हैसियत से जानते हैं। कुछ उन्हें सत्याग्रह और अहिंसा की रणनीति का अविष्कारक मानते हैं। कुछ लोग उनकी पत्रिका 'हरिजन' के सम्बन्ध से उनसे परिचित हैं। लेकिन यह कहना समुचित होगा कि गांधीजी बहुआयामी व्यक्तित्व के धारक थे। वह एक नवीन सामाजिक व्यवस्था स्थापित करना चाहते थे जिसमें एक इन्सान या एक वर्ग किसी दूसरे का शोषण न कर सके। समाज को बनाने-संवारने में और उसकी ज़रूरतों के साधन उत्पन्न करने में सब बराबर की हैसियत से सम्मिलित रहें। संसाधनों का वितरण जात-पात और जन्म के आधार पर न हो। धन-सम्पत्ति के धारक उसे मात्र अपना अधिकार न समझें। ज्ञान एवं व्यवहार अलग-अलग नहीं बल्कि एक दूसरे के सहायक हों।

गांधीजी का स्वच्छता-दृष्टिकोण

यदि हम गांधीजी के सपनों के स्वच्छ भारत की बात करते हैं तो हमारे मन में क्या विचार आते हैं? क्या गांधीजी के निकट स्वच्छता सिर्फ घर और घर के बाहर मौजूद गन्दगी को इधर-उधर फेंकने और फैलाने की बजाए उसे निर्धारित स्थलों तक पहुँचाना था?

प्रधानमन्त्री नरेन्द्र मोदी ने इस अभियान को शुरू किया है जो प्रशंसनीय है। जगह-जगह हमें स्वच्छ भारत के पोस्टर गांधीजी के चित्र के साथ दिखाई देते हैं। क्या गांधीजी का विचार यहीं तक सीमित था? एक स्वस्थ शरीर में ही एक स्वस्थ मस्तिष्क रहता है- और उत्तम स्वास्थ्य सफ़ाई के बगैर सम्भव नहीं। मेरे विचार में गांधीजी का स्वच्छता का विचार "स्वच्छ भारत" के वर्तमान विचार से उच्चतर है। इस पर चिन्तन करने की ज़रूरत है।

यदि हम गांधीजी की स्वच्छता की विचारधारा पर चिन्तन करें तो यह परिणाम सामने आता है कि गांधीजी की स्वच्छता की विचारधारा हार्दिक स्वच्छता की विचारधारा थी। उनका यह दृढ़ विश्वास था कि हमारा हृदय, हमारी सोच धोखाधड़ी, कपट, नफ़रत से पाक रहे। इससे दूसरों पर इसका प्रभाव पड़ेगा। इस

तरह पूरा समाज स्वच्छ हो जाएगा। इस तरह सामूहिक रूप से आन्तरिक स्वच्छता का परिवेश बनेगा जो पूरी सृष्टि पर छा जाएगा। इस तरह पूरे विश्व से युद्ध, हिंसा, नफ़रत, छुआछूत शोषण, असमानता जैसी कुरीतियाँ समाप्त हो जाएँगी। जीवन के सभी क्षेत्र पवित्र हो जाएँगे चाहे वह पर्यावरण हो, अर्थव्यवस्था हो, राजनीति हो या समाज। अर्थात् जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में हमारा अन्तःकरण, हमारी सोच, हमारा दृष्टिकोण हर तरह की गन्दगी से शुद्ध रहें। इस प्रसंग में गांधीजी के निम्न कथन उल्लेखनीय हैं :

- जो व्यक्ति नफ़रत की भावना से मुक्त है, उसे तलवार की ज़रूरत नहीं।
- कुव्यवस्था बर्बादी का कारण बनती है।
- दूसरों के दुर्गुण न देखो। स्वयं अपने कर्मों का अवलोकन करो। इस तरह तुम वास्तविक अर्थों में प्रसन्न रहोगे।
- सच्चा प्रेम समुद्र की तरह असीम है। यह सभी सीमाएँ को पार करके अपने भीतर सम्पूर्ण सृष्टि को समाहित कर लेता है।

खुदी को कर बुलन्द इतना कि हर तक्दीर से पहले।
खुदा बंदे से खुद पूछे बता तेरी रज़ा क्या है॥

गांधीजी का वास्तविक सपना दिलों को बदलना था, शक्ति से हालात को बदलकर वक्ती फ़ायदा उठाना नहीं था। वह मानवीय समुदाय में नैतिक रूप से सन्तुलन पैदा करना चाहते थे। वह एक ऐसा हार बनाना चाहते थे जिसका हर दाना एक दूसरे से जुड़ा हुआ हो। उनका उद्देश्य था कि एक इन्सान दूसरे इन्सान के काम आये। वे एक दूसरे के पूरक बन जाएँ। जिसके पास जो कुछ है वह उसमें से दूसरों को भी दे ताकि सभी साधन-सम्पन्न हो जाएँ।

साए की खातिर रहता है पेड़ का पत्ता-पत्ता एक
दरिया की तशकील हो कैसे, अगर न हो क़तरा एक
यकजहती का आईना भी वह आईना है जिस पर कि
सबकी नज़र पड़े तो सबको दिखाई दे हर चेहरा एक
यकजहती का माला, और तस्बीह का दाना-दाना एक
यकजहती की शमा के हल्के को है हर परवाना है
खड़ा है जैसे कोहे हिमाला बनाके एक मज़बूत क़तार
इसी तरह हम भी हो जाएँ मिलाके शाना बशाना एक

गांधीजी का मानना था कि अगर हम खुदा को सिर्फ अपने जेहन से नहीं बल्कि दिल व जान से मानते हैं तो हम सम्पूर्ण मानवजाति से बगैर किसी धार्मिक, जातीय एवं वर्गीय भेदभाव के प्रेम करेंगे। मैंने कभी अपने परिचितों, अपरिचितों, देशवासियों, परदेसियों, गोरों और कालों, किसी भी धर्म के मानने वालों चाहे वे हिन्दू, मुस्लिम, सिख, ईसाई, पारसी, यहूदी हों, किसी के साथ भी भेदभाव नहीं किया है। मैं यह कह सकता हूँ कि मेरे भीतर इस भेदभाव को कायम रखने की क्षमता नहीं है।

गांधीजी का आन्तरिक जीवन गहन धार्मिक जीवन था जिससे उनके समस्त बाह्य व्यवहार में सार्थकता एवं शक्ति पैदा होती थी। लेकिन वह धर्म के आधार पर भेदभाव नहीं चाहते थे। वह जीवन भर संघर्षशील रहे। उनका यही प्रयास रहा कि जितना सम्भव हो सके वह दिन में अधिक से अधिक लोगों के साथ घुलमिल सकें। अपने आप को अहंकार के बन्धनों से मुक्त रखना उनके जीवन का महत्वपूर्ण उद्देश्य रहा है, और उनकी समस्त राजनीतिक, सामाजिक गतिविधियों में यह भावना क्रियाशील रही है। आप सभी धर्मों का समान रूप से आदर करते थे और उनकी उत्तम शिक्षाओं की सराहना करते थे।

आपकी यह आस्था थी कि प्रत्येक धर्म में ईश्वर की मान्यता विद्यमान है। सत्य एक है, जिसे विभिन्न रूपों में व्यक्त किया गया है। वे चाहते थे सभी धर्मावलम्बी चाहे वह हिन्दू धर्म, इस्लाम, ईसाइयत, ज़रतुश्त किसी भी धर्म के मानने वाले हों धर्म की मूल-भावना को अपनाएँ। और इस तरह विभिन्न धर्मों के बीच सदभाव पैदा हो सके।

गांधीजी की सोच में व्यापक स्तर पर धार्मिक उदारता थी। मगर इस उदारता का आशय धार्मिक उन्मुक्ता नहीं था। बल्कि विवेक पर आधारित सभी धर्मों के ज़ाहिरी विभेद के बावजूद एक ही वास्तविकता की स्वीकृति है।

गांधीजी की मान्यता थी कि धर्म इसलिए नहीं हैं कि इन्सानों को एक दूसरे से अलग करें। बल्कि इसलिए हैं कि मनुष्यों को एकजुट करें। यह दुर्भाग्य है कि आजकल धर्मों को इस तरह से विकृत कर दिया गया है कि वही इन्सानों के रक्तपात का कारण बन गए हैं।

इस संबंध में गांधीजी के विचार ये हैं:

- कोई भी धर्म दमन और अत्याचार की अनुमति नहीं देता।

- सत्य और सदाचरण से बढ़कर कोई धर्म नहीं है।
- विभिन्न धर्मों में समरसता सभी सम्भव है जब किसी एक धर्म के मानने वाले अन्य धर्मों के मानने वालों का सम्मान करें।
- यदि ईश्वर पर सच्ची आस्था रखते हो तो उसके छोटे से छोटे जीव का हित तुम्हारे मन में होना चाहिए।
- ईश्वर का सच्चा भक्त तलवार चलाने की शक्ति और साहस रखता है। लेकिन वह तलवार नहीं चलाता। क्योंकि वह जानता है कि प्रत्येक मनुष्य में ईश्वर का बिम्ब है।

गांधीजी के इन कथनों के प्रकाश में यह अनुमान लगाया जा सकता है कि धर्म के नाम पर हमारे दिलों में जो कपट और कटुता भरी है, इस गन्दगी को भी दिल से शुद्ध करना चाहिए।

*तुझे मन्दिरों ने सदाएँ दीं कि तेरे काम से अमां मिली
तुझे मस्जिदों ने दुआएँ दीं कि तबाहियों से बचा लिया*

गांधीजी का भारत विविधता में एकता की विशेषता रखता है। यह वह धरती है जहाँ विभिन्न धर्मों, सभ्यताओं, भाषाओं, जातियों के लोग सदियों से मिलजुल कर रहे आए हैं।

*जिधर निगाह उठे उस तरफ़ नया है समां
न एक रंगे तबीअत, न एक रंगे ज़बां*

गांधीजी के जीवन का एक बड़ा मिशन यह भी था कि देशवासी भाईचारे के रिश्ते में बन्ध जाएँ। वह देश की आज़ादी के साथ-साथ परस्पर प्रेम और भाईचारा कायम करने के भी इच्छुक थे। लेकिन जातिवाद, छुआछूत जैसी कुरीतियों ने समाज में जो अशान्ति पैदा की उसे गांधीजी ने कभी स्वीकार नहीं किया। उनका कहना था कि ये कुरीतियाँ राष्ट्र के शरीर में नासूर की तरह हैं और प्रगति के मार्ग में रुकावट हैं। वह कहते थे कि मैं इन्सानों के बीच असमानता का समर्थक नहीं हूँ, हम सब समान हैं। लेकिन यह समानता आध्यात्मिक है, शारीरिक नहीं है।

हमें इस विषय पर मनन करना चाहिए कि वर्तमान संसार में जो असमानता पायी जाती है, उसका कारण क्या है? हमें किस प्रकार समानता प्राप्त करना चाहिए। यह ध्यान रहे कि किसी व्यक्ति का अन्य व्यक्ति पर श्रेष्ठता जताना पाप है। अतः जातिवाद जहाँ इस अर्थ में हो कि लोगों की सामाजिक सियत में अन्तर आ जाए तो यह बहुत बुरी बात है।

छुआछूत हमारे समाज में अभिशाप की तरह फैला हुआ है। यह ऐसी गंदगी है कि इसे जड़ें से उखाड़ फेंकना समय की सबसे बड़ी अनिवार्यता है। कौन “छूत” है कौन “अछूत”, यह विभेद मिटाकर दोनों पक्ष भाई-भाई की तरह गले लग जाएँ, यह गांधीजी का एक अरमान, एक सुनहरा स्वप्न रहा है।

गांधीजी हिन्दू धर्म के सच्चे अनुयायी थे। मगर अन्य धर्मों एवं आस्थाओं से वह दुराव नहीं रखते थे। उनका कहना था कि यह असम्भव है कि कोई व्यक्ति मेरे पिछले 50 वर्षों के कामों में से कोई भी एक ऐसा काम बताये जिसके बारे में यह साबित हो सके कि वह काम मैंने किसी व्यक्ति विशेष या समुदाय विशेष की दुश्मनी में किया हो। मैंने किसी को अपना शत्रु नहीं समझा, न किसी जीवधारी का बुरा चाहा। मेरी आस्था मुझे इसकी अनुमति नहीं देती। मैं सिर्फ हिन्दुओं में छूत-अछूत की एकता नहीं बल्कि हिन्दू, मुसलमानों, ईसाइयों, यहूदियों और पारसी सभी धर्मावलंबियों के बीच एकता चाहता हूँ।

हम सबको जल्द ही यह एहसास हो जाएगा कि हम एक दूसरे से अलग नहीं बल्कि हम सब एक हैं। छुआछूत को पूरी तरह से ख़त्म करने का संकल्प करते हुए गांधीजी ने कहा था : मुझे नहीं मालूम कि इस कुरीति को ख़त्म करने का मेरा सपना मेरे जीवन में साकार हो सकेगा या नहीं। हमारा समाज इस अभिशाप से मुक्त होगा या नहीं। यह भेदभाव समाप्त होगा या नहीं।

- अगर मेरे पास देने को कुछ और होता तो मैं इस अभिशाप को दूर करने के लिए दे डालता। मगर मेरे पास इस प्राण के अतिरिक्त कुछ नहीं है।
- मेरे सपने के स्वराज में जातीय अथवा धार्मिक भेदभाव के लिए कोई स्थान नहीं है।
- छुआछूत की कुरीति का उन्मूलन समय की सबसे बड़ी अनिवार्यता है।
- जब तक एक इन्सान खुद को दूसरे इन्सान से निम्नतर या श्रेष्ठतर समझता रहेगा, उस समय तक समानता-समता कदापि स्थापित नहीं होगी।

गांधीजी की तीव्र इच्छा थी कि सभी इन्सान अपने कर्तव्य से भलीभाँति परिचित हों और अपनी ज़िम्मेदारियों का पालन करें ताकि समाज में अपनी सही भूमिका निभा सकें। यदि अपने कर्तव्यों और ज़िम्मेदारी का बोझ दूसरों पर डाल कर चलेंगे तो कुव्यवस्था पैदा हो जाएगी

और यही दायित्वहीनता लोगों को अस्तव्यस्त कर देगी। समाज में कुव्यवस्था तथा उपद्रव से शान्ति एवं सुरक्षा कायम न रहेगी तो यह अपने कर्तव्यों से अनभिज्ञता तथा दायित्वहीनता समाज के लिए किसी गन्दगी से कम नहीं है।

गांधीजी का मानना था कि कोई काम करना है तो उसे उतनी ही सावधानी के साथ करो जितना आप उस काम में दिल लगाते हैं जो आपके निकट महत्वपूर्ण होता है। इसलिए कि इन्हीं छोटी-छोटी चीज़ों से आपके चरित्र का आकलन किया जाएगा।

हमारे समाज में एक बड़ी ख़राबी यह पैदा हो गई है कि पूँजीपति और ज़मींदार अपने अधिकारों का उल्लेख करते हैं और दूसरी ओर मज़दूर अपने अधिकारों का। राजा-महाराजा अपने शासन का राग अलापते हैं और प्रजा अपने इस अधिकार का कि वह आज्ञापालन करती है। यदि यही लोग अपने अधिकारों पर ज़ोर देने के साथ अपने कर्तव्यों और इन्सान की हैसियत से अपनी ज़िम्मेदारियों का एहसास पैदा कर लें तो क्या कहना।

हमारा फ़र्ज़ होना चाहिए कि हम एक दूसरे से दोस्ताना सम्पर्क स्थापित करें। एक दूसरे के दुख और सुख में शरीक हों। मुसीबत में एक दूसरे के काम आएँ। अगर हमारे पास कुछ है और दूसरा उससे वंचित है तो उसका हिस्सा भी लगाएँ। किसी को हीन और अपने को श्रेष्ठ न समझें। और जीवन के किसी भी क्षेत्र में खुद को भेदभाव का कारण न बनने दें।

इस सम्बन्ध में गांधीजी के कुछ विचार निम्नलिखित हैं:

- मानवता का हित अन्य सभी हितों से श्रेष्ठ है।
- यदि हम अपने कर्तव्य निभाएँगे तो अधिकारों की प्राप्ति में कोई बाधा नहीं आएगी।

छुआछूत हमारे समाज में अभिशाप की तरह फैला हुआ है। यह ऐसी गंदगी है कि इसे जड़ें से उखाड़ फेंकना समय की सबसे बड़ी अनिवार्यता है। कौन “छूत” है कौन “अछूत”, यह विभेद मिटाकर दोनों पक्ष भाई-भाई की तरह गले लग जाएँ, यह गांधीजी का एक अरमान, एक सुनहरा स्वप्न रहा है।

- यदि कोई व्यक्ति दूसरों के मुकाबले खुद को श्रेष्ठ समझता है तो यह दुर्भावना खुदा और इन्सान की निगाह में पाप है।
- दैनिक जीवन की कठिनाइयों का सहाज भाव से मुकाबला करने में इन्सान की भावी तरक्की निर्भर है।
- जो कौम अपार त्याग पेश करने की भावना और साहस रखती है वह प्रगति की असीमित ऊँचाइयों पर पहुँचने की क्षमता भी रखती है। जितना त्याग वास्तविक होगा उतनी ही सफलता जल्द प्राप्त होगी।
- जब तक देश का कोई भी योग्य एवं सक्षम पुरुष स्त्री रोजगार एवं भोजन में वंचित है, हम पर दो

गांधीजी का यकीन था कि वह समय जरूर आएगा चाहे उसकी अवधि अल्प क्यों न हो जब बुराई करने की क्षमता लोगों में कम हो जाएगी। और विचारधारा के आधार पर दुनिया जुल्म, अन्याय, दम्भ, नैतिक बुराइयों से दूर होने लगेगी। तभी जाकर मेरी अहिंसा सम्पूर्ण - मानवजाति के दिलों को प्रभावित करेगी

समय का खाना और आराम हराम है। बल्कि हमें इस सूरतेहाल पर शर्मिन्दा होना चाहिए।

• राजनेताओं से जिन गुणों की अपेक्षा की जाती है वे हैं संयम, निडरता और सबसे बढ़ कर त्याग और कुर्बानी।

• यदि हमें तरक्की करनी है तो हम इतिहास को दोहराएँ नहीं, बल्कि नया

इतिहास बनाएँ। हम उस पैतृक धरोहर को जो हमारे पुरखों ने छोड़ी है अपनी ओर से उसमें वृद्धि करें। और दृश्य-जगत में नये अविष्कार तथा खोजकार्य करें।

- मेरी राय में सत्ता सेवा का माध्यम है। जिन लोगों पर पद संभालने की जिम्मेदारी आती है उन्हें यह काम प्रसन्नता और उत्तम क्षमता का प्रयोग करते हुए करना चाहिए।

गांधीजी अहिंसा और सच्चाई के पक्षधर थे। उनका मानना था कि मेरा शरीर उसी तरह नश्वर है जैसे मेरे कमजोर से कमजोर सहजीवी का। मैं उतना ही पापी हूँ जितना कोई अन्य मानव।

अपने पापों का स्वीकार एक झाड़ू की तरह है जिससे अन्तःकरण की धूल झड़ जाती है और वह पहले की अपेक्षा अधिक शुद्ध हो जाता है। मुझे अपनी गलती को स्वीकार करने के बाद यह महसूस होता है कि मेरी शक्ति पहले से बढ़ गयी है। गांधीजी की अभिलाषा थी कि लोग आपस में इस तरह घुलमिल कर रहें कि किसी का किसी पर वर्चस्व न रहे। वर्चस्व की जरूरत तो सम्राटों को दरबार में होती है। उनका कहना था कि मैं मुसलमानों, ईसाइयों, पारसियों और यहूदियों का उसी तरह सेवक हूँ जैसे हिन्दुओं का। सेवक को प्रेम की आवश्यकता होती है रौब और दबदबे की नहीं।

सभी इन्सानों को हिंसा से मुक्त होकर जीने और मरने की कला आनी चाहिए।

गांधीजी का यकीन था कि वह समय जरूर आएगा चाहे उसकी अवधि अल्प क्यों न हो जब बुराई करने की क्षमता लोगों में कम हो जाएगी। और विचारधारा के आधार पर दुनिया जुल्म, अन्याय, दम्भ, नैतिक बुराइयों से दूर होने लगेगी। तभी जाकर मेरी अहिंसा सम्पूर्ण - मानवजाति के दिलों को प्रभावित करेगी, इससे पहले नहीं। इस संबंध में कुछ कथन निम्नलिखित हैं

- अहिंसा पराक्रम का सबसे ऊँचा शिखर है।
- नफरत हिंसा की दुर्बलतम स्थिति है।
- मेरे निकट एक इन्सान का किसी अन्य इन्सान पर वर्चस्व पाना मानवता के विपरीत है।
- प्रेम से जो कुछ मिलता है वह सदैव कायम रहता है। नफरत से जो कुछ मिलता है वह बोझ बन जाता है। क्योंकि इससे नफरत और अधिक बढ़ जाती है। हम सबका यह फर्ज है कि नफरत को मिटाएं और प्रेम को बढ़ाएँ।
- यदि तुम इसका एहसास नहीं कर सकते कि दूसरे की आस्था भी तुम्हारी आस्था की तरह सच्ची है तो कम से कम तुम्हें इतना तो मानना चाहिए कि अन्य लोग इतने ही सच्चे हैं, जितने कि तुम हो।
- अहिंसा और एकता से पैदा होने वाली शक्ति इन्सान द्वारा अविष्कृत समस्त हथियारों से हजार गुना बेहतर है।

- गांधीजी विश्व स्तर पर शान्ति एवं सुरक्षा के इच्छुक थे, उनका उद्देश्य था कि सारे विश्व से मित्रता की जाए। अत्याचार तथा बुराई का अधिक से अधिक विरोध किया जाए, और इन्सानों से जितना अधिक हो सके प्रेम किया जाए। गांधीजी का मानना था कि अगर एक व्यक्ति आध्यात्मिक उत्थान करता है तो सारी दुनिया उसके साथ उत्थान करती है। यदि एक व्यक्ति नीचे गिरता है तो सारी दुनिया एक सीमा तक गिर जाती है।

कोई एक नेकी भी ऐसी नहीं जिसमें केवल व्यक्ति की भलाई उद्देश्य या पर्याप्त समझी जाए। इसी तरह कोई नैतिक अपराध ऐसा नहीं जिसका प्रभाव अपराधी के अलावा और बहुत से लोगों पर न पड़ता हो। इसीलिए किसी व्यक्ति का बुरा या भला होना सिर्फ उसका निजी मामला नहीं है। वस्तुतः उसका सम्बन्ध सिर्फ सम्पूर्ण समाज से नहीं है बल्कि पूरे विश्व से है।

जिस तरह समुद्र की एक बूंद में समुद्र की विशालता विद्यमान है, यद्यपि उसे इसका आभास नहीं। मगर जैसे ही वह समुद्र से अलग होकर एक पृथक अस्तित्व बनना चाहता है—सूख कर रह जाता है। इसमें कोई अतिरंजना नहीं।

जिंदगी बुलबुला है पानी का

हम सब इन्सानों को चाहिए कि दिल व जान से सारी सृष्टि का भला चाहें और यह दुआ करें कि हमें सबके साथ भलाई करने की शक्ति प्राप्त हो। सबका भला चाहने में खुद हमारा भला है। जो व्यक्ति अपना या सिर्फ अपने समुदाय का कल्याण चाहता है, वह स्वार्थी है, उसका कभी भला नहीं हो सकता। हमारा देशप्रेम का दायरा सीमित नहीं बल्कि इसके दायरे में सारी दुनिया आ जाती है।

प्रेम कभी कोई अपेक्षा नहीं करता बल्कि वह हमेशा कुछ देता है। प्रेम हमेशा दुख सहता है शिकायत नहीं करता। न ही वह किसी से बदला लेता है।

अम्ने आलम का तलबगार अगर है इंसां

मेरी तालीम पर सर उसको झुकाना होगा
नफ़रत व बुग़ज़ की लानत को मिटाकर यकसर
रास्ता ज़िस्त का हमवार बनाना होगा

सच्ची शिक्षा यह है कि हमारे भीतर जो उत्तम क्षमताएं हैं उन्हें उभारें। मानवता की पुस्तक से बेहतर कोई पुस्तक नहीं। गांधीजी की दृष्टि में मन-मस्तिष्क की सच्ची शिक्षा सिर्फ शरीरांगों जैसे हाथ, पैर, नाक, कान आदि के सही इस्तेमाल और प्रशिक्षण ही से हो सकती है। दूसरे शब्दों में बच्चे का अपने अंगों से समझबूझ कर काम लेना, उसके मानसिक एवं शारीरिक विकास के लिए सबसे अच्छा और सबसे निकट का रास्ता है। मगर ऐसा मानसिक एवं शारीरिक विकास जिसके साथ आत्मा की जागृति न हो अधूरा और त्रुटिपूर्ण है। जैसे यदि आपका हृदय शुद्ध नहीं है और आप अपनी भावनाओं पर काबू नहीं पा सकते तो आप शिक्षित इन्सान कभी नहीं हो सकते।

शिक्षा से उनका आशय बच्चे और प्रौढ़ दोनों हैं। उनके मस्तिष्क, शरीर और आत्मा के भीतर जो उच्च क्षमताएं मौजूद हैं, उन्हें उभारना है। लिखने-पढ़ने की योग्यता शिक्षा का मापदंड नहीं है। बल्कि वास्तव में यह शिक्षा का प्रारम्भ भी नहीं है। यह मात्र एक माध्यम है जिससे कि शिक्षा दी जा सकती है। इसलिए बच्चे की शिक्षा इस तरह शुरू की जाए कि उसे कोई लाभप्रद दस्तकारी सिखायी जाए, ताकि बच्चे को इस योग्य बनाया जा सके कि वह पहले ही दिन से कोई काम की वस्तु पैदा करने लगे। इस तरह हर व्यक्ति आत्मनिर्भर बन सकता है।

इस तरह की शिक्षा शैली से मस्तिष्क और आत्मा का समुचित उन्नयन हो सकता है। इस ग़लत और निराधार विचार को मन से निकाल दें कि योग्यता सिर्फ पुस्तकें पढ़ने से प्राप्त हो सकती है।

लिखना और पढ़ना सीख लेना स्वयं से मानव की नैतिक क्षमता में कोई वृद्धि नहीं करता। चरित्र-निर्माण का साक्षर होने से कोई सम्बन्ध नहीं है। इन्सान जो कुछ करता है, उसके कर्म ही बाकी रहते हैं, न कि उसका लेखन और भाषण।

संपर्क- जामिया मिलिया इस्लामिया, जामिया नगर
ओखला, नई दिल्ली-25
मेल: zohrafatima912@gmail.com

राष्ट्रपिता के सपनों का स्वच्छ भारत

जागृति राही

महात्मा गांधी दुनिया भर में भारत की पहचान है दुनिया भर में 2 अक्टूबर गांधी जयन्ती अहिंसा दिवस के रूप में इसीलिए मनाया जाता रहा है। इस वर्ष हमारे प्रधानमंत्री ने इसे स्वच्छता अभियान से जोड़ दिया, 'स्वच्छ भारत' अभियान का पूरे देश में स्वागत किया गया। लोगों में स्वयं को इस अभियान से जुड़ा हुआ दिखाने की होड़ लग गयी, बड़ी-बड़ी हस्तियाँ भारत को स्वच्छ बनाने के लिए झाड़ू ले कर सड़कों, चौराहों घाटों पर निकल पड़ीं।

गांधी स्वच्छता के बारे में क्या सोचते थे यह आज की पीढ़ी को यह जानना आवश्यक है। साउथ अफ्रीका से लौटने के बाद गांधी ने पूरा देश घूमकर देखा। आजादी के पूर्व जिस भारत को उन्होंने देखा, गांधी समझ चुके थे कि इस गरीब जनसंख्या वाले देश में जहाँ बड़े पैमाने पर हैजा जैसी महामरियाँ लाखों लोगों की जान ले लेती थी स्वास्थ्य के लिए स्वच्छता का कितना महत्व है। इसीलिए वह बचपन से ही सफाई की अच्छी आदतों के संस्कार बच्चों में दिये जाने को महत्व देते रहे हैं। उन्होंने गन्दगी करने से स्वयं को रोकने के लिए अपने लेखों द्वारा विस्तारपूर्वक जनता को सन्देश दिया। गांधी अपने बचपन के दिनों में राजकोट में अपने घर में सफाई के लिए आने वाले मेहतर के साथ अछूत मानकर व्यवहार किये जाने पर अपनी माँ से बहस की और कहा कि हमारे घर को साफ करने वाले के छूने से मैं गन्दा कैसे हो सकता हूँ। गांधीजी ने अपने तमाम आश्रमों में सादगी और स्वच्छता का विशेष ध्यान रखा और आश्रम में रहने वाले हर व्यक्ति से दैनिक साफ-सफाई के कामों को स्वयं ही किया जाना अनिवार्य शर्त बनाया। उनका कहना था कि हर व्यक्ति को अपना मेहतर स्वयं बनना चाहिए तभी

समाज से छूआ-छूत नाम की गन्दगी मिटेगी और हमारे गाँव शहर स्वच्छ व सुन्दर बनेंगे। स्वच्छता और शारीरिक श्रम को गांधीजी कितना प्रतिष्ठा और महत्व देते थे यह उनके साउथ अफ्रीका से लेकर साबरमती, वर्धा, सेवाग्राम हर जगह बनाये गये आश्रमों और उसमें रहने के दौरान उनकी दिनचर्या को देखकर बताया जा सकता है। गांधीजी की स्वच्छता का सम्बन्ध व्यक्ति की सोच, जीवन शैली में बदलाव लाने और भेद-भाव को मिटाने से था। सार्वजनिक जीवन में स्वच्छता के महत्व को समझाने के लिए उन्होंने कांग्रेस के सम्मेलनों में स्वयं शौचालय की सफाई करके लोगों को प्रेरित किया, उनके द्वारा आह्वान करने के कारण बाद में कांग्रेस के सम्मेलनों के दौरान स्वयंसेवकों का एक भंगी दस्ता बनाया जाने लगा जिसमें शौचालयों की सफाई का काम ब्राह्मण किया करते थे। अतः हम समझ सकते हैं कि गांधी की सफाई हमारे देश में छूआ-छूत मिटाकर सामाजिक समरसता लाने और श्रम की प्रतिष्ठा करते हुए अन्तिम व्यक्ति के सम्मान की लड़ाई थी। उन्होंने 'स्वच्छता' को हर व्यक्ति की जिम्मेदारी बनाना चाहा और कहा कि आपकी महानता आपके घर के शौचालय की स्वच्छता दशा से नापी जानी चाहिए। उनके द्वारा महत्व दिए जाने का ही परिणाम था कि आश्रम से रोज सुबह की सैर से वक्त कार्यकर्ता आस-पास के गाँवों की दलित बस्तियों में जा कर सफाई का सन्देश ही नहीं देते थे बल्कि स्वयं झाड़ू लेकर सफाई करते थे। बापू अपनी मृत्यु के दो वर्ष पूर्व अपने प्रवास के दौरान दिल्ली और मुम्बई की भंगी बस्तियों में ही जा कर रहे। गांधीजी ने पूना में कहा था कि सफाई का ये काम स्वयं करना ही स्वराज के सिपाही की पहली योग्यता है। उन्होंने कहा था कि जब

तक हममें से हर एक व्यक्ति स्वयं अपनी और दूसरों की गन्दगी साफ करने के लिए हाथों में बाल्टी और झाड़ू नहीं लेगा तब तक इस देश में सफाई कायम नहीं होगी। उन्होंने बच्चों की शिक्षा के लिए बुनियादी तालीम की जो अवधारणा बनायी उसमें भी श्रम, स्वच्छता एवं कौशल के विकास पर पूरा जोर था। गाँव के सार्वजनिक कुओं, कुंडों, जलाशयों के आस-पास गन्दगी फैलाने को गांधी ने 'महापाप' कहा था।

सफाई केवल 'कामगारों' या नगर निकायों की ही जिम्मेदारी नहीं है, ये हर भारतीय की जिम्मेदारी है। साथ ही साथ सरकार को यह भी ध्यान देना होगा कि इस देश में आज भी एक बड़ी जनसंख्या ऐसे लोगों की है जो इन्सानी गंदगी को सिर पर ढोते हैं और मेनहोलों में उतरकर अपनी जिन्दगी जोखिम में डालने को अभिशप्त है। क्यों नहीं हमारी सरकार सफाई कर्मचारियों को जरूरत के अनुपात में शहरों-गाँवों में बहाली करती नजर आती है। उनके काम करने हेतु जरूरी औजार और बेहतर परिस्थितियों का निर्माण उनके स्वास्थ्य की नियमित देखभाल और बुनियादी सुविधाएँ उपलब्ध कराने के प्रावधान को इस स्वच्छता अभियान का हिस्सा बनाकर इसे और प्रभावी तथा गांधीजी के अन्तिम व्यक्ति की कसौटी पर सही बनाया जा सकता है।

दरअसल भारत में स्वच्छता पर लोगों के अन्दर जागरूकता लाना, हर परिवार को सेंनिटेशन की सुविधा से जोड़ना या शौचालय उपलब्ध कराना, शहरों में कचरे का निस्तारण और व्यक्तिगत सफाई के लिए स्वच्छ पानी की उपलब्धता सुनिश्चित कराना एक बड़ी जिम्मेदारी है। स्वच्छ भारत अभियान इन्हीं सब उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए प्रधानमंत्री जी द्वारा शुरू किया गया है। यह लक्ष्य हमें 2019 में गांधीजी की 150 वीं वर्षगाँठ तक हासिल कर लेना है। यह केवल एक 'नारा' या सदिच्छा ना बन कर रह जाए इसके लिए स्वच्छता के हर स्तर पर योजनाबद्ध तरीके से काम होना जरूरी है।

आज हमारे देश के शहरों में सफाई की समस्या गाँवों की तुलना में ज्यादा विकराल रूप में खड़ी है। शहरों में जो लाखों टन कचरा रोज निकलता है उसके निस्तारण हेतु कोई प्रभावी सिस्टम अब तक निकाला नहीं जा सका है। नदियों के किनारों, शहर के बाहरी, निचले हिस्सों में कूड़े के पहाड़ खड़े किये जाते हैं। कचरे के

निस्तारण के लिए जो व्यवस्था वर्तमान में अपनायी जा रही हैं उसमें भ्रष्टाचार और कमाई का बोलबाला है इसीलिए स्थानीय एवं सीधी सरल विकेन्द्रित तकनीक अपनाने की बजाय कूड़े को समस्या बनाया जा रहा है। यह मानने का कोई कारण नहीं है कि अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर अपनी प्रतिभा का लोहा मनवा लेने वाले हमारे देश के वैज्ञानिक अपने देश की जरूरतों और परिस्थितियों के मुताबिक कम संसाधन में चलने वाली कूड़े के निस्तारण की देसी तकनीक का विकास नहीं कर सकते। गांधीजी ने तो ग्राम स्वराज में स्थानीय संसाधनों के विकास और विकेन्द्रित अर्थ व्यवस्था पर सबसे अधिक जोर दिया था फिर क्यों हमें बाहरी शक्तियों के आगे हाथ फैलाना पड़ता है। नदिया, सागर के किनारे की जमीनों पर कूड़े के पहाड़ खड़े करके हम अपने पर्यावरण का पूरी तरह विनाश करने पर उतारू हैं। दायरे में इन समस्याओं का समावेश भी जरूरी है।

कुछ राजधानियों को छोड़ दे तो सार्वजनिक शौचालयों और स्नानगृहों की व्यवस्था छोटे-बड़े शहरों, बस्तियों, कस्बों से पूरी तरह गायब है। देश में सामुदायिक शौचालयों का निर्माण सुलभ जैसी इकलौती संस्थाओं के भरोसे एक सीमित मात्र में हो सका है। आँगनबाड़ी केन्द्रों, स्कूलों, बस अड्डों स्वास्थ्य केन्द्रों, भीड़-भाड़ वाली तमाम जगहों पर महिलाओं के लिए ऐसी कोई व्यवस्था ही नहीं होती जबकि यह एक प्राथमिक प्राकृतिक जरूरत है।

स्वच्छ भारत स्वस्थ भारत होगा यह हम सब जानते हैं तो इसके बहुआयामी स्वरूप और नियोजन पर सोचा जाना चाहिए इसके लिए पर्याप्त धनराशि की व्यवस्था की जानी चाहिए। राज्यों की सरकारों को भी प्राथमिकता के तौर पर बड़े पैमाने पर इसे अपनी योजना एवं बजट का हिस्सा बनाना चाहिए। पर क्या ऐसा हो पाएगा ? सवाल अन्त में नीयत का है। यदि इस देश के हर बच्चे को स्वयं सेविकाओं द्वारा पोलियों की ड्राप पिलायी जा सकती है वर्षों तक, तो क्यों नहीं सफाई के स्वयंसेवकों का निर्माण किया जाए। वे गाँव-गाँव में, शहर-शहर में शौचालय बनाए जाएँ। 'मेक इन इंडिया' की शुरुआत यहीं से हो तो बेहतर है।

संपर्क- सर्व सेवा संघ, राजघाट, वाराणसी (उ.प्र.)

Clean and Capable India of Gandhiji's dream

Dr. Sankar Kumar Sanyal

People with clean mind constituted a clean community, clean communities make a clean society and clean societies create a clean nation. People of the country expect such a nation where cleanliness permeates every nook and corner of their habitats.

Gandhiji's passion for cleanliness was legendary. He never compromised with cleanliness both in his personal life and political discourses. His Ashram at Sabarmati was always kept neat and clean. To achieve this he did not depend on outside support like those of a sweeper. He himself did the job of a sweeper and motivated other Ashramites to follow example and keep the surroundings always clean by their own efforts. Gandhiji believed that cleanliness of the area generates cleanliness of mind. People with clean mind constituted a clean community, clean communities make a clean society and clean societies create a clean nation. People of the country expect such a nation where cleanliness permeates every nook and corner of their habitats. During his lifetime he assiduously maintained cleanliness as his motto of life and ensured that the company he keeps and the nation he leads are conscious about personal cleanliness, of the neighbourhood and of the society at large. His political ideology was also based on clean thinking understandable to millions of his followers. During his famous Dandi Abhiyan and his journey to East Pakistan (now Bangladesh) he emphasised observance of cleanliness amongst his followers and admirers and used to admonish any kind of deviant attitude. People accompanying him were aware of his strong attitude in maintaining and scrupulously observed his mandate. In this way, Gandhiji made it a national issue. Sri Narendra Modi, Prime Minister of India, was strongly inspired by this issue and decided to follow suit by launching of 'Swacha Bharat Avijan' and gave a clarion call to the Nation. He gave a media talk on this issue once alone and then along with President Obama to create a lasting impression on the entire country using the visible symbol of a pair of Gandhi's spectacles.

Gandhiji learnt the art of scavenging and its usefulness in maintaining personal hygiene in South Africa. 'His friends there lovingly called him the Great Scavenger.' Mahatma Gandhi said, "Everyone must be his own scavenger." The idea of Mahatma Gandhi underwent a total transformation after a three-year stay in South Africa. When he came back to India to fetch his wife and sons his attitude towards cleanliness became more conspicuous. Plague had broken out

in the Bombay Presidency at that time. There was a spectre of it spreading to Rajkot. Gandhiji without any delay offered his service for improving the sanitation of Rajkot. He visited every home and stressed the need of keeping the latrines clean. The latrines set in dark and filthy environment which were infested with vermin horrified him. Even in the houses of the upper castes, gutters were used as latrines and the smell was unbearable. The residents paid no attention to such conditions. On the other hand, poor untouchables lived in cleaner homes and responded to Gandhi's pleadings.

During Gandhiji's next trip to India from South Africa, he participated in the Congress session held in Calcutta and pleaded the cause of the ill-treated Indians in South Africa. Gandhiji was astonished to find the sanitary condition of the Congress camp, which was horrible. Gandhi reacted immediately and reprimanded the volunteers. When the volunteers were asked to clean the place, they flatly refused saying that, that was not their job, and is a sweeper's job. Gandhiji himself wearing western clothes, cleaned the filth. The volunteers were astonished but none came forward to assist him. Years later, when Gandhi became the central figure of the Indian National Congress, volunteers formed a *bhangi* (sweeper) squad in the Congress camps where they could persuade even the Brahmins to work as *bhangis*. Hariपुरा Congress could gather two thousand teachers and students specially trained for doing the work of scavenging. It was inconceivable for Gandhiji to think of having a set of people labelled as untouchables for cleaning filth and dirt. Gandhiji desired that untouchability should be abolished once and for all from the Indian society. Whenever Gandhiji got an opportunity to do a little bit of cleaning work, he felt happy. To him the test of a people's standard of cleanliness was the condition of their latrines. Gandhiji considered himself as a *bhangi* and was prepared to die as a sweeper. He even challenged orthodox

Hindus to make him suffer social boycott alike the untouchables.

Indians gained freedom under the leadership of Gandhiji, but his dream of a clean India is still unfulfilled. Mahatma Gandhi said "Sanitation is more important than independence". He made cleanliness and sanitation an integral part of the Gandhian way of living. His dream was total sanitation for all. Cleanliness is most important for physical well-being and a healthy environment. It has bearing on public and personal hygiene. It is essential for everyone to learn about cleanliness, hygiene, sanitation and the various diseases that are caused due to poor hygienic conditions. The habits learnt at a young age get embedded into one's personality. Even if we inculcate certain habits like washing hands before meals, regular brushing of teeth, and bathing from a young age, we are not bothered about cleanliness of public places. Gandhiji emphasised on cleanliness and good habits and pointed out its interrelationship to good health and hygiene. He advised everyone not to spit or clean his nose on the streets because he thought that the sputum is harmful and the germs could infect others.

In the nations of South East Asia, Europe and in most of the western countries spitting on the road is a criminal offence inviting punishment. Even if one is constrained to spit and release mucus

Indians gained freedom under the leadership of Gandhiji, but his dream of a clean India is still unfulfilled. Mahatma Gandhi said "Sanitation is more important than independence". He made cleanliness and sanitation an integral part of the Gandhian way of living. His dream was total sanitation for all. Cleanliness is most important for physical well-being and a healthy environment.

from the nose, this should also be covered with earth.

In South Africa the Whites criticised the Indians for their unhealthy habits. Gandhiji was appalled when visiting quarters of the Indians and advised them to keep them neat and clean. He spoke about it at public meetings and wrote in newspapers. Gandhiji's house in Durban was built in western fashion. The bathroom had no outlet for water and thus commodes and chamber-pot used by his clerks residing with him had to be cleaned by them. He compelled his wife Kasturba to do the same and taught his young sons this work. When Kasturba expressed her disgust for carrying the chamber-pots used by his caste clerks, he reprimanded her by telling her that if she persisted with her caste bias, he would be constrained to ask her to leave the house. He even faced social boycott by his own sympathisers by allowing an untouchable couple to the Sabarmati Ashram.

Gandhiji returned to India from South Africa at the age of 46. During his visit to Kumbh Mela at Hardwar that year, he with his Phoenix boys served as *bhangis* at the mela. The same year Gandhi visited the Servants of India Society's quarters at Poona. The members of the small colony saw him cleaning the latrines one morning. They disliked it. But Gandhiji believed that work of this kind qualified one for Swaraj. He toured all over India on various occasions and everywhere he found unsanitary conditions in some form or other. Even in a city like Bombay, people who walked on the streets having a constant fear that somebody from the high-rise buildings would spit upon them. Gandhiji found the filth and stench of public urinal and latrines on railway stations and in *dharmashalas* were unbearable and for that he objected to the passengers' habit of dirtying the railway stations, *dharmashalas* and other public places. Gandhiji found even the poor villagers are not aware of minimum sanitary environment and kept their bullocks in unhygienic conditions

and saw people bathing in the so-called sacred pond even if the water was dirty. They not only dirtied the river banks but Gandhiji was hurt to see the marble floor of Kashi Vishwanath Temple set with silver coins collecting dirt. He also asked questions why entrances to abodes of Gods were through narrow slippery lanes. Although Gandhiji appreciated the spacious roads, splendid lighting in beautiful parks but he deplored the conditions of the places of sweepers' residences and emphasised that servants' quarters should be as clean as the masters' bungalows. He often compared Western sense of cleanliness with those of Indians and was distressed to find that the living quarters of the menials and sweepers even those who are in the Viceroy's House are extremely dirty. But the so called elite society did not tolerate this condition and ensured that the lodgings of their servants are kept as clean as their own. They will also have to pay attention to the cleanliness of the wives and children of the staff.

This innate understanding felt by Gandhiji led to creation of Harijan Sevak Sangh way back in 1932 and through this vehicle he wanted to galvanise the then stalwarts of the country like Pandit Madan Mohan Malviya, Rabindra Nath Tagore, G.D. Birla along with the so-called upper caste elite society to rise above the parochial outlook and pursue his mission of enabling the downtrodden and the untouchables who are engaged in scavenging works to come up the strata of the society and keep them afloat with the due dignity and prestige. By this he unleashed a mass movement to ensure temple-entry and other facilities so far prohibited to this class. Harijan Sevak Sangh is committed to uphold this basic philosophy while executing its activities and the Sangh has been faithfully following the path laid down by its mentor considering its importance in the present day society and proliferate its activities in many other fields keeping in mind the core value of the philosophy. ■

Gandhi on Clean and Capable Bharata

Dr. Rajjan Kumar

Gandhiji wanted to transform the fate of *Bharata* (India). He was in favour of social, economic and political decentralisation. While analysing development, Gandhi's approach was village-centric. He was in favour of clean, healthy, self-sufficient and prosperous village, free from filth and pollution. Through the upliftment of village life, he wished to transform the fate of India. Here we try to discuss a deep concern and clear vision of Gandhi in connection with the maintenance of clean and capable *Bharata* (India).

Gandhi, Modern Civilization and Industrialisation

Gandhi was critical of modern civilisation and rapid industrialisation. He realised that rapid industrialisation cannot be the panacea to all ills. Increasing industrialisation in today's world has not reduced social inequalities, but has rather resulted in further differentiations. Increasing use of technology has led to greater heterogeneity, greater inequalities and greater unaltruistically oriented behaviour. Gandhi regarded industrialisation detrimental to growth of a non-violent and eco-friendly society. In his ideal society, as in the classical anarchist model, there would be complete decentralisation of political and economic system and self sufficient, barter type of village economy would be the desired model.

Machinery has, in his judgment, three essential attributes. First, it can be duplicated or copied. Secondly, there is no limit to its growth or evolution. Thirdly, it appears to possess a will or genius of its own that operates as the inevitable law of displacement of the labour. Once the machine is created and allowed to operate, it goes more and more out of human control. Ideally Gandhi regarded all machinery as thoroughly undesirable. Once he commented: Today, machinery merely helps a few to ride on the backs of millions. The impetus behind it all is not philanthropy to save labour but greed. It is against this constitution of things that I am fighting with all my might.²

Gandhi was critical of modern civilisation and rapid industrialisation. He realised that rapid industrialisation cannot be the panacea to all ills. Increasing industrialisation in today's world has not reduced social inequalities, but has rather resulted in further differentiations. Increasing use of technology has led to greater heterogeneity, greater inequalities and greater unaltruistically oriented behaviour. Gandhi regarded industrialisation detrimental to growth of a non-violent and eco-friendly society.

Gandhi felt that the present industrialisation and use of large scale machinery was not very healthy and resulted in serious economic dislocation. Dead machinery must not be pitted against millions of living machines. As Gandhi once commented; “Mechanisation is good when the hands are too few for the work intended to be accomplished. It is an evil when there are more hands than required for the work, as in India”³. Large scale industrialisation perpetuates

Gandhi felt that the present industrialisation and use of large scale machinery was not very healthy and resulted in serious economic dislocation. Dead machinery must not be pitted against millions of living machines.

war and many other evils and all the naturalness come to an end. The capitalist, the imperialist, the socialist, the communist and the fascist States of the contemporary world are the main manifestation of the modern state system⁴.

Irrespective of their claims of ideological distinctiveness and systematic specialisation, all the typologies of the modern state are the products of industrialisation and claim similar achievements: enormous rise in economic productivity, tremendous increase in their internal trade and commerce, high economic growth in terms of incomes and higher standard of living. Achieved tremendous scientific and technological progress, have advanced culture through increased education, publications, mass media and rapid communications.

The above achievements have been the products of the following characteristics of modern state – massive industrialisation, high technologicalisation, vast colonisation (explicit and implicit, domestic and foreign), expensive governmentalisation, large bureaucratisation, widespread ecological mismanagement, heavy militarisation and militarism and frequent resort

to violence for intra and inter-state conflicts. The ultimate goal of Gandhian philosophy is the Panchyati Raj, the economically self sufficient, politically self-governing, and culturally non-violent village republic.

Gandhi, Consumption and Contentment

Gandhian view about consumption and consumerism can be understood through his quote, “The Earth provides enough to satisfy everyone’s needs but not any one’s greed”⁵. This will help to find out the Gandhian vision for clean and capable India in context of consumption and consumerism. In this regard we can explain the Gandhian approach as under ‘containment of lust’ and ‘wants to a limit’. Gandhi said, “The mind is a restless bird: the more it gets the more it wants, and still remains unsatisfied. The more we indulge our passions, the more unbridled they become.”⁶ He foresaw the rat race for the luxuries of life and the enslavement of the individual by the modern consumerist society. Gandhi advocated solution of this problem in the form of wantlessness, suggesting to voluntarily reduce our wants to a genuine level.

Gandhi regards cravings and lusts to be tormenting elements of human soul. One who renounces all the cravings and seeks contentment within himself, is said to have achieved the state of *Samadhistha* or *Sthitaprajna*. He regarded such persons “unruffled in adversity” and unaffected by worldly desires. He regarded human senses to be controlled. Inclination to human senses, arise desire. Lust to satisfy desire, becomes insatiable. If desire is thwarted, one becomes angry and mad. He, in this process loses his mummery, behaves in a disorderly manner and comes to an ignoble end. When a man’s sense roves at will, he is like a rudderless ship, which he is at the mercy of gale and is broken into pieces on the rocks.⁷

Gandhi had conviction in plain living and high thinking. When a man wants to multiply his daily wants, he falls from the ideal. Man’s

happiness really in contentment. Discontentment makes a man slave to his desires. 'The less you possess, the less you want, the better you are'. Once Gandhi said, "the secret of happy life lies in renunciation. Renunciation is life. Indulgence spells death."⁸

It is the lust which has created the great divide between haves and have nots of the world. It is the lust which has made millions the slaves of a few, who control economic and political power. There is competition between rich and poor to acquire more wealth in order to satisfy their growing demands. And such competition ultimately leads to a violent conflict which results sometimes in devastating wars. Gandhi, therefore, ardently advocated simplicity in our style of life and a change in the standards of values.

Gandhi, Progress and Prosperity

Concept of Development is vast and vicious. However development is goal-centric. Movement, as such, does not amount to development. In other words, the success and viability of the development strategy is to be defined in terms of social goal at hand. By and large, peace and degree of development is determined in terms of scientific technological progress. Gross national product (GNP) and per capita income are predominantly statistical. Besides they do not reflect the interest of that stay and marginalised in the developmental spectrum. The so called dividends do trickle down to the masses. Developmental strategies are mostly tampered with by class interest and the interest of the ruling polity. Hence it is imperative that while defining the goal and parameters of development, the interest of all the society be taken into account.⁹ Considered from this viewpoint, Gandhi's concept of development has a wider connotation. In his address to the teachers and students in 1916 Gandhi defined development especially economic development in following words:

"Does economic development clash with real progress, I take it, we mean material advancement without limit, and by real progress we mean moral progress, which again is the same thing. In a well ordered society, the securing of one's livelihood should be and is bound to be the easiest thing in the world. Indeed the test

of orderliness in a country is not the number of millionaires it owns, but the absence of starvation among the masses. The only statement that has been examined is whether it can be laid down as a law of universal application that material advancement means moral progress?"¹⁰ While analysing the Gandhian vision for clean and capable India we will confine ourselves not in a single aspect. We have

to stay focused and progress at individual level as well as mass level. These are: a) Individual response to Development, b) Promotion of Social harmony through Trusteeship, and c) legitimate means of controlling corruption.

Gandhi, Development and Individual Response

If there is no change in the attitude of human beings, the Gandhian concept of development will have no relevance in the society. This is why Gandhi laid much stress on individual behaviour.

If there is no change in the attitude of human beings, the Gandhian concept of development will have no relevance in the society. This is why Gandhi laid much stress on individual behaviour. He prescribed eleven rules to be observed by inmates. These are – non-violence, truth, non-stealing, brahmcharya, non-possession, bread-labor, non-palate, fearlessness, equal respect for all the religions, swadeshi, and removal of untouchability.

He prescribed eleven rules to be observed by inmates. These are – non-violence, truth, non-stealing, *brahmcharya*, non-possession, bread-labor, non-palate, fearlessness, equal respect for all the religions, *swadeshi*, and removal of untouchability. Of these eleven rules, three more important ones are: relinquishment of pride, greed and lust and are helpful for the development of individual response to his fellow inmates. Gandhi's prescription for pride

a non-violent society is clearly impossible so long as gulf between the hungry millions and the rich persists. The rich try to accumulate wealth by exploiting the poor.

is to reduce oneself to a cipher and make incessant endeavour to serve fellow human beings. Gandhi cautioned that man's greed leads to acquisitive temperament.

This acquisitive temperament is not good for the natural and moral upliftment of man. This tendency leads to excessive exploitation of nature on a vast scale. It leads to the growth of greed and lust more and more. This tendency dehumanises human beings. Gandhi had prescribed two observances against greed: non-stealing and non-possession.

In regards to non-stealing, Gandhi points out, "Every one of us is consciously or unconsciously more or less guilty of theft. It is theft to take something from one another even with his permission if we have no real need of it. Let us not receive any single thing that we do not need." In regard to non-possession, he pointed out that the rich have a tendency to acquire more and more without needing them while millions are starved for want of sustenance. Both the rich and poor are discontented, the rich with their craving to have more and more and the poor not having the necessities of life. If greed, pride and lust can be controlled, there will be no inducement to stealing or possessing more than what one needs and one will be well-

equipped to develop a moral sense to serve the world. And this will be more relevant to clean and capable *Bharata*.

Gandhi, Social Harmony and Trusteeship

Gandhi emphasised equitable distribution of income and assets to promote social harmony. According to him, a non-violent society is clearly impossible so long as gulf between the hungry millions and the rich persists. The rich try to accumulate wealth by exploiting the poor. Trusteeship is the best method to eradicate this contrast. The basic idea underlying trusteeship is quite simple. The rich man will be left in possession of his wealth, of which he will use what he reasonably requires for his present needs and will act as trustee of the remaining to be used for the society. The analysis of trusteeship implies that Gandhi makes a distinction between legal and moral ownership. Legally wealth belongs to the owners, morally to the whole society. According to Gandhi the central motive behind trusteeship is the kind of non-violent transformation.

Trusteeship is derived from three basic Gandhian concepts: Non-violence, *swaraj* and equality which are interlinked with each other. According to Pyarelal, trusteeship combines the public ownership of communism with private initiative of individualism and ensures economic equality which is life nerve of any progressive and radical system.¹¹ Trusteeship implies self-reliance, self-discipline and a certain autonomy for the producing unit. It is both ends and means. Trusteeship is not only an intermediary or transitional institution for something more fundamental and enduring. It is also a path, the only non-violent path through which economic transformation should take place. Thus the Gandhian concept of trusteeship gets a niche in the development scheme of global development, prosperity and peace. It was not self-centric, on the contrary, it was common people and welfare centric.

Gandhi, Legitimate Means and Corruption

Corruption has become a greater menace in our society. It appears ubiquitously geographically and in all walks of life. If there are any differences, they are of degree. What are the true causes of corruption? Is it due to the circumstances surrounding human conditions? Or is it intrinsic to human nature and an inevitable existential condition? How we may control corruption at the level of individual, society, legislature, the government and the executive machinery? It is not difficult to see the relevance of Gandhian thought and practices to the current problems of corruption. Truth and non-violence constitute the core of Gandhian values. His ethical, social, political, religious, and economic philosophy is reflected through these ideals. In the background of Gandhian ideology, corruption is a kind of violence because it deprives the poor of the basic necessities of life and increases the gulf between the rich and the poor.

As early as 1928, Mahatma Gandhi had written that corrupt practices would eventually be brought to the public knowledge and an attempt to cover them would meet with penalty. Writing in *Young India* on 6th December 1928, he expressed, “Corruption will be out one day however much one try to conceal it; and the public can, as it is its right and duty in every case of justifiable suspicion, call its servants to strict account, dismiss them, sue them in a law court, or appoint an arbitrator or inspector to scrutinise their conduct...” It would be interesting to note that a few days before his assassination, Gandhi referred to the issue of corruption in a prayer meeting in Delhi. He said, “Corruption will go when the large number of persons given to the unworthy practice realise that the nation does not exist for them to exploit but that they exist to serve the nation”. Gandhiji has thus emphasised the inner transformation as well as external pressure as legitimate means of controlling corruption.

We are aware of the seven deadly sins that Gandhi refers to, as the most spiritually perilous to humanity. They are wealth without work, pleasure without conscience, science without humanity, knowledge without character, politics without principles, commerce without morality and worship without sacrifice. Corruption arises when people are trapped into these seven deadly sins. If men are not satisfied with what they have, and want to grab more and more, it leads to corruption. Therefore Gandhi stresses the importance of the principle of non-possession. Acquiring and enjoying more than what one needs goes against the principle of non-possession. Gandhi not only taught this principle but practiced it in his life. We know that Gandhi shunned all the gifts of gold and silver, which were presented him in South Africa, and converted them into a trust for public service. He led a simple and honest life. Gandhi practiced the principle of non-possession, advocated *swadeshi*, pleaded for *Sarvodaya*, developed the concept of trusteeship, and championed decentralisation of decision making and governance. All these have relevance in the current context of pervasive corruption in the country.

“Corruption will go when the large number of persons given to the unworthy practice realise that the nation does not exist for them to exploit but that they exist to serve the nation”... seven deadly sins that Gandhi refers to, as the most spiritually perilous to humanity. They are wealth without work, pleasure without conscience, science without humanity, knowledge without character, politics without principles, commerce without morality and worship without sacrifice.

Gandhi, Village Republic and Self-Reliant Village

Grama or village is the smallest habitation unit and the basic centre around which all development activities are planned in India. From Vedas up to modern era village has been regarded as a fundamental unit of administration. It is the village and village occupations that require our attention to make the village community self-contained and self-sufficient. The entire essential services are to be made available to the community. The importance of village can be summed up in Gandhian observance from his famous slogan 'back to villages'. This has to be viewed in the context that he wanted to save millions of rural people from under work; he sought to provide them self-employment opportunities at the village only. This strategy exploits local talent and local raw materials for better and cheap production. He did not want that villages should suffer from darkness, filthiness and diseases.

Gandhi persistently advocated interdependence along with self-sufficiency. Self-sufficiency of village did not mean to him that every village was far away and separate from the neighbouring villages. Gandhi knew the fact that in an age of interdependence, no village could cut itself off from the mainstream of national life. Therefore, he emphasised, "to be self-sufficient is not to be self-contained... our aim is complete self-sufficiency, we shall have to get from outside the village what we cannot produce in the village, we shall have to produce more of what we can in order thereby to obtain in exchange what we are unable to produce. In the final analysis, then man is not born to live in isolation but is essentially animal independent and interdependent.

Gandhian concept of village was not anchored on the modern (urban industrial) notion of growth but on a post-modern perspective

of quality of life, which today people realised only after having experienced the catastrophe wrought by excessive urbanisation and massive industrialisation. Therefore, he ceaselessly insisted for clean and capable India on a pattern of village life wherein the quality was the crux¹².

Gandhi, Health and Hygiene

For a well ordered society, Gandhi regarded the observance of laws of health and hygiene essential. Gandhi regarded that ignorance and neglect of laws of health and hygiene are responsible for ills and diseases of the mankind. It is known to us that many of problems – both physical and mental – crop up due to environmental degradation. Water pollution, air pollution, noise pollution, effluents of industries and cities and decreasing percentage of flora and fauna are responsible for most of our health problems. Therefore, for our health, purity of air, food, soil, etc. is essential¹³. Gandhi regarded that there is an inevitable connection between mind and body. He regarded soundness of mind necessary for healthy body. It is a fact. We know that many of our incurable and chronic diseases can be cured through meditating yoga and mental concentration. He regarded natural care as the remedy of all types of ailments.

Nutrition was another problem on which Gandhi wrote and spoke frequently. Ever since his student days he experimented on himself with food and fasting. Nutrition took on a new urgency as a problem of Indian masses, when he realised with something of a shock that apart from their poverty, their food habits were responsible for their under nourishment. Gandhi held the opinion that personal, domestic and public sanitation system exercise and careful intake of right and balanced diet is necessary to be fit and healthy. He regarded natural cure

as the true cure of human physical ailments. We know that Gandhi laid stress on naturopathy, locally found herbs, four and five agencies of nature and soundness of inner soul as the basis of curatives. In short for health and hygiene, he advocated cleanliness, balanced diet, exercise and meditation as best medicines.

Gandhi, Food and Sanitation

Food and sanitation are important aspect of Gandhi's dream of clean and capable India. Gandhi was in favor of vegetarian food. He regarded it to be according to the natural mode of living. He regarded green vegetables, bread or chapatti, milk and fruit as perfect food. Though earlier Gandhi did not include milk as part of perfect diet, but later on, he came to accept the utility and nutritive value of milk. He did not accept the utility of non-vegetarian food. He regarded non-vegetarian food as inhumane and hazardous for health. Besides healthy and balanced dietary he opined that good and healthful life is possible only in cleanliness. He was in favour of cleaning tanks, rivers, wells, lanes and streets. He thought that for keeping village and town clean, everybody has moral responsibility. To depend on a certain person to keep village and town clean is not rational and proper. Everybody should join voluntarily in every cleaning programme of village and town without hesitation.

Gandhi wanted lanes and streets to be kept clean and rubbish-free. He said, "There are portions which can be turned into manure, portion which have simply to be buried and portion which can be turned into wealth."

¹⁴ He was very much concerned about the contamination of potable water sources. Due to excessive use or misuse today rivers, lakes or evens have ocean become polluted and hazardous. Gandhi said such kind of activities to be 'sinful misuse'.

These aspects of Gandhian vision are relevant for building of a clean and capable India.

References

1. Dutta, D.M.(1968) : *The Philosophy of Mahatma Gandhi*, University of Calcutta, p. 160
2. Malik, Saroj: Alienation : The Gandhian Solution, Gandhi Marg, Vol, 15, No.4, Jan-March 1994, p.443
3. Sharma, Shakuntala, Gandhism: Status and Approach of Politics, Gandhi Marg Vol, 15, No.4, Jan-March 1994, p.457.
4. Naidu, M.V.: The Modern Industrial-Military State: A Gandhian Analysis, Gandhi Marg, Vol, 14, No.1, April-June 1992, p.253
5. Gandhi, M.K. quoted in Baidyanath Mishra's 'Man at the Centre of Development', Yojana, October, 1998, p.34
6. Collected Works of Mahatma Gandhi (C.W.M.G.), Vol. 10, Government of India, New Delhi, p.139
7. C.W.M.G., Vol.13 p.231
8. Harijan, 24.2.1946, p.19
9. Singh, A (Edt. 2010) : *Morality and Social Justice*, "Social Justice and development-S.C. Panigrahi", New Delhi, Decent Book, p.399
10. Mishra, B (October, 1998) : *Yojana*, " Man at the Centre of Development", p 22 ;
11. Lal, Pyare (1997), *Gandhian Thought and Philosophy*, Ahmedabad, p.23
12. Harijan, 27.01.1940, p.428
13. Sharma, Rashmi (1997) : *Gandhian economics: A Human Approach*, New Delhi, Deep & Deep publications, p.117
14. Gandhi, M.K., *Village Swaraj*, p.181

Address : Department of Applied Philosophy,
M.J.P. Rohilkhand University,
Bareilly-243006, UP
Mob. : 9412978712

Clean and Capable India

Dr. M.S. Dadage

Mahatma Gandhi says, “I feel that India’s mission is different from that of others. India is fitted for the world. There is no parallel in the world for the [process of purification that this country has voluntarily undergone. India is less in need of steel weapons, it has fought with divine weapons, it can still do so.

India essentially karmabhumi (Land of duty) in contradiction to bhogabhumi (Land of enjoyment) : Young India 05-02-1925

“My attempt is not dogmatic but deliberate”

Mahatma Gandhi says,” I shall strive for a constitution, which will release India from all thralldom and patronage, and give her, if need be, the right to sin. I shall work for an India, in which the poorest shall feel that it is their country in whose making they have an effective voice; an India in which there shall be no high class and low class of people; an India in which all communities shall live in perfect harmony. There can be no room in such an India for the curse of untouchability or the curse of the intoxicating drinks and drugs. Women will enjoy the same rights as men. Since we shall be at peace with all the rest of the world, neither exploiting, nor being exploited, we should have the smallest army imaginable. All interests not in conflict with the interests of the dumb millions will be scrupulously respected, whether foreign or indigenous. Personally, I hate distinction between foreign and indigenous. This is the India of my dreams... I shall be satisfied with nothing less.” (Young India, 10-09-1931)

Mahatma Gandhi says, “I feel that India’s mission is different from that of others. India is fitted for the world. There is no parallel in the world for the [process of purification that this country has voluntarily undergone. India is less in need of steel weapons, it has fought with divine weapons, it can still do so. Other nations have been votaries of brute force. The terrible war going on in Europe furnishes a forcible illustration of the truth. India can win all by soul force. History supplies numerous instances to prove that brute force is as nothing before soul force. Poets have sung about it and seers have described their experiences.” (Speeches and writings of Mahatma Gandhi)

Mahatma Gandhi says, “I would like to see India free and strong so that she may offer herself a willing and pure sacrifice for the betterment of the world. India’s freedom must revolutionize the world’s outlook upon peace and war. Her impotence affects the whole of mankind. (Young India, 17-09-1925)

Mahatma Gandhi says, “Everything in India attracts me. It has everything that a human being with the highest possible aspirations can want.” (Young India, 29-02-1929)

Now It is necessary to define the concept clean, capable and then ponder over the challenges from the point of view of Gandhi’s dream. Gandhiji says, “I am convinced that if India is to attain true freedom and through India the whole world also, then sooner or later the fact must be recognized that people will have to live in villages, not in towns, in huts not in palaces. I hold that without truth and nonviolence there can be nothing but destruction for humanity”¹. He, however, humbly submits, “I have nothing new to teach the world, truth and nonviolence are as old as hills. All I have done is to try experiments in both on as vast a scale as I could”². He strongly believes in spirituality. He says, “If one man gains spirituality the whole world gains with him and if one man falls the whole world falls to that extends”³ and no human being is so bad as to be beyond redemptions⁴. According to Gandhi man does not become a satyagrahi by styling himself as such. The observance of pure truth alone makes him satyagrahi. This labor of love will have served its purpose, if even a few are inspired to take up a path less traversed and leave their foot prints behind⁵. (Satyagrah to commemorate the centenary of Satyagrah), On 15th June 2007, the “United Nations General Assembly unanimously resolved to observe October 2nd the birth anniversary of Mahatma Gandhi as The International Day Of Non-violence”⁶.

Gandhi says:

*“I Know the path,
It is straight and narrow,
it is like the edge of sword,
I rejoice to walk on it,
I weep when I Slip.
God’s word Is :
He who strives never perishes”*⁷.

Generally it is heard that cleanliness is next to Godliness but now it is quite clear that cleanliness is itself Godliness and India is definitely capable of doing justice thinking that where there is will there is a way or a will will find a way. Gandhiji believes both internally and external in cleanliness as well as in capability. The amalgamation of internal purification and external purification leads to perfect harmony which is core of real development of the whole nation and the world at large. It is of no use to have hero worship of the past but with the guidance of the past spirit of innovation is inevitable as such it is need of the hour to change according to change in time and situation. One is expected to accept new challenges and calamities which may crop up in future with drastic changes due to the fact that future is uncertain.

Gandhiji believes both internally and external in cleanliness as well as in capability. The amalgamation of internal purification and external purification leads to perfect harmony which is core of real development of the whole nation and the world at large.

The term clean refers to morally pure, virtuous or lead a clean life, it also refers to free from dirt or stain, it also means honest or fair or innocent, it also means to undergo or perform an act of cleanliness⁸. And the word capable means ability or strength to perform it.

The co incident is that Hon. Narendra Modi Prime Minister on 2nd October 2014 took broom symbolically and cleaned Valmiki Colony in which Gandhi made his home for 214 days in 1946-47⁹. And in his spirited speech he appealed to the responsible citizens to fulfill the dream of Mahatma Gandhiji. The prime minister urges the citizens to change their mindset to keep surroundings clean. He made up his mind to change Indians mindset and clean up India within five years that is by 2019, on the occasion

Hon Modi. appeals to the heart of the people to change the mind therefore India can do it that is the people can do it. He also cites the example of great achievement of our scientists who succeeded in reaching the Mars then obviously Indians certainly clean India.

of the 150th birth anniversary of Gandhi. He himself took the broom and swept a small area in the company of party colleagues and resident to symbolically launched the Swachha Bharat Abhiyan or Clean India Campaign and she also made use of dust pan to put the small pile of dirt into the

dustbin on 2nd October 2014 marks the 145th the birth anniversary of the Mahatma Gandhi who was a strong advocate of cleanliness. Hon Modi started the day by visiting Rajghat the Gandhi memorial on the bank of the river Yamuna.

The following are many challenges which are to be faced by country like heaps of dirt and filth in the streets, roadsides, ditches etc. another challenge is that of absence of dustbins, choked drains, poor state of most public toilets, spitting and urinating in the open as well as the general lack of commitment of the people to keep the country clean.

Hon. Modi. appealed to one and all to help to realize Gandhi's dream of clean India instead of expecting cleanliness only from municipal

sweepers. As John F Kennedy says, "Don't ask what the government contributes but ask yourself what you contribute to the government."¹⁰. In the same way Hon Modi. appeals to the heart of the people to change the mind therefore India can do it that is the people can do it. He also cites the example of great achievement of our scientists who succeeded in reaching the Mars then obviously Indians certainly clean India. This, he appeals the school students and from all walks of the life. It is an open secret that it is an herculean task but not impossible. Hon Modi compared his slogan clean India, to Mahatma Gandhi's war cry of quite India during the independence India. In other words it should be "movement of the People". According to Dr. B.R. Ambedkar great man is he who helps at time of crisis¹¹. In the same way all citizens are expected to pledge to clean the country within stipulated period. There is no shadow of doubt that India will achieve the goal for welfare of all people. In the opinion of Gandhi a satyagrahi expected to take oath after oath and in the training one is expected to bear the hardships of life considering suffering is law of life and expected to do constructive work which must be model to all. Such must be the style of life of 125 cores citizens of India. It is simply an appeal to all to donate dustbins to collect the dust which helps to clean our country. There is need to see the spirit of innovation in making use of wet dust and dry dust to create electricity or manure for agriculture which is the core of the development of the country. There is a challenge of choked drains which create many problems, at the same time poor state of public toilets, spitting and urinating in the open show general lack of social commitment. Mahatma Gandhi gave us message quit India, clean India. His dream of clean India is still unfulfilled. Swachha Bharat Campaign logo. Is not just a logo it is as if Gandhi has been watching us and contemplating as when will we clean india? Hon Modi would like to congratulate those who

have been engaged for this program earlier. They must have been in different forms and with different names but the initiative was to ensure a clean India. He also makes a point clear that he is a son of India and later on prime minister. He also speaks with the people of the India every month through media of radio which is named as *mann ki baat* that is dialogue with mind. He is so open and he has given his website to ask questions in order to keep India clean. He also involved Hon. Barrak Obama to have dialogue with people. He is expert in making use of new technology. He humbly appeals one and all to have lion share in participating and helping to clean India by 2019. It will a tribute to Gandhi on his 150th birth anniversary. It should not be a show or hypocrisy. It is the duty of 125 crores of people and it is not the job of government alone or Hon Modi alone. Gandhiji didn't clean every village but his commitment inspired millions to take up the task. It is the duty of common man to take up the task of cleaning India. Hon. Modi has invited 9 people and asked to invite 9 other people to come to public places and work towards clean India. Practically he invited Sinha, Sachin, Ramdev and asked them to invite 9 other more people. Thus he made initiation and convinced that it is a job of all people to share and participate in this great task. Once Murajibhai Desai also appealed to elite class to practise non-violence then automatically others would follow¹². However, it is common man's duty to prepare mindset to help others like God helps to those who help themselves.¹³ Gandhiji also says if ones sweeps one's own varanda then the whole world will be clean.¹⁴ Quit India movement was successful as the entire country was a part of that movement so also Hon modi asks 125 crores of people to join this campaign to make India clean place. So we should pledged to make India clean. He says "I will not litter or allow anyone to like litter". Other countries like USA, UK, Russia, Japan, Germany where no one is allowed to spit around or throwing

waste anywhere one wishes to. This is due to the dedication to cleanliness. It is need of the hour to give lesson to each and every citizen to clean India.

UN reports in May had said that currently 60 percent of India population practise open defecation which puts them at risk of disease like cholera, diarrhea, typhoid. India faces economic loss due to poor hygiene and sanitation. As World Bank report in 2006 said that India loses 6.4 % of GDP annually because of afore mentioned reason. A report say, that India is gold medalist in open defecation and 60 percent of Indian

Gandhiji didn't clean every village but his commitment inspired millions to take up the task. It is the duty of common man to take up the task of cleaning India

population clear their bowels in the open. This percent is roughly 58 percent of the people who practise open defecation all over the world. India loses 1000 children a day due to diarrhea deaths and reason for these deaths is open defecation and lack of proper sanitation facility. As per reports of water of river Ganga is unsafe for bathing because it contains faecal coliform bacteria in large amount and again the reason is open defecation in our country.

Poor hygiene and sanitation facility cost India 6 lacks lives annually because of diarrhea and not only this, lack of toilet, also expose one third of country women to risk of rape or sexual assault.

India accounts for sixty percent of world's resident without toilet. This is report of May given by World Health Organization and UNISEF.

Swachha Bharat Campaigns is also economic activity. Hon Modi. Says "the pursuit of cleanliness can be economic activity contributing to GDP growth reduction in health care cost and employment. If India and its tourist

destinations are clean it will bring more people and will also bring about paradigm shift in the country's global perception. If proper hygiene and sanitation will not become a practice in our country then no one will be able to save the country from health hazards and losses that will loom over the Indian populace in near future so let us make Swachha Bharat a Mass Movement and save our country from all the dangerous.

There is need of three capital D's one D refers to dedication another D refers to determination and third D refers devotion all these three Ds is achieve desired impact. Moral and spiritual values are to be practised in day to day life along with national filling for the prosperity of the country and realize Gandhi's dream of Clean India with sincerity and honesty. Hon Modi. Is true follower of Mahatma Gandhi's dream of clean India this is just good beginning which is considered as half success. There is no doubt that sustainable development and persistent development must take place in years to come. It ought to have been started long back soon after independence of our country. However, it is better late than never. If every citizen takes it as his duty and considers it is as social commitment and faces all challenges with courage and bravery then it is not at all herculean task. Cleanliness must be accepted as religion which is nothing but Godliness and righteousness it is better to remember the lines of Robert Frost

*"The woods are lovely deep and dark
I have promises to keep
Miles to go before I sleep
And miles to go before I sleep"*¹⁵

The above lines are aptly applicable to our Hon modi. I think, "heard melodies are sweet but unheard are still sweeter"¹⁶ says John keats. Cleanliness brings humanity closer and obviously unity, integrity and what not. It is like a game which brings the spirit of oneness and wipes

out all superstitious believes even to the extent of political differences. If Bharat Mata blesses all with cleanliness than no question remained unsolved. "Men may come and men go"¹⁷ but cleanliness will go forever which is the need of the hour thus India is capable of keeping our country clean and remains model by facing all challenges at micro and macro level and it is the only way to see and develop national integration which helps to have world peace. India can play pivotal role in all respects.

Notes:-

1. Pyarelal, The last phase 1968, Vol, II P-444
2. Bose, N.K., Selections from Gandhi Navajivan, 1948, p-30
3. Young India December, 1924
4. Bose, N.K., Selections from Gandhi Navajivan, 1948, p-150
5. Centenary of Satyagrah Volume
6. International day Non-violence UN General assembly on 15th June 2007
7. Sharma Ed, Gandhian way Peace Non-violence and Empowerment p-16
8. Concept meaning as given <http://www.freedictionary.com>
9. 2nd October 2014 speech initiation of Modi's works Business standard
10. John F Kennedy statement
11. Dr B.R. Ambedkar, "Who is Great Man, Selections from Effusions"
12. Murarajibhai Desai's Statement In regard the non-violence
13. Statement from the Bible
14. The Divine thoughts of Gandhi's
15. Lines from Roberts Forest Poem
16. Lines from John Keats.
17. Lines from Tennyson.

Address: Principal, Jaikranti College
Dyaneshwar Building, Katraj
Pune-411046

Relevance of Gandhian thought in Rebuilding a Clean and Capable India

Dr. N. Gopalakrishnan Nair

Gandhiji is rightly considered the embodiment of India's cultural tradition. He fully imbibed the beliefs, values customs and artifacts of his country, transmitted from generation to generation. He gave the entire credit of what he stood for, to the wisdom of ancient India, and he has never been diminished by that admission.

The word 'Culture' in classical Sanskrit is 'Sanskriti' which means 'to purify', 'to transform', 'to sublimate', 'to mould' and 'to perfect'. From time immemorial India's culture has remained human culture – 'Manava Dharma' or 'Manava Sanskriti'. Mathew Arnold Western philosopher poet of great eminence defines culture as 'sweetness of light' – it is enlightenment. All through her history an ideal has been running through the background of this great country. This ideal embraces each and every area of human activity – politics, social culture, intellectual culture, aesthetics etc. Spirituality is at the base of all our institutions, especially religion. Gandhiji had a strong conviction that India's mission is different from that of other nations. Ancient India which consisted geographically of the major portions of Asia, produced the most widely accepted religious orders of the world. So, Gandhi believed that our country is fitted for the religious supremacy of the world. There is no parallel any where else for the process of purification that the country has undergone. The spiritual and intellectual tradition of India holds that there is only one source for the universe which has infinite manifestations.

Gandhi had assimilated in his being, all that was sublime in India's cultural tradition. The seeming simplicity and transparency of his life and single minded devotion to non-violence has cloaked innumerable deep currents of ideas, disciplines, loyalties and aspirations. These elements made him at once a saint and a revolutionary, politician and reformer, economist and man of religion, educationist and sathyagrahi, devotee alike of reason, Hindu and inter religious, nationalist and internationalist, a man

One who is bound to realize God has to make himself pure. Only one who is spiritually, mentally, intellectually and physically pure can attempt for God realization. The process of purification involves the purification of the environment in which one lives.

of action and dreamer of finest dreams about the world. So each area of human endeavour is equally important. Gandhiji said “I have nothing new to teach the world. Truth and non-violence are as old as hills”¹. Life’s mission for Gandhi was God realization. His God is ‘Truth’ and ‘Love’. “God” says Gandhi, “is ‘ethics’ and ‘morality’, God is fearlessness, God is the source of light and life. God is conscience. He is even atheism of the atheist. For in his boundless love God permits the atheist to live”². In order

The colonial forces were much enthusiastic in doing away with our tradition, especially, our education system, which has been recognized by the whole world as the best. The education system along with an unbreakable village economy had made ancient India a unique force.

to realize the truth underlying at the base of various constituents of life, Gandhi entered a process of experimentation which came out as one of the deepest passions of his life. He experimented with food and health, and life style and cure and hygiene, and evolved a very effective system of

health and hygiene, a system with which man can do away with the evils of modern medicine. His experimentation with clothes and dress resulted in a movement which added strength to freedom struggle. His experimentation with a political and economic system evolved a sustainable economic system. His experiments in education gave birth to an infallible system of education. His experiments with journalism produced the world’s most ideal journalist of all times. His experimentation with revolution and organization remains in the annals of history as the most worthy of emulation. In matters of ethics and spirituality as an integral part of life, he has no parallel. With relentless logic and

courage he broke new ground in every direction and yet had the depth and width of mind to separate defeat from success, the false from the true, the unreal from the real, integrate all his dreams and achievements into the unity of his personality.

One who is bound to realize God has to make himself pure. Only one who is spiritually, mentally, intellectually and physically pure can attempt for God realization. The process of purification involves the purification of the environment in which one lives. So Gandhiji as part of his efforts for self purification made a continuous striving for the purging of the environment. He aimed at the purification of social environment, political environment religious environment and all other areas of human endeavours. “Just as physical purification is necessary for the health of the body, even so spiritual purification is necessary for the health of the soul. In fact, the necessity for physical cleanliness is in inverse proportion to the necessity for spiritual clumsiness. That is to say, spiritual cleanliness means automatic physical cleanliness”³ He further says “we should know that our mind is like our body, which gets soiled every day and which we clean every day”⁴.

Gandhiji considered cleanliness is next to Godliness. “Cleanest air, cleanest water, simplest food and clearest thinking which really means communion with God, are the four laws, the first three following from the fourth”⁵. These alone are not sufficient to keep the purity of mind and intellect. Commenting on hatred, Gandhi said, “Real leprosy is the unclean state of mind”⁶. Gandhiji is of opinion that cleanliness must emerge from the mind.

For the purification of the mind, intellect and spirit, an education system that brings the best out of a person’s body, mind and intellect is imperative. Even without any formal education the Indian villager achieved it in the past, as a part of the nation’s high moral and ethical

tradition. It has been widely accepted that India's ancient education system was of a very high order. Gandhi makes the following remark about the high moral and ethical attainments of the so called illiterate villagers. "A peasant earns his bread honestly. He has ordinary knowledge of the world. He knows fairly well how he could behave towards his parents, his wife, his children, and his fellow villagers. He understands and observes the rules of morality. But he cannot write his name. What do you propose to do by giving him a knowledge of letters? Will you add an inch to his happiness? Do you wish to make him discontented with his cottage or his lot? And even if you want to do that he will not need such an education. Carried away by the flood of western thought, we came to the conclusion without weighing the pros and cons that we should not give this kind of education to the people"⁷.

Gandhi who believed in an education system that brought the best out of a persons body, mind and spirit, was the first man in India to find out how debasing to Indians was the education imported from the west. He had the right conviction that this system of education has enslaved the nation. Gandhi said "It is worth noting that, by receiving English education, we have enslaved the nation. Hypocrisy, tyranny etc have increased. English knowing Indians have not hesitated to cheat and strike terror in the people"⁸. As early as 1926 Gandhi wrote about this transformation of a whole country in young India, "Higher education makes us foreigners in our country and the primary education being practically of no use in after life becomes almost useless. There is neither originality nor naturalness about it. It need not be at all original if it would only be aboriginal"⁹.

The colonial forces were much enthusiastic in doing away with our tradition, especially, our education system, which has been recognized by the whole world as the best. The education

system along with an unbreakable village economy had made ancient India a unique force. The only way to establish political supremacy of the west on India was the cultural enslavement. "During Lord Macaulay's tenure as member of the supreme council of India from 1834 to 1838 he introduced English medium education in India, through his famous Minutes on Indian Education in February 1935"¹⁰.

Social scientists, anthropologists, linguists, psychologists and educators all agree that mother tongue-first language is central to the whole process of human activity. It is instrumental in the growth of man

as a social being by enabling him to record, interpret and extend his experience. Man sorts out his universe and gives intelligent direction to his life through language. Our entire social structure is mediated through language. Language is the main channel through which a child learns to act as a member of the society, in and through various social groups,

the family the neighbourhood and so on and, to adopt its culture, its modes of thought and action, its beliefs and values. The symbiosis of mother tongue-first language and mind is so profound that it has played a central role in the physiological development of the brain.

Ever since the emergence of language, it has been serving the interest of the most powerful

His 18 point constructive programme was to save India from the evil impact of the development after the western model. The programme of Gandhi which embraced all aspects of life was confined to the consideration of a few. Unfortunately after independence these programmes were marginalized from the socio economic and cultural agenda of the nation.

concentrations of religious, cultural, socio-economic and political powers. Colonization in 19th century brought about a global restructuring of change in the social and economic relations among the peoples of the world. In India the colonial forces brought about educational, cultural, scientific, technological and economic transformations. The man who worked behind the evil design was Lord Macaulay. The following statement, attributed to him, is enough to prove it. "I have travelled across the length and breadth of India and I have not seen one person who is a beggar, who is a thief. Such wealth I have seen in the country, such high moral values, people of such Calibre, that I do not think we would ever conquer this country, unless we break the very backbone of the nation, which is the spiritual and cultural heritage and therefore, I propose that we replace her old and ancient education system, her culture for if the Indians think that all that is foreign and English is good and greater than their own, they will lose their self esteem, their native self culture and they will become what we want them a truly dominated nation"¹¹. When the British parliament accepted the report of Macaulay he made recommendations to utilize all funds for imparting to the native population a knowledge of English literature and science through the medium of English language.

Though Gandhi had taken advantage of English education, he soon recognized its debasing effects on the people of India. After having made an indepth study of the role of language in the socio-cultural, intellectual and, psychological development of the child, he declared that an appropriate education system must bring the best out of a person's body, mind and spirit. He states, "... to give millions a knowledge of English is to enslave them, The foundation that Maculay laid of education had enslaved us"¹². Gandhiji was of firm conviction that, if this continues it will bring about the ruin of all that is sublime in our culture.

Gandhiji said, "The curriculum and pedagogic ideas which form the fabric of modern education were imported from Oxford and Cambridge, Edinburgh and London. But they are essentially foreign. The greatest disaster that the system has brought about is that, it has broken up the continuity of our existence. All sound education is meant to fit one generation to take up the burden of the previous and keep up the life of the community without break or disaster. The burden of the social life is continuous and if at any stage our generation gets completely out of touch with the efforts of its predecessors it is lost"¹³. Gandhiji knew that, "western education is a baby, a hundred and fifty years old. And yet it has reduced Europe to a sorry plight"¹⁴.

Gandhi's vision of education excels the most modern findings of the theories of learning and culture. The system we follow today makes the students deal with things with which they are strangers. Informal learnings in the past influenced the learners much more than formal learning in the class rooms. Gandhi wrote, "it is not through text books that a lad learns what is right and what is wrong in the home-life. He is never taught to have any pride in his surroundings. The higher he goes, the farther he is removed from his home, so that at the end of his education he becomes estranged from his surroundings. He feels no poetry about home life. The village scenes are all a sealed book to him"¹⁵.

Gandhi envisaged the shape of the world and India, a hundred years ago and it has become true. He cautioned his followers against this emergence. His 18 point constructive programme was to save India from the evil impact of the development after the western model. The programme of Gandhi which embraced all aspects of life was confined to the consideration of a few. Unfortunately after independence these programmes were marginalized from the socio

economic and cultural agenda of the nation. Our Economists were all educated in the west and had either lost their roots in their native land or they had to obey their higher authorities for maintaining themselves in the position they held.

Economist like kumarappa whose findings were much more relevant in the Indian contest were replaced by the economic theories of the west. Kumarappa who was in the policy making body of India after independence had to go out of it. A sustainable or permanent economics of kumarappa, which could solve many of the problems facing the present day world like ecological degradation, waste management, poisonous food, pollution of air and water, has been very conveniently ousted by those who were at the helm of affairs.

Gandhiji's spinning wheel which was symbolic of independence, spiritual/moral growth and cultural identity became only exhibits in museums. The so called economists even fail to understand that "political economy is no science at all"¹⁶. They were totally ignorant of Gandhi's and kumarappas economic concepts, appropriate form of development for India and tried to ignore them. They, by mistake, thought that these will be left to oblivion in future. Economics of permanence or sustainable economy has become an interesting subject of study in the west today.

It was at a time when Gandhi had no idea of whether he would come to India, to take up the leadership of National Movement that he had drawn the shape of India's future through his seminal book. *Hind Swaraj*, Which excels all manifestos, so far produced. Each and every point that is perused in the book is based on what he knew about the rich tradition of India in every branch of knowledge. Gandhi had also learnt the theories of Adam Smith who is considered the father of modern economics. He had read Das Capital to understand the socialist thinking. He was well aware of various streams

of thought in economics, psychology, morality and ethics.

We conveniently forget that we have had great Mathematicians and scientists like Yajnavalkya, Aryabhata and Bhaskara. We still do not give much attention to the contributions of Charaka and Susruta the great men of medical science. In the language classes at higher level we teach the theories of the linguists like Leonard Bloomfield, Ronald Wardaugh, Noam Chosky and other Western linguists. We fail to understand that Panini is the father of modern linguistics. We are still to acknowledge that Bharata Muni's aesthetic theories have still the unquestioned authority. It seems that we know nothing of the political and economic strategies of Kaudilya.

In epic, drama and various other forms of literature, India's contributions remain the richest in the world. There is no men of letters who excels Vyasa, Bhasa, Kalidasa, Valmiki, Bhavabhuti, Saktibhadra and the long array of poets and philosophers. Conveniently classic Indian literature has been banished from the main stream of Indian education. In addition to this each and every region of our country is proud of its rich folk tradition which holds infinite wisdom and practical value, we have also discarded them.

For everything in life we imitate the west. There seems to be no end to this. The words of Gandhi in 1927 seems appropriate today more than that of those days. He said, "my resistance to western civilization is really a resistance to its indiscriminate and thoughtless imitation based on the assumption that Asiatics are fit only to copy everything that comes from the west"¹⁷.

In this context it is better that we remember the words of Arnold Toynbee, the greatest historian of the 20th century about Gandhi. "Gandhiji was one prophet who was willing to live in the slum of politics." Still he could remain unblemished. The only way for the

liberation of India into a land of cleanliness and capability as dreamt by Gandhi is to bring about a Gandhian revolution. Gandhi said, “India was once a golden land, because Indians had hearts of Gold. The land is still the same but it is a desert because we are corrupt. It can become a land of gold again only if the base metal of our present national character is transformed into Gold. This transformation is a little word of two syllables – Satya (truth)”¹⁸.

Gandhiji’s India is essentially a “Karmabhoomi” (a land of duty). In contradiction to what Gandhi said, it has become a’ Bhogabhoomi’ (land of enjoyment) after freedom. The struggle for political power has made a considerable section of our leaders at a level of deplorable deterioration. Commending on the fight for political power among political parties and individuals, Gandhiji remarked a few days before his assassination, “If it (congress) engages in the ungainly skirmish for power it will find one fine morning that it is no more”¹⁹. The conversion of India into a *bhogabhoomi* has made it at the top of corruption.

We know well that the country is going through a period of hitherto unknown and unexperienced storm of national crises. The most crucial among is increasing corruption at all levels of public life. Even our highest institutions of law and justice are losing accountability. our youth wearing the cloak of western civilization are fast losing their identity and remain at a loss to understand what to do to make life meaningful. The only way out from the crises as these is to make effort to realize an India of Gandhiji’s dreams envisaged in Hind Swaraj with appropriate changes that the present age demands. We have to reread and reinterpret the work which is a critic of modern India and ends up in fresh ideals to the nation, to make ourselves clean and efficient we have

to bring about a radical change in our thoughts and actions in every area of life leading to an appropriate liberation from the corporate civilization. We have to weld the modernity to the pristine culture broken deliberately by the British and the post independent regime.

Bibliography

1. Autobiography of Gandhi, My Experiments with Truth
2. Young India 5.3.1925
3. Harijan 6.9.1935
4. Collected works of Mahatma Gandhi, vol 49:3 April 1930. p.43.
5. Collected Works Vol:57:5 Sept.1932-15 Nov. 1932. P 4001
6. Collected works Vol 97:27 Sept. 1947 -5 December 1947 p 152
7. Hind Swaraj
8. Ibid
9. Young India 21.11.1926
10. Stephan Evans “Macaulay’s Minutes revisited.” Colonial language policy in Twentieth century India. “journal Multilingual and Multicultural Development 2002(23) # PP 260 281.
11. Macaulay British Parliament 1835
12. Hind Swaraj
13. Young India 20.3.24
14. Ibid
15. M.K. Gandhi Paraphrase of Unto this Last by Ruskin (translated from Gujarati by Valji Govindaji Desai)
16. Young India 1.9.21
17. Unto this Last (paraphrase)
18. Ibid
19. Harijan 1.2.1948

Address: Chairman, Kerala Harijan Sevak Sangh
Harivihar, Pallickal, Nooranad P.O.
Kerala - 690504

Articulating Gandhian Dream of Clean and Capable India

Dr. Parmanand Singh

The cleanliness concept of Gandhi includes not only cleanliness of body but nurturing goods of habits, both of which are part of internal cleanliness. The other part of this cleanliness concept is outer world cleanliness which include cleanliness of the house and habitation and this helps in creating a good neighborhood well ordered and disciplined enough for doing excretory activities on their own and making for civil amenities, if possible for all individual and provision for activities or community action for this, It thus, provides for better clearness and cooperative management of village tank, watershed system, and general awareness toward diseases that takes its ugly course through use of contaminated food intake and spurious and dirty drinking water. (K.L. Mashroowala, 1935 Deriving Gandhian Ideas from activities of Lok Sewak Training schools, at vilely parley B. Bayt. 1935]

On the capability question, Gandhi Concentrates too much on basic education, manual labour/physical fitness, national intake habit, nutritional quality at large.

Thus, the two ingredients of development process are cleanliness and healthy living (Arogya) and Samarthya- the capability gets their expression via Threads of cleanliness and healthy living of which one thread is bodily cleanliness and other is healthy habits. These belongs to internal part of cleanliness drive and the third is consciousness of surroundings i.e. cleanliness of human solid excreta watershed management and cleanliness of common drinking water out lets such as wells, ponds and disease awareness for the masses by naturopathy etc. This naturopathic treatments and the its knowledge of practicing good habits, via creating good effects and drive for cleans healthy code of course conduct instead of wrestling exercises via a vis community exercise of Asanas, Pranayam and Yoga, all these are saintly activities. Those who make these exercise their professions are

As we extract our bodily poison through urine and human solid excreta in the same way by Asanas and Pranayam we remove the dirt of internal of internal part body organs and speed up blood via accelerated oxidation in the tissues This means increased intensity of purification of blood and in that way enriches our memory, power of concentration and thus improves positively bodily action and thinking process through the process of the healthy mind and increased activities with tireless efforts advocate Gandhi advocates evaluation of the education scheme prevalent in India

ugly players doing social sins then defeating the very purpose of these activities in internal purification of body, mind and thus the thinking process. Commercial social works for health hygiene awareness, creates social sins ultimately Gandhi said this defeats purpose of internal purification of human being.

As we extract our bodily poison through urine and human solid excreta in the same way by Asanas and Pranayam we remove the dirt of

The dominant macro economic paradigm that came from investigating the record on basic social services of some thirty developing countries and the data that come from this research on development gives an analytical argument around two potential synergies at macro level between poverty reduction, human development and economic growth and at micro level between intervention to provide basic social services.

internal of internal part body organs and speed up blood via accelerated oxidation in the tissues This means increased intensity of purification of blood and in that way enriches our memory, power of concentration and thus improves positively bodily action and thinking process through the process of the healthy mind and increased activities with tireless efforts advocate Gandhi advocates evaluation of the education scheme prevalent in India, He opined that education that

allows us greater freedom from ill activities leads the human being and their body to salvation which comes from purification of heart and mind via controlling power over organic pleasures. It also teaches us the fearlessness and its practice via self sufficient and self dependent life styles and these gives us freedom from dependence and slavery. Education gives vs

pleasure of free and independent life, ability to enrich our own working efficiency, knowledge of argumentation, and own reasoning on any issue. Education without these ingredient are worthless and injurious and thus half way done and education for that is essential.

Our education system, therefore, must be organized keeping in mind 80 to 85 percent people's living conditions and therefore knowledge of family activities and making one a good farmer and activities efficient enough in auxiliary economic activities and thus helps industrial activities networking in the vicinity of village life must be related to these activities and it should be the touching stone of educational system in India. Thus enriching the capability domain with local knowledge, use of neighborhood endowments, and its best application must be central point of capability building domain in the Gandhian system of industrialism.

The deducing Gandhian development modeling on above Gandhian ideologue on the issue of cleanliness and capability has been done by kishorilal Dhanpat Lal Mashroobala who inspired by shree Gokulbhai Bhatt's incessant desire to open a lok sevak schools where several hundreds of volunteers would be educated and trained in rural development and management via voluntary service dedicated to the nation(-) a selfless goal for nation building at velley Parley, in B, Bay, Maharashta and where with Kaka Saheb Kalelkar endorsement this schematic endeavour to build a new India on the foot prints of Gandhian model of villegisation which is nothing but Green Model of development. during the days of 1935 on wards came in to being

II

The green model of development for rural reconstration in India.

I call this, model green in the sense that it attempts to eliminate human poverty not via acquisition

but via internal purification based on economic activism where in human being catalysed into action for helping them-selves, thus energizing the social action for economic upliftment and human well being. Here every one works for improving their own economic and social lots without injuring others. Here the motive force is achieving new heights via positive ordering of human activities and working forward on the value scale and then creating a creative and imaginative social individual working and cooperating each others and thus come into being a creative and achieving not an individual not acquisitive and maximizing one, capturing resources and opportunity of others, The opposite to this violence and domination based dependency model of Growth, Gandhian model advocates self designed innovation model where individual freedom of activities is the central point cleanliness ideals both internal and external are its tack and capability building in human being irrespective of caste, creed, religions and colour and racial differences are its strategy Swadeshi, use of local experience based knowledge and resources, are its design and Sarvodaya its goal. It thus brings prosperity and happiness to all. It brings tears to eyes of none everyone has a chance and opportunity to grow in free, peaceful and service seeking atmosphere It thus brings greenery in all human beings life without any exploitation and creates climate of fearlessness Thus creates evergreen situation of free living base to all without injuring their cultural base. The social groups remains alive in such a situation and through inter group and intra group interactions it creates a baring vibrating ground for self sufficient life styles and helps the democratic process and thus making development design decentralized and people oriented. It fills in health life and in blood to all development decisions and thus making creative condition for all buds of life to bloom. This model of development this way become

the green model of development by several rural reconstruction works by voluntary action of Loksevakas.

Two leading economists working at UNICEF and UNDP Santosh Mehrotra and Enrique Delamonica view that the central building blocks of any human development strategy is access to education, health and safe drinking water supplies to common man.

The dominant macro economic paradigm that came from investigating the record on basic social services of some thirty developing countries and the data that come from this research on development gives an analytical argument around two potential synergies at macro level between poverty reduction, human development and economic growth and at micro level between intervention to provide basic social services. So the demand of economic development is to integrate macro economic and social public policy, Fiscal, monetary and other macro economic policies be made compatible with social sector requirement of the common people.

The orthodox writers on economic theory and international financial institutions disallows flexibility, on this score but the demand of development requires more activism and peoples oriented investment and flexibility at greater scale as articulated in Gandhian Green model.

III

Western model and its design failure in India:

The Western model and its dominating role allows curtailment of humans freedom, wretched conditions of work making class exploitation and reckless use of resources the poor use of slave labour and build surplus by that way. Such development will not provide prosperity to all because wage cut is their golden rule and seeking high profit is their goal of overall development

process. Taking lessons from Ruskin and being impressed by Moral appeal of Carlyle Gandhi adopted the disobedience model of protest following The moral's deeds of disobedience Gandhi advocated a model of growth where in the village Swaraj is The motives force for development where development is freedom. Freedom from domination exploitation and violent subjugation Gandhian finds out his own path of green model of growth via rural reconstruction process. It is creation of policies as per peoples perception and mobilize people for common work programme of up liftment of the workers and creates good neighborhood via clearing for good surroundings

But Bretton wood institutional framework disallows it, since it is based on domination based delivery mechanism. Thus propounding a clientalistic domain of politics and not true democracy in terms of Gandhi's swaraj – which originates from righteous action and creation of opportunity of development for all and its ability to generational shifting of opportunity of development i.e. its sustainability.

So, any scheme of policy makers engagement for alternative macro economic and growth oriented policies demands this cleanliness and capability expansion model of Gandhi– where Arogya has its key role. Based it on healthy physical and mental footing of capability building process via cleanliness at its centre stay Santosh Mehrotra, Errich Delamonica calls for alternative macro economic and growth oriented policies on such lines. this could lead to the expansion of human capability and fulfillment of human rights. The additional aid is not needed to eliminate poverty but it requires shifts in area of aid policy via decentralized Governance, health awareness, and wider education policy, private, public and people action mix service provision are the basic pre requisites to achieve the goals of human development.

IV

The Gandhian Model : His schematic functional relation as follows

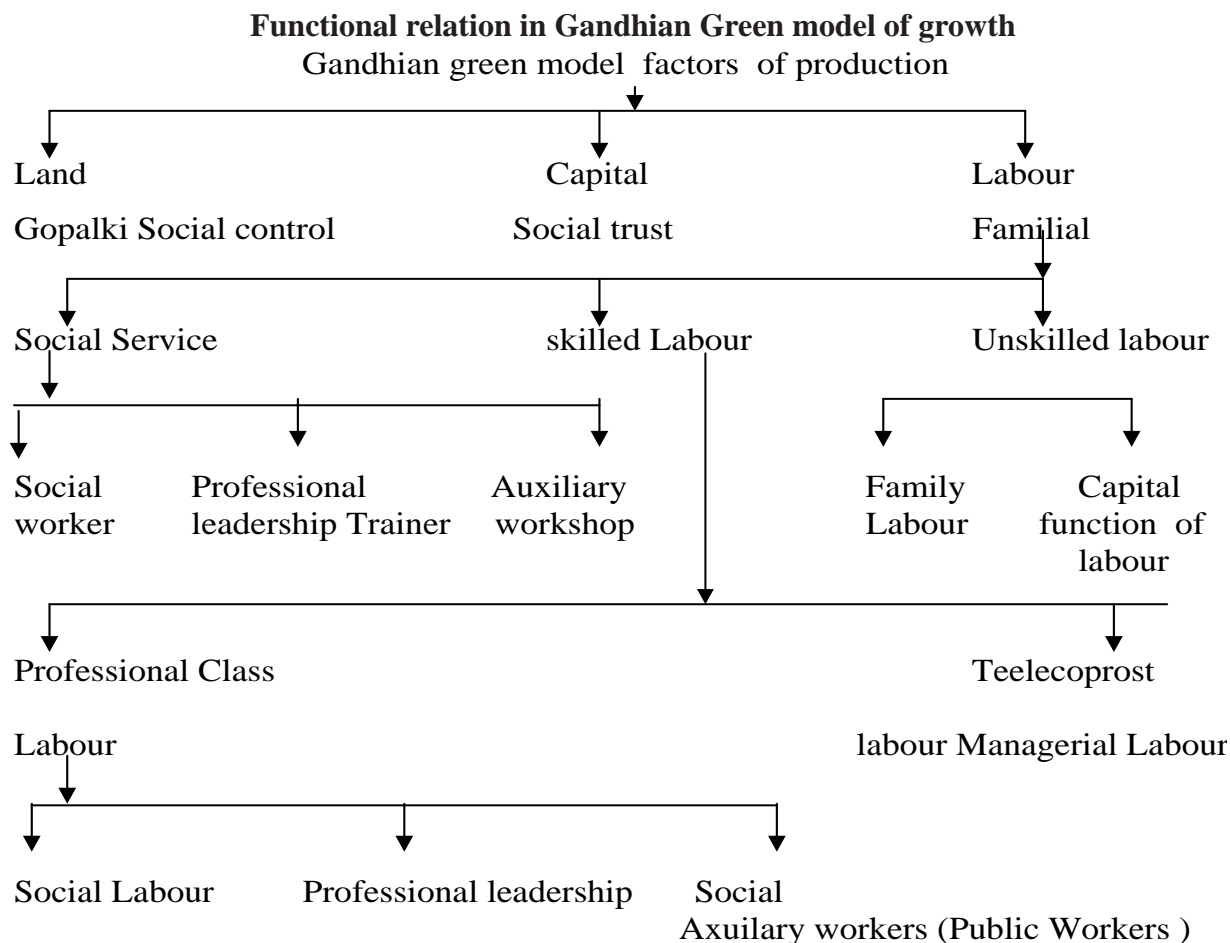
Thus, we see that Gandhian threads of cleanliness arogya and capability building is central point even in minds of western thinkers in either way as an alternative schematic design for development. The only difference is that Gandhi centred on voluntary action and demand the training programme for Lok Sevak and creation of Lok Sevk Sangh to champion cause and a course for rural reconstruction via massive and correlated rural reconstruction work programme engaging the common man in it. It thus set a different tone and treats the development of the masses a process of leaning via working for the good of the community. He code of conduct for Losevak to achieve the goal of Sarvodya. His gave a varta is the best example of it.

Gandhi has mode his model by this way and I call it a green model of growth Ram Manohar Lohia a got impressed by Gandhian Model and said “Gandhi was march ahead of Karl Marx by giving a building blocks for reconstructing rural India in place of blood shed as construed in Marxian revolution for sake of peoples progress Gandhi advocated educating the masses and his cleanliness Programme is nothing but is nurturing good habits life He adopted voluntary action which is non violent in action and violent in spirit and all inclusive in its design. The creative individual of society in action can convert ills driven society via constructive society via cleanliness habits and action,i.e. Arogya and Samarthya Sadhana. It is the evil of rent seeking behaviour that wee learnt form west be avoided using Gandian Talisma as mirror Sefless Growth

The Gandhian treatment of development design that comes through this way are as followers:

Gandhi wanted this divisionary labour forces be unified via strengthening the familial base of rural production process.

Unskilled family labour performs budget function and capital function is done by labour who migrate to perform utility labour. Max



weberian's social formation of capital theory says.

Gandhi can better be understood by weberian analysis of social capital formation theory in a unified villegism against industrialization to provide work and income opportunity for masses via use of abundant rural labour which western model treated as critical labour for maintenance of family expenditure. Thus, they live for expenditure subsequence and treated as redundant and surplus. Industrialization, urbanization based dependency model treats such unlimited labour force as enormous leabour power and advocated use of their potential for capital formation Lewisan unlimited labour

supply theory treat them and use them for capital formation in industrial centres of cities and their migration is treated as on engine of growth. In Gandhian system it is integration of labour power and unified familial relation that is the social power of work culture where duty prevails over right and welfare and greater good of all is moto of production. not self gain It thus, underlines unified humanism in all activities and thus projects a selfless growth of all, Sarvodayas which will come via such humanistic relation of production, and create a new creative society in around Toynbees's one world and India concept taken from Gram Swaraj of Mhatam Gandhi Sri Aurbindo's "concept of the idea of humanity

creation function and Pittman Sorokinmay's concept of "Reconstructing the Humanity model are akin to this Gandhian Green Model.

The aid centric growth of today is based on strategic blend of domestic governance returns and macro economic policies could contribute significantly to reduction of human poverty but the inherent inconsistency between increased aid that donors committed since 2001 and their adverse trade policy cause the real problem. Gandhi had very much hypothesized this situation much earlier when he advocated a liberal system with a warning "Keep your doors windows open but beware that your feet must not be uprooted by the alien hurricane. FDI based growth is growth on other terms which can never help in the long run. Therefore, even in era of globalization, green path of Gandhian rural reconstruction will help and guide, us, since its strategy is Swadeshi which demands scholarship based citizenship, a new type industrial innovation and its inherent demand is advancement of economic freedoms and singling out the tomorrow's projects for the good of common man.

Hawi II pannel discussion on the issue of Swadeshi in Association with association of Asian studies in 2011 has found intellectual momentum in the Gandhian schemes of swadeshi based Sarvodaya in the itme of Nations

The Swadeshi movement articulated virtually every major idioms that would define freedom struggle for Indian nationalism and even post colonial democratic politics and economics of twentieth. Century India paved the way for twenty first 21p century growth on Green model strategy of Gandhian concept clean and capable India.

The idea of boycotting the west and promotion of Swedshi commenced especially in textiles, appeal to labour use of folk motifs in song and story, new literature, poetry and drama in political protest were in fact to provoke a de-territorial politics of affinity generated by Swadeshi over and against imagined community of nations was its greatest legacy. So unless

we recognize Swedehsi Strategy of Gandhi as knowledge able internationalism on exploration of the traveling and connective intellectual international dimension the Swadeshi movement and his green model growth system can not be understood properly.

One can find Swadeshi as a perceived affinity between anarchism and post modernism and Hindutva, but fashioning swadeshi Clothing among women in colonial north India empowered them much. And they participated at lanes in the movement for freedom of India.

So, in order to get rid of FDI for pursuing countries growth up ward and solve poverty and unemployment issue facing the nation a new strategy of green growth model of Gandhi is the best alternative to bring in force axuliary captialist life among the masses via provision of basic services of access to educational opportunity, health and drinking water supplies. These are the central building blocks in any human development strategy. The Gandhian dream of clean and capable India can be capitalized in reality via his green model of growth only.

References

- 1 Tynobee Arnold : One world India – As quoted from Green Swaraj of Mahtma Gandhi Archindo Sri "The Ideal Humanity
- 2 Pitrim Sarokinney "Recons treating humanity.
- 3 Mahatma Gandhi
Harijan Sevak 20.03.35 Page : 46
- 4 IBID – Harijan Sevek 23-3 39
- 5 Baiiy C.A. the origin of swadeshi (How industries) cloth and Indian society (1700-1930)
- 6 Gandhi's "Swadeshi most in time of Nations: as Idea of India. Sumit Sarkar Ep. Co.
- 7 Majapra Kris act 2012 swadeshi as Knowledgable internationalism 1903 – 1921 in Begjal.
- X Santosh Mahrotro Eric Delma
- Xi Elucidation human povrty mean economic and social policies for equitable Grwoth (2007) orient long man Pvt. Limited. ■

मेरे सपनों का भारत

मैं ऐसे भारत के लिए कोशिश करूँगा, जिसमें गरीब से गरीब आदमी भी यह महसूस करे कि यह उसका देश है, जिसके निर्माण में उसकी आवाज का महत्व है। मैं ऐसे भारत के लिए कोशिश करूँगा, जिसमें ऊँच-नीच का कोई भेद न हो। जातियाँ मिलजुल कर रहती हों। ऐसे भारत में अस्पृश्यता व शराब तथा नशीली चीजों के अनिष्टों के लिए कोई स्थान न होगा। उसमें स्त्रियों को पुरुषों के समान अधिकार मिलेंगे। सारी दुनिया से हमारा सम्बन्ध शान्ति और भाईचारे का होगा। यह है मेरे सपनों का भारत।



(मोहनदास करमचन्द गांधी)



एक कदम स्वच्छता की ओर

स्वच्छता शपथ

- महात्मा गांधी ने जिस भारत का सपना देखा था उसमें सिर्फ राजनैतिक आजादी ही नहीं थी, बल्कि एक स्वच्छ एवं विकसित देश की कल्पना भी थी।
- महात्मा गांधी ने गुलामी की जंजीरों को तोड़कर माँ भारती को आज़ाद कराया।
- अब हमारा कर्तव्य है कि गंदगी को दूर करके भारत माता की सेवा करें।
- मैं शपथ लेता हूँ कि मैं स्वयं स्वच्छता के प्रति सजग रहूँगा और उसके लिए समय दूँगा।
- हर वर्ष 100 घंटे यानी हर सप्ताह 2 घंटे श्रमदान करके स्वच्छता के इस संकल्प को चरितार्थ करूँगा।
- मैं न गंदगी करूँगा न किसी और को करने दूँगा।
- सबसे पहले मैं स्वयं से, मेरे परिवार से, मेरे मुहल्ले से, मेरे गांव से एवं मेरे कार्यस्थल से शुरुआत करूँगा।
- मैं यह मानता हूँ कि दुनिया के जो भी देश स्वच्छ दिखते हैं उसका कारण यह है कि वहाँ के नागरिक गंदगी नहीं करते और न ही होने देते हैं।
- इस विचार के साथ मैं गाँव-गाँव और गली-गली स्वच्छ भारत मिशन का प्रचार करूँगा।
- मैं आज जो शपथ ले रहा हूँ, वह अन्य 100 व्यक्तियों से भी करवाऊँगा।
- वे भी मेरी तरह स्वच्छता के लिए 100 घंटे दें, इसके लिए प्रयास करूँगा।
- मुझे मालूम है कि स्वच्छता की तरफ बढ़ाया गया मेरा एक कदम पूरे भारत देश को स्वच्छ बनाने में मदद करेगा।



राजघाट समाधि समिति
RAJGHAT SAMADHI COMMITTEE

महात्मा गांधी मार्ग, नई दिल्ली - 110002

MAHATMA GANDHI MARG, NEW DELHI - 110002

Phones : (O) 23273546, 23241716, Telefax No.: 23241716

e-mail : gandhisamadhi@gmail.com, info@gandhisamadhi.com

website : www.gandhisamadhi.com